॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः ॥

आवश्यक

सूत्रम्.

मूल्य ८ आना.

श्री शंकारिल सत्संगिओने खास

सूचना.

स्वसंप्रदायनी पुष्टीनार्थे **श्रीजीमहाराजे श्रीदीनानाथ भट्टने** प्रेरी एवी बुद्धीनुसारे तमामसत् शास्त्र तेमनीपासे करावबाथी प्रसन्न थइ वंश परंपरा माटे उत्तरोत्तर पुस्को प्रसिद्ध करवा आज्ञा थएली छे; छत्तां अक्षर निवासी, धर्म धुरंधर आचार्य श्रीलक्ष्मीप्रसादजी श्रीविहारी लालजी माहाराजे तथा तेमना कुलमुखत्यार वि. कोटारी श्रीगोवर्धनभाईए प्रथमावृती वखतेज तेमज द्वितीया-वृती वखते धर्म धुरंधर आ. माहाराज श्री श्रीपति प्रसादजीए पण आज्ञा आपेली छे. वळी आ वखते पण मेहरबान रीसीवरसाहेब मार्फत पण तेमने लखी जणाव्युं छे.

लखवाने घणोज आनंद उपजेछेके नामदार ब्रिटीश सरकारना हुकुमथी निमाएला मे. रीसीवर साहेब **गोपाळलालभाईनो** निःपक्षपातने आनंद कारक तेमनो वहीवट जोइ धन्यवाद आपवामां आवे छे. ॥ श्रीहरी प्रस्नोस्तु ॥ ली. प्रसिद्ध कर्ता शास्त्री क. रा. दी. भट्ट.

श्रीः

श्रीमहाप्रभु श्रीस्वामीनारायण नीश्रे

जयवंत वर्ते छे.

आवश्यक सूत्रम् ॥

(नित्यनियम विधी)

सुधारा वधारा साथे

आवृत्ती त्रीजी

महाशय श्रीअजरनिनाली शास्त्री

रामचन्द्र दिनानाथ भट्ट.

छपावीने प्रसिद्ध करनार.

शास्त्री लक्ष्मीनारायण रामचंद्र दी० भट्टने

जगदीश्वर प्रेस गिरगांव मुंबईमांथे छपाव्युं छे.

साह्यभूत-शेठ हरगोविंददास तु० चुनीलाल

तुलसीदास ([illegible] वेपारी)

संवत् १९७४ मुंबई मागशर शुक्लपक्ष.

मूल्यं फक्त आठ आना.

श्रीअक्षर नीवासी शास्त्री रामचंद्र दीनानाथ भट्टकृत तमाम पुस्तकोना मालीक ची. कुंजविहारीप्रसाद ल. रा. दी. भट्ट तथा ची. रणजीतराय रा. रा. दी. भट्टछे.

श्रीसत्संगना प्रमाण बनावेला तमाम पुस्तको अमदावाद श्रीस्वामीनारायणना मंदीरमां बुकसेलर श्रीगुरुप्रसाद नारायणजी पासे मळीशकशे.

आपुस्तक प्रसिद्ध कर्ता पासेथी तथ शेठ हरगोविंददास तुलसीदास (जरमन सिलवरनावेपारी) मारवाडीबजार मुंबई पासेथी व्ही. पी. थी पत्र लखी मंगावी लेवुं. बंधामणी चार्ज वधु आलवाथी पाक तथा रेशमी पुठानां पुस्तक मोकली आपवामां आवसे.

जाहेर खबर!

हमारे त्यांथी शास्त्रीजी रामचंद्रजीना भाषांतर कृत.

श्री वासुदेव महात्म (संपूर्ण)

श्री आवश्यक सूत्रम्

श्री लीला मंजरी

श्री सत्संगी जीवनना २ प्रकर्णनो साराष (आगळ छपाय छे) अन्य दर्शनीय ग्रंथोपण मळशे.

श्री सर्व मंगळ स्तोत्र हरी सहस्र नाम नू भाषांतर छपाई बहार पडशे.

एशिवाय हमारे त्यां अमोने गुरुगम्यथी प्राप्त थएली देशी स्वधर्म रक्षक शारीर प्रकृतीनें सानुकूल थाय तेवी औषधीयो मळीशकशे शिवाय हमारा मोटा

भाई मुळजीभाई रामनाथ वैद्यशास्त्रीनी
मांठा सद्गुरुना वचनथी प्राक्षथएली
देशी शुद्ध वनस्पतिनी दवाओ तथा तमाम
जातनी महामात्राओ तथा शरीरने पुष्टी
पाको वीगेरे मळशे वळी. वडोदरामा प्र-
सिद्ध हमारा भत्रीजा रामकृष्ण केशव-
लाल रामनाथ वैद्य जेओ घणा धर्म
चुस्त छे. तेओ स्वधर्म रक्षार्थे दरेक रोगो-
उपर लागुंपडे तेवी औषधीओ बनावे
छे काष्टादीकऔषधो तथा चुर्णोना अनु-
भवो घणा हरीजनोए करेलाछे तेथी
घणा हरीजनोनी चाहेना तेओना उपर
छे वास्ते जेमनी इच्छा होय तेमणे वडो-
दरा लेहेरीपुरदरवाजा पासे तथा हमारी
उपर लखी मंगावी लेवी.

अमदावादमां श्री स्वामीनारायणना मं-
दीर पासे आयुर्वेद्य औषधालयना मालीक
वैद्य शास्त्री नारायणशंकर, देवशंकर
शेवकराम नी शुद्ध बनावेली धार्मिक
काष्टादिक तथा वनस्पतिनी औषधीयो बना
वेली तथा आसवो तथा दरेक जातना मुरब्बा,
पौष्टीक पाको विगेरे मळे छे तेनो उपयोग
घणा हरीजनो करे छे ते जोए जयपुरमां
जइ परीक्षा आपी पूर्ण माहिती वैद्यक
शास्त्रनी मेळवी छे. जे सज्जनोने आवश्यक
ता होय तेमणे हमारी उपर तथा तेमनी
उपर लखीने औषधदर्पण नामनु पुस्तक
मंगाववाथी वाकेब थशो.

श्रीस्वामीनारायणाय नमः

उपोद्घात्

सत्संगमां घणा नित्य निमय छे, तोपण ते नित्य नियमोमा आ नित्य नियम (आवश्यक सूत्रमां) घणो फेरछे कारणके मोहोटा मोहोटा सद्गुरुओ श्रीगोपाळानंद स्वामी, तथा सद्गुरु श्रीगुणातीतानंद स्वामी, तथा सद्गुरु श्रीनित्यानंद स्वामी, आदीकोनो जेवो क्रम हतो. तेनेज मळतो आ क्रमछे. माटे दरके सत्संगीओए आ पुस्तक अवश्य खरीदी पूजामां राखवा योग्यछे. देश, परदेश, जवु पडे तो तेवखते फक्त कांइ वधू न रखाय ने आज एकलुं पुस्तक राखी परदेश जवुं पडेतो तेमां पोतानो हरहमेसनो नियम

सचवापछे. कारणके प्रगट पुरुषोत्तम नारा-
यण एवाजे श्रीसहजानंद स्वामीनी मूरती
तथा तेमना चरणारवींद राखवामां आव्यां
छे जेथी ध्यान, मानसीपूजा विगेरे करी
दर्शननो नियम साचवी व्यवाहारीक क्रिया
करवी होयछे ते सुखेथी थई सकेछे वळी
पूस्तकनु कद तमाम क्रमनो समावेश करतां
नानुं ने मनने आनंद पमाडे तेवुं ने वळी
पोताना पहेरवाना वस्त्रना गजवामां राखी
शकाय तेमछे. श्रीहरीने विषे प्रीती धरा-
वता एवा एकांतीक धर्मज्ञानने वैराग्यने
भगवाननी निष्काम भक्ति वाळाने आ
आवश्यक सूत्रम् अतिशय ऊपयोगीछे.
एटलुंज नहि पण त्यागी हरिजनोने तो
अवश्य खरीदवा जेवुंछे. आ पुस्तकनी

त्रीजी आवृतीछे. थई गयेली बीजी आवृती शुद्ध अशुद्ध थएली हती जेथी घणा वखतनो संकल्प त्रीजी आवृती सुधारा वधारा साथे करी प्रसीद्ध करवा मनोरथ हतो. पण केटलाक वखतथी देसकाळनुं घणु विषमपणुं होवाने लीधे प्रसीद्ध करवा हाल विचार नहतो. कारणके समय एवो घणो कठिणछे के कोइपण पुस्तक प्रसीद्ध करतां हाळनी कागळनी मोंघवारी जोतां तेमज छपामणी पण तेवीज रीतनी होवाने लीधे. हिंमत चाले एवी नहोती परंतु श्रीजी महाराजनी अनहद कृपा थवाथी आ पुस्तक समैयाना थोडाज दिन रहेतामां वातना प्रसंगमां हालमां अत्रेना ने मूळ रहेवासी गुजरातमां ताळूके विजापूर तावाना वसई गामना र-

हरि प्रगट पुरुषोत्तमोपासक सत्संगिशि-
रोमणी गृहस्थ शेठ. हरगोवींददास तुलसी-
दास तथा चुनीलाल तुलसीदास के जेओने
श्रीहरीने विषे शुद्ध उपासना तथा अरुढ
भक्ति भावछे. तेम जे सत्संगना हरेक सत्-
कार्यो करवामां विशेष ममता धरावेछे वळी
उत्कृष्टतापणु विशेष राखी स्वसंप्रदायनी
पुष्टी जेम वधु थाय तेममानेछे तेमज मोटा
मोटा सद्गुरुओने सेवेला एवा त्यागी
हरीजनोनुं तथा गृहस्थ हरीजनोनुं महात्म
विशेष समजेछे. वळी तेओने धर्म घणोज
प्रीयछे, जेथी आवां जरुरी पुस्तकोनी
आवृत्तीओ उत्तरोत्तर छपायने सत्संगमां
फेलाय तेमज आवां जरुरी पुस्तकोनुं
त्यागी हरीजनोने दान अपाय एवुं विशेष

माहात्म समजी आ आवृतीमां परीपूर्ण मददगार थई आगल पडतो भाग लीधोछे. जेथी तेमनो मोटो उपकार मानी श्रीहरी पासे प्रार्थना करुछुंके आथी पण वधु सत्संगना ग्रंथो छपाववामां ममताळु थाओ एटलुंज नहि पण धार्मीक एवां श्रीसत्संगनां दरेक कार्यो करवामां विजयी निवडो ने तेमनुं तथा तेमना कुटुंबनुं दीर्घायुष थइ कुटुंब परिवार साथे सुखी थाओ.

आवीरीते हरेक धर्म चुस्त धनाढ्य गृहस्थ सत्संगी स्वसंप्रदायनी पुष्टीना अर्थे बीजां जे सत्कार्यो करेछे तेना अंगी भूतमां सत्संगना जुना ग्रंथोना भाषांतरो तथा श्रीहरीनी लीलाओनी वार्ताओ छपावी प्रसीद्धीमां मुकवा उमंगी थाओ.

आ. आवश्यक सूत्रममां प्रातःकालथी उंटी रात्रीए सुतां सुधी जे कर्मो करवा योग्य छे, ते तमामनुं वर्णन करवामां आव्युं छे ने तेनी अनुक्रमणीका जोतांज आ पुस्तक खरीदवा उमग रहेशे. आ पुस्तकनी त्रीजी आवृती प्रसीद्ध कराववामां ममतानुं त्यागी हरीजनोनो तथा गृहस्थ हरीजनोनो विशेष मत होवाथी प्रसीद्ध करी सर्वे हरीजनोनी सेवामां मुकुंछु ने तेनी योग्य किंमत नफानो बीलकुल विचार नहि राखतां राखेली छे, कारणके सर्वे हरिजनो जाणेछेके वर्तमान कालमां कागलनी तथा छपामणीनी मोंघवारी छे. श्री प्रगटपरमात्मानी इच्छाए मुंबई जेवा सुप्रसीद्ध शहेरमा ने योग्य प्रसीद्ध

प्रेसमां छपाव्युं छे जेथी कोइ पण जातनी खामी रही होय तेम जणाती नथी छत्तां द्रष्टी गोचरे कोईने कांइ दोष अगर भुलचूक मालूम पडेतो वांचक वर्ग क्षमाकरशे एवी आशा राखुंछुं.

आ शिवाय केटलांक सत्संगना ग्रंथोना भाषांत्तरो स्वःसंप्रदायनी पुष्टीना अर्थे हजी छपाववां बाकी रहेला छे तथा मोहोटा मोहोटा सद्गुरुओना मुखमांथी नीकळेली श्रीहरीनी लीलानी वार्ताओ बेसूत्तम लखेली छे, वळी श्रीहरीना मुख कमलमांथी आत्माना परम मोक्षने अर्थे नीकलेली वार्ताओ छपाववानी बाकी छे कारणके हमारा वडीलो श्री· लक्ष्मीनाथ भट्ट तथा श्री दीनानाथ भट्ट जेओ श्रीहरी पासे नि-

रंतर रहेता हता ने श्रीहरीए प्रेरी एवी बुद्धिनुसारे तमाम श्री सत्संगी जीवन आदि ग्रंथो वैदीक मतानुसारे रचता हता, एवा महाप्रतापने लीधे मोटा मोटा सद्गुरुओ श्री गोपाला नंद स्वामी तथा श्री गुणातीतानंद स्वामी तथा श्री शुक स्वामी आदि सद्गुरुओ पासे हमारा पिता शास्त्री रामचंद्र दिनानाथ भट्टने घणो समागम रहेलो हतो, जेथी तेओए श्रीहरीनी लीलाओनी वार्ताओ घणी सांभळीने लखेली छे.

तेमज अमारा वडील बंधु मुरबी भाई वैद्य शास्त्री मुळजी भाइ रामनाथ लक्ष्मीनाथ भट्टे घणाज अथाग श्रमथीभरपूर ने मनने आनंद पमाडेने श्रीहरीने विषे एकांतिपणुं समजी श्रीहरीना गुणनुं वर्णन

कराय तेवी वार्त्ताओ मोहोटा मोहोटा सद्गुरुना मुखकमलमांथी नीकळेलीते तेमणे सेवन करी सांभळेली तेमज वडीलोथी पण सांभळेली एवी चमत्कारीक वार्ताओ पोते जे घणी लखी तैयार करी छे अने बीजी बाकीनी पण हजु लखे छे.

श्री हरीने विषे परम एकांतीक पणुं होवाने लीधे रात्री दिवस पोते धर्म ध्यान अने भजन स्मरणमां तेमनो कालक्षेप वधु निरगमन थाय छे तेमज उत्तर अवस्थाना प्रमाणमां शरीरनी पण शीतलता रहे छे एवा सवळ कारणोने लीधे हाल प्रसीद्धमां मुकी शकाई नथी पण श्रीजी माहाराजनी कृपाथी सर्वे श्रीहरी जनोना अत्याग्रह होवाने लीधे थोडा वखतमां छपाई प्रसीद्ध करशे.

अनुक्रमणिका.

विषय. पानुं.

(आरती.)

स्तुति–दोहा.

(वचनामृत.)

प्रथम प्रकरण १ लुं.

(चेष्टा)

विषय. पानुं

परिश्रमनो उपकार.

हालमां अमदावादमां कालनु घणुंज विषम पण छे, जेथी विरक्षेत्रमां रहेवुं थायछे. अगाऊ घणा वरसो आस्थळे रहेवुं तथा प्रसंगोपाते आर्य बंधुमां प्रितीनुं मम-त्वपणुं धरावता रा. रा. अंबालालभाई गणपतराम, त्था पटेल भाईलाल भाइना तरफनी व्यापारीक कार्यमां अत्रे आववुं थवाथी मुंबईमां केटलाक गृहस्थोना तर-फथी दैवीक तथा व्यापारसंबंधी कार्यमां हमोए भाग लीधो छे जेओना मुबारकनाम ते सद्गृहस्थों तरफथी प्रसीद्ध थता रिपोर्ट ऊपरथी जणाशे, शिवाय आसाथे जे श्री हरिए सेवेला एवां श्रीठाकोरजी श्री

मोरलीमनोहर देवोना संबंधमां प्रसिद्ध थयेली विज्ञापना उपरथी समजाशे वळी सद्गृहस्थमां आबरुदार गणाता एवा शेठ अमीन शीवाभाइ, वल्लभ भाइ (वीरसदना) जेओ लींबडी स्वस्थानना नामदार माजी दिवान बहादुर झवेरभाइ नाथाभाइना निकट कुटुंबी छे जेमणे श्री ठाकोरजीनुं स्थान बंधाववा तथा ते संबंधी कार्योमां पोते तथा पोताना लागता वळगताथी वधु भाग लेवा इच्छा जणावी छे, अने पोते पण ते धर्मादा फंडमां यथा शक्ति मदद पण करी छे. वळी आ पुस्तक छपाववामां ने छपाया पछी थी लागता वळगताओमां विशेष प्रसार करवा ममता धरावेली होवाथी तेमनो उपकार मानी श्री जगत्परमात्मा

पारे तेमनो सदा विजय थाओ एवी प्रार्थना करु छुं.

वळी आ त्रीजी आवृत्तीमां अमोने जेम आगळ मेसर्स मगनलाल एन्ड कुंपनीए छपाववा संबंधी काममा मदद करी हती ने हजी ते कायमजछे. तेवीज रीते आ प्रसंगे अमोनी रा. शिवशंकर छगनलाल जेओ प्रांतीज गामना वतनी छे तेओए हमारी साथे रही केटलोक भाग आकाममां लीधो छे. वीर क्षेत्रमां (वडोदरा) रहेनार पूर्व संस्कारयुक्त मुरब्बी पण राखनार रा. रा. भाइश्री रसीकलाले उत्साह जणाववाथी उपकार मानु छुं वळी आ साथे तेमनो मुकेलो दोहरो सरव हरी जनोने तेमज प्रेमी बंधुओनें ग्रहण करवा योग्यछे.

नाशिक निवासी दृढ श्रद्धालु रा. रा. नाहनालाल भवानीशंकरभाई तळाजीया ए उत्साह पूर्वक हरेक रित्या सत्कार्योमां प्रेम जाणाव्यो छे. जेथी तेमनी मन कामना श्रीप्रकटप्रभू साफल्य करो. श्रीहरी तेमनापर प्रसन्नथई तेमना सरवे मनोरथ सिद्धकरो. एवी अमारी प्रार्थनाछे.

पुस्तको छपाववाना कार्यमां अगाऊ अक्षर निवासी रा. रा. जीवरामभाई राजारामे पूर्ण भाग लीधोहतो, श्रीप्रगटपरमात्मा तेमना आत्माने शांतीकरो. अक्षरनिवासी हमारा पिताश्री शास्त्री रामचंद्र दिनानाथ भट्टने विषे गुरुभाव राखतां प्रगटपुरुषोत्तमोपासक परम एकांतीक रा. रा. बलदेवभाई घहेलाभाइ ए जे सद्मनोरथ सत्संगने विषे धारेलाछे

ते सफल थवा संभव हतो परंतु शारीरीक प्रकृती सीथील होवाने लीधे बन्यु नथी श्री-हरी तेमना सद्मनोरथ सत्संगमां उत्कृष्टता पमाडे तेवा कार्योमां साफल्य थाव.

॥ श्रीहरी प्रसन्नोस्तु ॥

राग दोहरो

श्री सहजानंद स्वामीनी ।
करसे भक्ति जेह ॥
असार संसार तरी ।
पार तरसे तेह ॥ १ ॥
नारायण ना गुणनुं ।
करजो गुणीजनगान ॥
प्रेम भक्तिमां लीन थई ।
धरो निरंतर ध्यान ॥ २ ॥
सत्य टेकने साचवी ।

तजजो मननो मेल ॥
भक्ति साची चीजछे ।
अन्य वृक्ष सौ खल ॥ ३ ॥
शुद्ध हृदयमां छापजो ।
नर नारायण छाप ॥
भक्ति माळा झडपवा ।
झट लंबावो हाथ ॥ ४ ॥
धर्म कामने आगळ धरी ।
करजो सारां काम ॥
आ लोके सुख भोगवी ।
अमर करसो नाम ॥ ५ ॥
आ आवश्यक सूत्रने ।
ग्रहण करी नरनार ॥
प्रेम वृत्तिथी सेवजो ।
जडसे मोक्षनुं द्वार ॥ ६ ॥
दास दवेनी विनती ।

हरखे धरजो ऊर ॥
श्री प्रगट प्रभुने भजवाथकी ।
सहजे उतरसो पूर ॥ ७ ॥
प्रांतिज गामनो वासीछुं !
सौ संतननो दास ॥
करजोडीने करगडुं ।
राखो मुजने पास ॥ ८ ॥

॥ वंशस्थवृत्तं ॥

हरसि सकल दुःखं भक्ति युक्तस्य नित्यं ।
रायसिच सततं वै क्षीरं सिंधौ च नित्यं ।
गोकुलपति सुत स्त्वं श्रीयुते वै वृजे च ।
वससि यदुपतिस्त्वं द्वारवत्यां च डंके ।
नरपति रघुवंशे रामचंद्रस्त्वमेव ।
दानवगणतिहंता भार्गवस्त्वंतु चैव ।

सहजयतिनामा धर्मसूर्य स्त्वमेव ।
तुलतिच सततं त्वां सत्यलोके विधिश्च ।
लससिच इहलोके विश्वरूप स्त्वमेव ।
शिवहरिविधीसेव्यो योग मार्गेण नित्यं ।
दानभजनमग्नो नास्तियोगो इहानिम ।
सहवस शिरसेश रामयात्वं श्रियाच ।
वसन तडितपीतं धार्यतेवै त्वयाच ।
सकलभुवन मे तत्पाल्यतेवै त्वयाच ।
इषतगृणित नाम्रो तार्यतेवै त्वयाच ।
वाक्पतिरपि नित्यं स्मीयते त्वद्गुणांश्च ।
लासि सकल जनांस्त्वं इच्छितं चैव मोक्षं।
चुतफल रसतुल्यं, नामयुक्त स्त्वमेव ।
निखिल जननिवासो, आत्मरूप स्त्वमेव ।
लासिच सकल दुःखं, त्वज्ञानस्यैवनित्यं ।
लक्षलक्षित युक्तो श्री सहाजोयतिस्त्वं ॥१॥

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

श्री स्वामिनारायणने नमीने
शरीर वाणि हृदये करीने ॥
सत्संगिए जे करवुं अवश्य
ते हुं लखुं छुं थइ पारवश्य लखुं ॥१॥

यद्यपि सत्संगमां नित्यनियम वगेरेनी धणी चोपडीओ प्रसिद्ध थइ छे तोपण तेथी अतिशे संतोष न पामता केटलाक सत्पुरुषोनी प्रेरणाथी हुं पण मारा अंगने अनुसरी, आ प्रकारे सत्संगि ओ, नित्य अनुक्रमे विधि करे तो ठीक, एम जाणी, आटलो तो नित्यनियम अवश्य करवोज जोइये, एम धारी आ लखुंछुं.

लि॰ शास्त्री रामचंद्र दीनानाथ भट्ट.

श्री.

श्रीस्वामी नारायणायनमः ॥

आवश्यक सूत्रम्.

(आवश्यक विधि.)

सर्वे सत्संगिओए पाछली चार घडी रात्रि रहे त्यारे स्वामिनारायण २ ए प्रकारे बोलतां २ जागी उठी बेठां थइ सावधानपणे निद्रा उडाडी रामकृष्णगोविंद धुन्य करी शुद्ध जागृत अवस्थामां आववुं. पछी पद्मासन वाली स्वभा उंचा राखी डाबा हाथेली उपर जमणी हाथेली राखी तेने खोळामां मुकी नासिकाग्र उपर

દષ્ટિ રાખી પ્રકટ ભગવાનની મૂર્ત્તિનું ધ્યાન કરવું. તેની વ્યવસ્થા આ પ્રકારની છે કે—પ્રથમ દેહ અને આત્માનું પ્રથક્ કરણ ચિંતવવું, તેમાં દેહ જડ છે અને આત્મા ચૈતન્ય છે. દેહ દુઃખરુપ છે અને આત્મા મહાસુખરુપછે દેહ મિથ્યા છે અને આત્મા સત્યછે. દેહ પરિણામીછે અને આત્મા અપરિણામીછે. દેહ મહા અપવિત્રછે અને આત્મા મહા પવિત્રછે ઇત્યાદિ દેહનાભાવ દેહમાં હોમવા અમે આત્મા જે ચૈતન્ય તેના ભાવ આત્માને વિષે હોમવા. તે આત્મા તે હુંછું પણ આ દેહ તે હુ નથી, હું તો શુદ્ધ ચૈતન્ય સત્તામાત્ર છું, એટલે ૦ તો અછેદ્ય અભેદ્ય અજર અમર જ્ઞાનરુપ સુખરૂપ સત્તામાત્ર છું. બ્રહ્મરુપ છું. અક્ષરરુપ છું. સર્વ સંક-

ल्प विकल्पथी भिन्न छुं. हुं तो तेनो द्रष्टा साक्षीरुप छुं एम विचार करतां २ संक-ल्प विकल्पनुं बलशांत पडे एटले प्रकट परमात्मा परिब्रह्मनुं ध्यान आरंभवुं. तेमां पण जेनुं जेवुं अंग होय ते अंगने ओल-खी ते अंगने अनुसरी ध्यान करवुं. को-इने तो कीर्त्तन बोलतांज भगवाननुं स्म-रण विशेष थाय. कोइने तो मोटा मोटा संतो प्रथम सेवला छे तेमनुं सहज स्मरण करवाथी भगवाननी मूर्त्तिना ध्यानमां लग्नी लागे छे. कोइने तो भगवान पोते श्री प्रकट परमात्मा जे जे स्थानमां वि-शेषपणे विचर्या छे ते ते स्थाननुं चिंतवन करवाथी भगवाननी मूर्त्तिमां स्नेहथी चोटाय छे. इत्यादि पोताना अभ्यासने

अनुसरी भगवाननी मूर्त्तिना ध्यानमां संलग्न थवुं तेमां वचे विघ्नरुप उदय थता संकल्पने रोकवा सारु माटा मोटा संतोए देखाडेली युक्तिओ जुदी जुदी छे जेमके भगवाननी मूर्त्तिनु ध्यान करते बीजा संकल्प नडे तो अति शीघ्रताथी मनने एक अवयवथी बीजा अवयवमां लाववु तेमां अनुक्रम जाळवो नही, एवी रीत नखथी ते शिखापर्यंत, अने शिखाथी ते नखपर्यंत तमाम मूर्त्तिना अंगो अंगमां मनने वारम-वार फरवी २ चड उतर करावी २ (भूतने दृष्टाने,) भगवाननी मूर्त्तिविना बीजो संकल्प करवा जेटलो पण अवकाश मनमां थवा देवो नहीं एवुं सावधानपणुं राखवुं, ए प्रकारे सद्गुरु श्री नित्यानंद

स्वामीनुं वचन सांभळेलुं छे. नपाम स-त्संगिना गुण मात्रनुं ग्रहण करी दासानुदासपणे वर्त्तनारने संकल्प विकल्पनु बल होतुंज नथी तो ध्यान करतां बीजा संकल्पश्याना नडे, ए प्रकारे सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामीनुं वचन सांभळेलुं छे. आत्मा अनात्मानो, सार असारनो विवेक समजो नथी माटे ए जीवने ध्यान करतां संकल्प विकल्पनुं बल क्यांथी म-टशे, ए प्रकारे सद्गुरुश्री माइ आत्मानंद स्वामीनुं वचन सांभलेलुं छे. पांचशेर धु-ळमां पाशेर खांड भेळवी तेना फाका भ-रनारने केटलुं गलपण जणाय? तेम रा-तदिन संसारनुं कूटणुं कूटनारने ध्याननो स्वाद क्यांथी आवे, माटे संसारना वेगथी,

પાછા વળો ૨ ઇત્યાદિ સદ્‌ગુરુશ્રી ગુણા-
તીતાનંદસ્વામીનું વચન સાંભળ્યું છે. આ-
ત્મનિષ્ઠાનો કક્કો તો શિખો; જેમકે—પ્રથ-
મ સંકલ્પ થાય છે પછી ઉઠવું બેસવું આ-
દિ ક્રિયાઓ થાયછે, તો તે સંકલ્પ, હાથ,
પગ, માથામાં, થતા નથી, એતો પોતાના
હૃદયમાં થાય છે માટે આત્મા તે હૃદય-
માંજ રહેલો છે, ને બધા શરીરમાં વ્યાપ્ય-
લો છે. તે આત્મા કેવો છે, તેનો વિચાર,
સત્સંગના મહિમાએ સહિત કરી, પ્રતિલોમ
વૃત્તિવડે કરવો. તે પોતાના આત્માને બ્ર-
હ્મરૂપમાંની તેમાં પ્રકટ પરબ્રહ્મ પરમાત્મા
શ્રી સહજાનંદ સ્વામી, તેનું ધ્યાન ધરવું
એ પ્રકારે સદ્‌ગુરુશ્રી શુકાનંદ સ્વામીનું વ-
ચન સાંભળ્યું છે. ધ્યાન કરતાં મૂર્ત્તિ ન

देखाय तोपण ध्यान करवानो अभ्यास छोडवो नही. सूर्य, चंद्र, अग्नि, ए त्रण तो दीठामां आवेला छे, ते त्रणना तेजनो समूह एकठो लोचो पोचो करी तेनी वचे तेजो मय एवी प्रकट भगवाननी मूर्त्ति छे, ते मारा हृदयमां विराजे छे एम धारी, तेजना समूहमां चरण कमल आदि अंगोनी कल्पना करी ध्यान करवुं, माटे जे ते प्रकारे प्रकट परमात्मानी मूर्त्तिमां पोतानुं चित्त विशेष पणे स्नेह सहित चोटाडवुं. तेने ध्यान कहीए. तेवुं ध्यान थोडुं करवाथी पण तेनी खुमारी सारो दिन रहे छे, जेम बशेर चारशेर दुधमां साकर उकाली तेमां केसर कस्तुरी नाखी पान करनारने ते दुधनी खुमारी सारोदिन रहे

तेम ध्याननो आनंद रहे छे माटे प्रथम ध्यान करवानुं कह्युं छे. पछी देहनी क्रिया, दंतधावन, स्नान करी शुद्ध वस्त्र पहेरी ओढीने. पटमुर्त्तिओनी पूजा करतां पहेलीज मानसी पूजा करवी. आ शिक्षापत्रीमां लखेलो अनुक्रम मुकवो नही कारण के—आ अनुक्रमने मुकता सत्संगिने देखी अखंडानंद ब्रह्मचारीए वात कही हती के—ज्यांथी उठ्यो त्यांथीज शिक्षापत्रीनुं वचन लोपतो उठ्यो तो, तारो सत्संग शिरीत्पपार पडशे ए प्रकारे पोताना शिष्य प्रत्ये ते बोल्या हता, ते जयानंद ब्रह्मचारी, चालीश वर्ष सुधी ब्रह्मचारीमां रही शेवट वृद्धावस्थामां नीकली गया, ते परसोतम ब्राह्मण एवे नामे वडोदरामां

में प्रत्यक्ष जोया माटे अनुक्रमें क्रिया क-
रवामां पण घणुं दैवतछे वली भुजवाला
नारणजीभाइ, जेश्रीजीमाहाराज पासेहजु-
री सेवक हता तेमणे वात करी हती के-
समे समे पांच टांणां जे मानसी पूजाकरे
छे तेने माथे तेना पूर्व कर्म सयोगे आखुं
ब्रह्मांड तुटी पडे एवुं दुःख प्राप्त थवानुं;
होय तो पण तनुं निवारण थाय. ते वचन
श्रीजी महाराजथी सांभली तेओ बोल्या
के—अहो, सत्संग घणां वर्ष कर्यो पण
अजु, महिम सहित करवो अधुरो छे,
पछी ते दिवसथी नित्ये पांच टांणां समे
समे मानसी पूजा करता हता. तेओने व-
डोदरामां सरकार संबंधी मोटी आपत्
आवी पडेली हती तेनुं निवारण सहजमां

घणुं ते पण मारी नजरे प्रत्यक्ष दीठामां आव्युं. माटे समे समे पांच टांणां सत्संगि मात्रे मानसी पूजा करवी.

अथ मनसिशनैः स्थिरत्वमाप्ते
भगवति मानुषमूर्त्तिवासुदेवे ॥
निजहृदि पृथगंक्रमेकमंगं
चरणतलादि विचिंत्यमस्य पुंसा ॥१९॥

अर्थः–एम भगवाननुं चिंतन करतां, करतां, हलवे हलवे, ज्यारे मन स्थिर था-य त्यारे मनुष्य मूर्ती एवा ए वासुदेव भ-गवानना चरण तलथी आरंभिने, जुदां जुदां एक एक अंगो, पोताना हृदयमां चिंतवन करवां. ॥ १९ ॥

निजहृदि दृशिगोचरे तदीये

ह्यवयवएककमेककं पृथक्कृत्य ।
चपलमपि मनः स्थिरं विधेयं
व्रजति लयं खलु तेन तन्मलौघः ॥१८॥

अर्थः ॥ पोताना हृदयमां, ते भगवान संबंधी एक एक जुदां जुदां अंग, प्रत्यक्ष थयेसते, चपल एवुं पण पोतानुं मन, ते ते अंगमां स्थिर करवुं. तेथी तेमन संबंधि पापना समूह निश्चे नाश पांमे छे. ॥ १८ ॥

ध्वजकमलयवांकुशोर्ध्वरेखा प्रमुख
सुलक्षण लक्षिते च रम्ये ।
अतिशयमृदुले चयावकामे चरणतले
मनसाऽस्य चिंतनीये ॥ १७ ॥

अर्थः ॥ ध्वज, कमल, जव, अंकुश, उर्ध्वरेखा, आदिक सारां लक्षण वडे जणातां, ने सुंदर, अतिशे कोमल, लाखना अलता जेवां लालचोळ जणातां एवां ए भगवानना बे चरणनां तळीयां चिंतवन करवां. ॥ १७ ॥

अरुणनखशशांक राजिकांत्या
हृतनिजचिंतकहृत्तमोंघ्रियुग्मम् ।
कमललघुसमकोमलांगुलीभिर्हतनव
पल्लवकांति चास्य चिंत्यम् ॥ १८ ॥

अर्थः ॥ लाल एवा नखरुप जे चंद्र, तेनी श्रेणिनी कांतिवडे, नाश कर्युं छे पोताने चिंतन करनार पुरुषनुं हृदय अंधकार जेणे एवुं.. अने अनुक्रमे लघु अने

समान एवी कोमल आंगळीयो वडे, ह-
रण करी छे. नवा पल्लवनी कान्ति जेणे
एवुं, ए भगवाननुं चरण युगल, मनमां चिं-
तवन करवुं ॥ १८ ॥

निजजनमनसः प्रहर्षणार्थं
परिधृतनूपुरशिंजितातिरम्यम् ।
स्वगतनिजजनाक्षिवृत्तिचोरं
चरणयुगं हृदि चिंतनीयमस्य ॥ १९ ॥

अर्थः ॥ पोताना भक्तजनना मनने
हर्ष थवाने अर्थे, धारण करेलां एवां जे
चरणनां नूपुर, तेना शब्द वडे अतिशे
रमणीक जणातुं एवुं, ते पोताने प्राप्त थ-
ती एवी जे पोताना भक्तजनना नेत्रनी वृ-
त्तियो, तेने चोरि राखनार एवुं, ए भग-

वाननुं चरण युगल जे ते, हृदयमां चिंतवन करवुं. ॥ १९ ॥

किसलयमृदुले सुवृत्तजंघे
क्रमपृथुलेऽथ सुवर्त्तुलौ च जानू ।
करिकरसदृशंसमं चर्पानं निजहृदि
सक्थियुगं च चिंतयमस्य ॥ २० ॥

अर्थः ॥—नवा अंकुराना जेवी कोमल, अनुक्रमे पहोळी, सुंदरगोलजंघानुं तथा ए महा प्रभुना सुंदर गोल एवा ढीचणनुं तथा हाथीनी सूंढ जेवा, समान, पुष्ट एवा बे साथलनुं युगल पोताना हृदयमां चिंतवन करवुं. ॥ २० ॥

मृदुघनसितसूक्ष्मदीर्घवासः
परिदधदुत्तमहैमकांचिनद्धम् ।

पृथुलकटियुगं च चिंतनीयं
निजहृदये चिरमस्यभक्तभर्तुः ॥ २१ ॥

अर्थः—कोमल घाट्टुं धोळुं झीणुं लां-
बुं वस्त्रने पहेरता, ने उत्तम एवी सोनानी
कटिमेखला तेनी साथे बांधेलुं एवुं जे
विशाल कटियुगल, भक्तजनना स्वामी ए-
वा तेमहा प्रभुनुं छे, तेने पोताना हृदयने
विषे चिरकालपर्यंत चिंतवन करवुं. ॥२१॥

उदरमपि लसद्वलित्रयांतर्गतशुभ
सभ्रमनिम्ननाभिरूपम् ।
हृदयमुरुसुगंधिपुष्पहारं समवितनं
हृदि चिंत्यमस्यतुगम् ॥ २२ ॥

अर्थः ॥—शोभती त्रिवलीने अंतर्गत र-

हेली, शुभ भ्रमसहित गंभीर नाभिरूप कूप, जेमां छे एवुं उदर पण चिंतवन करवुं, घणा सुगंधीमान पुष्पहार जेमां धारण करेला छे एवुं समान. विशाल उपहतुं एवुं. ए महा प्रभुनुं हृदय, पोताना अंतरमां चिंतवन करवुं. ॥ २२ ॥

कनककटकशृंखलोर्मिका
भिर्लसदरुणाब्जनिभं करद्वयंच ।
दृढतरमतिरम्यबाहुयुग्मं
निजहृदयेस्यविचिंतयमंगदाढयम् ॥२३॥

अर्थ—सोनानां कडां तथा सांकलां तथा आंगलीओमां विंटीओ ते सर्व करीने शोभतुं एवुं लाल कमल सरखुं हस्त युगल, तथा अतिशे दृढ ने अतिशे सुं-

दर अने बाजुं, बंध सहित एवुं ए महा-
प्रभुना बाहु युगळनुं मनमां चिंतवन क-
रवुं. ॥ २३ ॥

विविधमणिविशुद्ध ेग ूत्र ।
ग्रथितसुमोक्तिकशा रिकंठः ॥
विगतशशकलंक अ ्यचन्द्रः ।
स्थिरमनसास्यनिं च चिंतनीयः॥२४॥

अर्थः—नाना प्र ना मणिरत्न स-
हित, विशुद्ध एवां े सूत्रवडे गुंथेलां
सारां मोति, तेमना हारवडे मनोहारि ए-
वो कंठ, चिंतवन करवो. तथा शशकाना
कलंके रहित एवो ए महाप्रभुनो मुखचंद्र,
स्थिर मनवडे नि काळ पर्यंत चिंतवन
करवो ॥ २४ ॥

स्मितहसन विसर्पिदंतकांति ।
प्रथनसमुज्ज्वलगंडयुग्ममस्य ॥
नवनलिनदलायतं विचिंत्यं ।
निजहृदि चंचललोचनद्वयंच ॥ २५ ॥

अर्थः—ए महाप्रभुनुं मंद हास्यवडे प्रसरती एवी दांतनी कांति तथा पृथुल नमणी नासिका तथा उजवला एवा बे कपोल तथा नवां कमलपत्र जेवां दीर्घ एवां, चंचल नेत्र युगल, पोतना हृदयमां चिंतवन करवां. ॥ २५ ॥

श्रवणयुगलमस्य कुंडलश्रीबहुविध ।
पुष्पमयावतंसरम्यम् ॥
वरदलघुविशालभालराजत्सतिलक ।
कुंकुमचंद्रकश्च चिंत्यः ॥ २६ ॥

अर्थः—ए महाप्रभुनुं कुंडलनी शोभा-वडे तथा नानाप्रकारना पुष्पना अवतंस शेखरवडे सुंदर एवुं श्रवण युगल चितवन करवुं. नरनुं अलघु, विशाल, एवुं भाल-स्थलने विषे शोभतो तिलक सहित कंकु-नो चांलो चितवन करवो ॥ २६ ॥

असित तिलक लक्ष्म दक्षगंडे ।
तिलकुसुमोत्तमनासिकांतिकेऽस्ति ॥
तिलमशीमितबिन्दुरम्यवामे श्रवणपुटे ।
भवतीति चिंतनीयः ॥ २७ ॥

अर्थः—जमणा गंड स्थलने विषे श्याम तिलनुं चिन्ह चितवन करवुं तथा तलना पुष्प जेवी उत्तम नासिकाने समीपे श्याम तलनुं चिन्ह चितवन करवुं. तथा

ए महा प्रभुना डाबा श्रवणपुटने विषे, शांभतुं श्याम बिंदुनुं चिन्ह चिंतवन करवुं. २७

विविधकुसुमशेखरालिराजत् ।
पटमुकुटं च शिरोस्य चिंतयित्वा ॥
वदनकमलमेवचिंतकेन स्मितमधुरं ।
चिरकालमस्य चिंत्यम् ॥ २८ ॥

अर्थः—नाना प्रकारना पुष्पना शेखरनी पंक्तिवडे शोभतो छे पट मुकुट जेने विषे एवुं ए महाप्रभुनुं मस्तक चिंतवन करिने मंद हास्यवडे मधुर एवुं मुखकमलज घणा काल पर्यंत चिंतवन करवुं ॥ २८ ॥

(पद राग केदारो प्रभाती.)

ध्यानधर ध्यानधर धर्मना पुत्रनुं,

जे थकी सर्वे संताप नासे;
कोटी रवीचंद्रनी कांती झांखी करे,
एवा तारा उर. विषे नाथ भासे. ॥

ध्यान १ ॥–शिरपर पुष्पनां मुगट सोयामणो. श्रवणपर पुष्पना गुच्छशोभे पुष्पनाहारनी पंक्ती शोभेगळे, निरखता भगतनांमन लोभे ॥ धान्य २॥ पचरंगी पुष्पनां कंकणकरविषे, वांएबाजुबंध पुष्प केरां; चर्णमां स्यामने नेपुर पुष्पना, लळीत त्रिभंगी शोभे घंरणां ॥ ध्यान ३ ॥ अंगोअंग पुष्पनां आभ्रण पेरीने, दास पर मेरनी द्रष्टी करता; कहे छे मुक्तानंद भजभड भावथुं, सुखतणासिंधु सर्वकष्ट हर्ता ॥ ध्यान ४ पद १॥ मितकर प्रीत-

कर प्रगट परीब्रह्मथुं. परहर अवर पंपाळ प्राणी; मोक्षथी भवतणो पार आवे नहीं; वेदवेदांत कहे सत्यवाणी ॥ मित १ ॥ कल्पतरु सर्वना संकल्प सतकरे, पासे जइ मितथुं सेवे ज्यारे: तेम जे प्रगट पुर्षोत्तम प्रीछशे, थाशे हरिजन ततकाल त्यारे ॥ मित २ ॥ प्रगटने भजी भजी पारपाम्या घणा. गिदगृनीका कपींद्रंदकोटी; व्रज-तणीनार व्यभिचार भावेतरी प्रगट उ-पासना सौथी मोटी ॥ मित ३ ॥ श्रीनारा-यण स्वामीने परहरी, जारभजनार सर्वे ख्वार थाशे; कहे छे मुक्तानंद प्रगट भज प्राणिया, अघतणा ओघतत्काळ जाशे ॥ मित ४ ॥ पद ७॥ रात रहे पाछळी च्यार घडीकातैये, संतने शयनतजी भजन कर-

वुं; स्वामीनारायणनाम उचारवुं, प्रकट परब्रह्मनुं ध्यान धरवुं ॥ रात १ ॥ ते समे आळपंपाळ ववावुं नही, चितहरी चरणमां जोडनेरेवुं, अरथने जगत जंजाळने परहरी कृष्णगोविंद गोपाळ कहेवुं ॥ रात २॥ भजन तजी ए समे अन्य उद्यम करे, नारकी थाय ते नरने नारि; ते माटे अमुलक अवसरपामीने, हरिजन सर्वे लेजो विचारी ॥ रात ३॥ दुर्लभ साजते सुगम श्रीहरि कर्यो, खांपला दिवसनी भागी स्वामी; वंदे मुक्तानंद भज दृढ भावशुं, श्रीनारायण सत्य स्वामी ॥ रात ४॥ पद ३॥ भजन करो भावशुं प्रगट परब्रह्मनुं, राखहरि रूपमां मनवारुं प्रगटना संगथीपरम सुख पामिए, उरथकीनाश

पामे अंधारु ॥ भजन ॥१ ॥ नखशिखना-
थनी मुरति सोहामणी, चरणनांचिन सं-
ताप टाळे; प्रेमशुं चित्तवे चरण श्रीहरी-
तणां, ग्रंथि गाळ सर्वे कर्मवाळे ॥भजन २॥
नखतणी पंक्तिनी ज्योत नितनित नवी,
उदरमांत्रीवली अधिक शोभे; उर विषे
श्रीवच्छचिन्हने निरखतां, संतनां चित्त
ततकाळ लोभे ॥ भजन ॥ ३ ॥ नेणने वेण
चित चोर सोहामणां, परम उदार अति
चतुर स्वामी कहेछे मुक्तानंदभज द्रढभावशुं
प्रगट प्रमाण ए अंतरजामी ॥भजन ॥४॥
पद ॥ ४ ॥ मावजी मुजपर खूब अटळक
ढळशा, माहेरु मंदीर धाम कीधुं; सुखत-
णा सींधु मेज मळया शामळो, तमपथकी
साहेरुकाज सीध्यु॥मावजी ॥ १ ॥ दीनहु-

रवळ्वणी शीठ जाणी तमे, मुजपर महेर अतिसंज कीधी. दोपलीवेव्याना दामछो नाथजी, शामळा मारी संभाळ लीधी ॥ मावजी ॥ २ ॥ जे संग नेह कर्यो तेने नव वीसर्यो, भक्तवच्छळ तमे अधिक रसिया बरद पोतातणुं सत्य करवा तमे, माहरे मंदीर नाथ वसिया ॥मावजी ॥ ३॥ आज अम्रततपणा मेउला वरसिया, भवतणीभा वट आज भागी. आज मुक्तानंद अधिक सुख उपन्यु, तमसंगशामद्रढ लगनीलागी मावजी ॥ ४ ॥ माहरे मंदीर अखंड रहो मावजी, तम विना दुखतणो अंतनावे; आ वतुं जोबन अनंग दुख दे घणुं, तनतणा ताप ते कोण समावे ॥ माहर ॥१॥ आश सर्वे परहरी, मित तमशु करी, वरी हुं न-

हवती नाथ तमने. मदनरीपु मारवा तापने टाळवा, अनुर अम्रतरस पाम्यो अमने ॥ माहरे ॥२ ॥ तमसंग आश उदास संसारथी नटवर निश्च्य केप रहु न्यारी-नयणनी आगळे अखंड रहोनाथजी, विविधविनोद करता विहारी ॥ माहरे ३ ॥ रमीआजी तमसंग रंग लाग्यो खरो, गमे नही जगतनो गंध मुजने; आज मुक्तानंद आड सर्व टळी, अपी हुं तनमन नाथ तुजने॥ माहरे ॥४॥ पद ॥३॥ माहरु भाग्य अतिमेज अदकु थयुं, नाथजी तमसंग नेहजोडी: तनतणा ताप संताप सरवे टळ्या,तनधन जगत शुं प्रीत तोडी ॥ माहरु ॥ १ ॥ अमत सुखकर हरी नाथतमने वरी लोकनी लाज नथरी मनमां; सूरानीपरे

तम सनमुख चालतां, अधीक आनंद नव साथ तनमां ॥ माहेरु ॥२॥ कोटी ब्रह्मांडना नाथ करुणा करी, श्रीहरी मांहेर मोल आव्या, सरणांगततणां लाडपाड्यां सदा, भक्तवछ्ळ तमे नाथकाव्या ॥ माहेरु ॥३॥ देहडीजायपणेतनव छूटज्यो, एवं आपज्यो नाथ मुजने, मुक्तानंद कहे नाथजी श्रीहरी, निमख न्यारा नवमेलु तम ने ॥४॥ पद ॥७॥ पुरषोतम तमे प्रगटमुजने मळ्या, आज आनंदना ओघमां रे; असतनी आशसरवे उधीपरहरी, साम ळायइद्रढ शरण तारे; पुरशोतम ॥ १॥ विषयवाउवडे तरण जेम उडता, मावजी मेरुने तोल कार्धी, कोटी ब्रह्मांडनानाथ करसाइने, अचळपदवी मुने आज दीधी ॥

पुरशोतम २ ॥ हासविनोद बहु हेव देखा-डता, महाप्रभु आवीया मोलमारे नटवर अलोकीक रुप नीहाळतां; रसियाजी राचीहुं रंगत रे ॥ पुरशोतम ३ ॥ सहु दुख कापीयुं अखंड सुख आपीयुं, अथीरथीर थापीयुं छेलर सिया; केछे मुक्तानंद सरवे कासळटळी, मारे मंदीर नाथ वसिया ॥ पुरशोतम ॥ ४ ॥ पद ॥ ८ ॥

पद राग वीभास प्रभाती.

प्रात भयो प्रानप्यारे, जागो गीरधारी प्रात० सखा सब आये दुवार, लेकर पुउपहार, कृष्ण भगत करी, टेरनहे मंडळी तुहारी ॥ प्रात ॥१ ॥ संगले पुजाकोसाज, गुवालनी आइ महाराज; सबहोके हाथ

सोहे, कंचनकी थारी ॥ प्रात ॥२॥ संगके सखी समाज, आइ दरशन काज, दुवारके खडीहे ब्रखुभानकी दुलारी ॥ प्रात ॥ ३ ॥ दरशको दान दीजे, नयनां सुफळकीजे; मुक्तानंद कहे, वारवार जीते बळहारी ॥ प्रात ॥ ४ ॥ पद १.

पद राग केदारो प्रभाती.

किजीये ध्यानश्री धर्मना कुंवरनुं, सर्वपेहेला उठिप्रातःकाळे निरखीए रूपनखशिख महाराजनुं, वासना अशुभ तत्काळ टाळे ॥ कि ॥ १ ॥ संत हरिभक्तसौ उंघ आळस तजी, चित्तथिए चरण अति प्रितआणी; निरखीए नखमणीनीमा शोभातणी, दुर्लभ देवने एम जाणी ॥कि॥२॥

जमणाते चरणना अंगुठा उपरं, नखमांही चिन्हते जोइ रेहेवुं; चिन्हपर रक्त रेखा अति शोभती, मन तेमां लई मोइ देवुं ॥ कि३॥ अंगुठा आंगळी उपर केशछे, सूक्षम चिन्हछे चाखडीनां: अंगुठा पासना आंगळीए तिलछे, प्रेमानंदनी जोएल आंखडीनां ॥ कि ॥४॥ पद ॥ १॥ मंगळ मुळ महाराजना चरण छे, चितवतां चित्तमां शांति थाए, कामने क्रोधमद लोभ व्यापे नहि, उरथकी सर्व अज्ञान जाए ॥ मंग ॥१॥ जुगल पदतळ विषे पोडष चिन्हछे, नाम तेनां हवे कहुं विचारी, स्वस्ति जव जांबुध्वज, अंकुश अंबुज, अष्टकुणवज्रउर्धरेखा प्यारी ॥मंग २ ॥ नवचिन्ह धारवां जमणा ते चरणमां वामपदमां त्रिजांसात

शोभे: मिन त्रिकुणने व्योमगोपद कळश, अर्ध चंद्रधनुष चित्तलोभे ॥ नंग ३॥जमणा ते चरणनी आंगळि छेलीए, तिलएक अनुपम आनंदकारी; पानियुं सुंदर घुंटिपिंडपर प्रेमानंददतनमनजायवारी ॥ ४ ॥ पद २ ॥ निरखतां नाथनीजाणुं छबीजीवमां सुख थाए दुखसौदुरवामे, जमणासाथळ विषेचिन्हएक अनुपम नीरखता भक्तमनमोदपामे ॥ नि १॥ केळनाथेभजेवासाथळसुंदर, गरुडनी पिठपावनकरी. कटितटपीट पट कस्योकरुणानिधि, स्यामशोभा कटिलागे प्यारी ॥नि२॥ नलिनसम नाभिपर त्रिवल्लीछबी उदरमां, उन्नत उरमांही केश शोहे, स्तन स्यामपर छापनां, चिन्हछे; तिलएक उर विषे चित्तमोहे ॥ नि ३॥ उर

विषे कौस्तुभश्रीवत्सचिन्हछे, विनगुणहार नी शोभा सारी; दक्षिण बाहुते निकट ति लचारछे, प्रेमानंद जोइ जोइ जायवारी ॥ नि ४ ॥ पद २ ॥ अशरण शरणभुजदंड म हाराजना, चिन्ह ते माय ते कहुं वखाणी भुजामां छापनां चिन्ह छसुंदर, कुणीधुंस्या मखसुखधाम वाणी ॥ अ १ ॥ पोंचाथी उपर छापनां चिन्हछे, बांडाछे कठण बळवान भारि; करभपरकेश छे थोडी रातीपुं, शा- मरेखातेमां न्यारि न्यारि ॥ अ २ ॥ रातीछे आंगळीपुं राताछे नखमणि, उपडतातिखा तेजोपाजेवा. एवा जे करवरधरतजनशिर पर, आतुरअभय वरदान देवा ॥ अ ३ ॥ जानुपरजंत भुज परम गज सुंढथी, भक्त- नेमळवा उभा थाए. एवा घनस्यामनी

भुजाछबी उपरे प्रेमानंदतनमनवारि जाए
॥ म ४ ॥ पद ४॥ चितवीए चिन्हमहारा-
जना अंगमां, भक्तजन भावथुं वारमवार.
वामभागे वळीकंठने भुजवचे, चोंदतिलछु-
ऋमसरसमारे ॥ चि १ ॥ डाबे पडखे न-
ळी नवतिल नौतम, त्रण तिल कक्षमां क-
हुं छुं जोइ. एकतिलअनुपमकंबु कंठने वच.
निरखतां भक्तमन रहे मोही ॥ चि २ ॥ चि-
बुकने अधरपरकेश रेखाछबि, अधर अ-
वाळ जोइचित लोभे; कुंदनी कळीसम
दिपे दसनावळी. कनकनी रेख मांही स-
रस शोभे ॥ चि ३ ॥ डाढमां चिन्हछे स्याम
सोहामणुं, मंद मुखहासजोईलाजेकाम; घेर
सादे करी बोलता वचन हरि. प्रेमानंदनो
स्वामी घनस्याम ॥ चि ४॥ पद ५॥ जा-

रीजाउ वारणे बदनसशि उपरे, निरखतां नेण नथीत्रप्त थातां: अमृत वृष्ठि करे ताप तनना हरे, हरेहरे कहे हरी छिकखातां ॥ वा १ ॥ शोभा ते शिकहुं नाशिका शुकतणी, गोळ कपोळ बहु लागेरुडा: नासिका उपरलिखीना चिन्हछे, चितवतां घाट नव थाय कुडा ॥ वा २ ॥ जमणा कपोळमां मोटो एकतिलछे, तिल एक मोटो छे डावे काने: जेजन निरखीने धारिले चितमां ते नपडे मायावाळ पाने ॥ वा ३ ॥ कांनविंध्यातेनांचिन्हछे सुंदर, चंचळद्रगमांहिरेखा राती; प्रेमानंदमीन अलिखंजन वारुले उपमा देवा नथी बुद्धिथाती ॥ वा ४ ॥ पद ६ ॥ भक्तजन रंजनभ्रकुटी घनस्यामनी, कामनी जोइ तुरत थाय

घेली; भ्रकुटीने हेठेने नेत्रनी उपरे रेखा उठे अतिरस भरेली ॥ भ १ ॥ भाल विशाळमां पेच रेखा उठे, उभीछे बेनेत्रण चंद्राकारे: जमणी कोरे एकचिन्हछे भाळमां भक्तजन निरखे वारंवारे ॥ भ २ ॥ सुंदर मुस्तक श्रीमहाराजनुं, शिखा सुंदर जमां जोईज रहीए त्रण्य तिलछे वळी शिखाने पासले, जमणे भागे तेने धारी लइए ॥ भ ३ ॥ मोटो एक तिल छे वाम वांसामांहि, मोटो एक केश छे तेने पासे; जमणा वांसामांई आघो एक तिल छे, प्रेमानंदनिरखतां दूख नासे ॥ भ ४ ॥ पद ७ ॥ नखशिख निरखीने चिन्ह वर्णन कर्यां, संतहरिभक्तनेनित्य गावा: भक्तना उरविषे श्रीमहाराजनी, सुंदर मुरति साक्षात था-

वा ॥ नख १॥ पुष्पनां भुषण वसन महा-
राजनां, एक पदमां हवे कहुं वखाणी; उ-
ज्ज्वल पाघ शिर श्वेतपटको खभे, श्वेत धो
तो पेरी प्रिय आणी ॥ न २ ॥ पुष्पना
हारउर कंकण पुष्पनां, पुष्पनां बाजु ते
बांध्या बांहे; पुष्पना गुच्छ ते खोस्या बे
कानमां, तोरालटके सुंदर पाघमांए ॥ न-
ख ३ ॥ ए पद जे कोइ शिखे ने सांभळे,
ए छबीनुं नित्य ध्यान धरशे; प्रेमानंद क-
हे तेना उरमां आवीने, स्वामी सहजानं-
द वास करशे ॥ नख ४ ॥ पद ८ ॥

पद राग भैरव प्रभाती.

प्रात थयुं मनमोहन प्यारा, पीतांबरको
ळुं पोढीने प्रात० वारमवार करछुं वीन

ती, जगजीवन करजोडीने ॥ प्रात १ ॥ घरघरथी गोवाळा आव्या; दरसन कारण दोडीने: आंगणी ए उभीव्रजप कन्या, मे वलोवां छोडीने ॥ प्रात २॥ बहुरुपी दरवाजे बेठा, शंकरनेजा स्वांईीने मुखडुं जोवा आतुर मनमां, जोरे राख्या ओडीने ॥ प्रात ३॥ भैरव राग गुणीजन गावे, तान मनोहर तोडीने; ब्रह्मानंदना नाथ वीहारी, उठा आळस मोडीने ॥ प्रात ४ ॥ पद १ ॥ रसीयोजी राय आंगळ बेठा, कोमळ दातण करवाने; मखमलनी गादी बहुमुली, पाटउपर पाथरवाने ॥ रसी १ ॥ आछु जळजमुनानुं आण्युं, कंचनझारी भरवाने; सोनाके रु प्यालुं लाव्या, सुंदर आगे धरवाने ॥ रसी२॥ दास मळ्या

सौ दरसन कारण; जगने पार उतरवाने; दातण करता हरीने दीठा ते नावे भव फरवाने ॥ रसी ३॥ मुखमंजन कीधुं मन मोहन हरीजननुं मनहर वाने; ब्रह्मानंदना नाथ पधार्या, स्नानवीधी अनुसरवाने ॥ रसी ४॥ पद २॥ बाजोठे कनक तणेआवी बेठा, नीरगरम हरीनावाने बाजो श्वेतवस्त्र पेरयुं एक सुंदुर, भुधरजी भीजावाने॥बाजो १॥ अत्तर तेलफुलेल अनुपम, मरदन करवा प्राणाने, अंगचोळ्युं जळ ढोल्युं उपर, रसीयाने रीझावाने ॥ बाजो २॥ स्नानकरी उठ्या सामळीयो, प्रेमीजनललचावाने, ललीत नवीन त्यारकरी लाव्या, पीतांबर पेरावाने ॥ बाजो ३॥ रतन जडीत शुभ पाट्य मनोहर, गादी नवल वीछावाने, ब्र-

आनंदना नाथने आव्या, भोजनकाज्य बोलावाने ॥ वाजो ४॥ पद ३॥ जमो जमोने मारा जीवन जुगते भोजनीयां रस भरीआंरे, पाक शाक तमसारु प्रीतम, कोडेकोडे करीयांरे ॥ जमो १ ॥ तळीयांगळीयांताजांताजां, कनक थाळमां धरीयांरे, आरोगो मारा नाथ अलोकीक घ्रत झाझां घेबरीयांरे ॥ जमो २॥ कडीवडी कारेलां काजुं, रायतणां दैथरीयांरे; जोएतो उपरथी लेज्यो, मीठुं जीरु मरीआंरे ॥ जमो ३॥ ब्रह्मानंदना नाथ शीरावा, दुधभात साकरीयांरे, चलु कर्युं हरी त्रपतथैने, नीरखी लोचन ठरीआंरे ॥ जमो ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥

पद राग वेलावर प्रभाती.

लालमनोहर लीजीए, मुखवास मोरारी; शाम सोहागी शामळा, जाऊं मुखपर वारी ॥ लाल १॥ जोएतो लावुं जायफळ, तजसुंदर ताजी; आरोगो मारा नाथजी, रसियाँथ राजी ॥ लाल२॥ लवींग सोपारीने एलची, काथो चुनो मेळावुं; नागरवेलीना पाननी. काजुं बीडी बनावुं ॥लाल ३ ॥ हरीजन दरशन कारणे, उभा सौ पासे; मावा मुख तंबोळनी. ब्रह्मानंदने आसे ॥ लाल ४ ॥ पद १ ॥ रत्नसींघासन उपरे, रसियोजी बिराजे; अदभुत शोभा जोइने, कोटी कंद्रप लाजे ॥रत्न १॥ जामो पेर्यो जरकसी, शेहरो सीरसारो, पीळी

ओढी पामरी बेठा नंददुलारो ॥ रत्न २ ॥ कमर कटारो शोभतो, पोंची बेउहाथे; उपरणी ओपी रही, मोलीडो माथे ॥ रत्न ३ ॥ फुलमाळा गळफुटरी, धारी गीरधारी; शोभा जोइ शणगारनी, ब्रह्मानंद बलीहारी ॥ रत्न ४॥ पद २॥ अखंड पियाजीनी आरती, असि हेते उतारु; महामनोहर मुरती, अंतरमां धारु ॥ अखं१॥ अग्र धुप अति शोभतो, दीपक अजवाळुं; मुखडु मोहनलालनुं, नीरख्यु रुपाळु ॥ अखं२॥ भेरी शंख मृदंग धुनी, वाजां अति वाजे; ब्रह्मा भवसुर आविया. सौ दरसन काजे ॥ अखं॥३॥ जे जे वाणी ओचरे, घेरेस्वरे गावे; ब्रह्मानंदना नाथनी, छबी जोइ सुख पावे ॥ अखं४॥ पद ३॥ प्राणजीवन

पधराविया, मंदीरिया मांइ; पोढ्या सारु प्रेमशुं, सुखशेज बिछाइ ॥ प्राण १॥ प्रीतम बेठा पलंगपर, आवी अलबेलो, रुडो लागे राजवी, छोगाळो छेलो ॥ प्राण २॥ मोहन दीधी मुजने, फुलडानी माळा; पग चांपु हुं प्रेमथी, थया शामसुखाळा ॥ प्राण ३॥ शीख दीधी सउ साथने, पोढ्या कुंजवीलास, ब्रह्मानंद हजुरी हरीनो, एकांतीक दास ॥ प्राण ४ ॥ पद ४ ॥

मानसी पुजा राग धोळ.

श्री सहजानंदस्वामीना दासजीरे, करे प्रीते नीत उठी परमारथरे; प्रभुनी पुजा मानशीरे, पेहेलुं श्रीहरिनुं रूप संभारवुंरे,

जेवा निरख्या होय सुंदरशामरे ॥ प्रभु
॥ १ ॥ धरी ध्यान अचल नीज नाथनुरे
प्रेमे पूजवा हरी सुख धामरे;॥ प्रभु० ॥२॥
दंतधावन आदी कीया कराववीरे, हरीने
पावलां पेराववां पायरे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
सरवे सेवानी सामग्री पासे राखवीरे ह-
रिनी पुजा मधे विघन न थायरे ॥ प्रभु०
॥ ४ ॥ पेहेलुं सुगंधी फुलेल अंगे चोळवुंरे,
ढाळी चंदनबाजोठीयोसाररे प्रभु० ॥ ५ ॥
पछे नीर ऊनेथी नवराववारे, हरीने सजवा
सुभग सणगाररे ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ हरीने पी-
तांबर वस्त्र पेराववुंरे, अंगे ऊपरणी सोनेरी
सीर पाघरे ॥ प्रभु० ॥७॥ प्रेमे ढोलीओ
ढाळीने पधराववारे, करवो शामने चंदन
अंग रागरे ॥ प्रभु० ८ ॥ कंठे पुष्पना हार

पेरववारे, हरीने चोखलीया चोडवा सुं-
दर भालरे ॥ प्रभु० ॥९॥ माथे मोतीडाना
तोरा घरावववारे, हरीने हसवा टीबकडी
करवी गालरे प्रभु० ॥ १० ॥ मोंघा मोती
डाना हार आरोपवारे, हाथे हेमकडां
नंग चडावरे प्रभु० ॥११॥ काने मक्राकृत
कुंडल घरावववारे, वांये बाजुबंध बांधी
शोभे मावरे प्रभु० ॥१२॥ हरीना चरणने
चंदन चडाववुंरे, चांपी ऊरमां पांमवी घणी
शांतरे प्रभु० ॥१३॥ धरी बालभोग आ-
रती ऊतारवीरे करवी स्तवन प्रकंमा बहु
भातरे ॥ प्रभु० ॥ १४ ॥ करी अष्ट अंगे
दंडवत देवनेरे, पछे पुजवा प्रभुजी केरा
दासरे ॥ प्रभु० ॥१५॥ हरीने खटरस भो-
जन भावतांरे, पीरसी प्रेमे सु वेसवुं प्रभु

वासरे ॥ प्रभु० ॥ १६ ॥ घणी जुगते ज-
माडी जगदीशनेरे, प्रेमे पानबीडी देवी
मुखवासरे ॥ प्रभु० ॥ १७ ॥ प्रीते पलंगे
पोढाडी पग चांपवारे, हरीनो करवो नीज
मंदीर नीवासरे ॥ प्रभु० ॥ १८ ॥ रहेवु
नीश दीन हरीनी हजुरमांरे, करवी प्रभुना
चरण केरी सेवरे ॥ प्रभु० ॥ १९ ॥ मुक्ता-
नंद एवी रीते पुजा मानसीरे, करतां भ-
वजल तरे ततखेवरे ॥ प्रभु० ॥ २० ॥

॥ पद राग गरबी. ॥

वंदु सहेजानंदरसरूप अनूपमसारने रे लोल,
जेने भजतां छुटे फंद करे भवपारने रे लोल ॥ १ ॥
समरुं प्रगट रुप सुखधाम अनुपम नामनेरे

लाल, जेने भव ब्रह्मादिक देव भजे तजी कामनेरे लाल ॥ २ ॥ जे हरी अक्षर ब्रह्म आधार पार कोइ नव लहेरे लाल, जेने शेश सहस्रमुख गाय निगम नेति कहेरे लाल ॥३॥ व्रणवुं सुंदर रुप अनुप जुगल चरणे नमीरे लाल, नखशिश प्रेमसखिना नाथरहो उरमां रमीरे लाल॥४॥पद॥ १ ॥

आवो मारा मोहन मिठडा लाल केजोउं तारि मुरतिरे लाल, जतन करि राखुं रसिया राज विसारुं नहि उरथीरे लाल ॥ १ ॥ मन मारुं मोहयुं मोहनलाल, पाघडलीनि भातमांरे लाल, आवो ओरा छोगलां खोसुं छेल खांतिला जोउं खांतमांरे लाल ॥२॥ वाला तारुं झळके सुंदर भाळ तिलक रुडां कर्यांरे लाल, वाला तारा

वाम करणमां तिल तेणे मनडां हरयांरे लोल ॥ ३ ॥ वाला तारि भ्रकुटीने बाणे श्याम काळज मारां कोरियांरे लोल, नेणे तारे प्रेम सखिना नाथ के चित मारां चोरियांरे लोल ॥४॥ पद २ ॥ वाला मुने वश कीधि व्रजराय वालप तारा वालमांरे लोल, मन मारुं तळफे जोवा काज टिबकडी छे गालमांरे लोल ॥ १ ॥ वाला तारि नासिका नमणि नाथ अधरबिंब लालछेरे लोल, छेला मारा प्राण करुं कुरबाण जोया जेवी चालछेरे लोल ॥२॥ वाला तारा दंत दाडमनां बीज चतुराइ चावतारे लोल, वाला मारा प्राण हराछो नाथ मिठुं मिठुं गावतारे लोल ॥ ३ ॥ वाला तारा हसवे हराणुं चित विजुं हवे

नव गमेरे लोल, मन मारुं प्रेम सखिना नाथ के तम केडे भमेरे लोल ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥ रसीया जोइ रुपाळी कोट रुडी रेखा वळीरे लोल, वाला मारु मनडुं मलवा न्राय के जाय चितडुं चळीरे लोल ॥ १ ॥ वाला तारि जमणी भुजाने पास रुडा तील च्यारछेरे लोल, वाला तारा कंठ वचे तील एक अनुपम सारछेरे लोल ॥ २ ॥ वाला तारा उरमां विण गुणहार जोइ नेणां ठ-रेरे लोल, वाला तेतो जाणे प्रेमिजन जोइ नित ध्यान धरेरे लोल ॥३॥ रसीया जोइ तमारुं रुप रसिकजन घेलडारे लोल, आवो वाला प्रेम सखिना नाथ सुंदर वर छेल-डारे लोल ॥ ४ ॥ पद ॥४॥ वाला तारि भुजा जुगल जगदिश जोइने जाउं वारणेरे

लोल, करनां लटकां करता लाल आवोने मारे बारणेरे लोल ॥ १ ॥ वाला तारि आंगळीयुंनि रेखा नख मणि जोइनेरे लोल वाला मारा चित्तमां राखुं चोरि कहुं नहि कोईनेरे लोल ॥ २ ॥ वाला तारा उरमां अनुपम छाप जोवाने जीव आकळोरे लोल, वाला मारा हैडे हरख न माय जाणुं जे हमणां मळोरे लोल ॥ ३ ॥ वाला तारुं उदर अति रसरूप शितळ सदा नाथजीरे लोल, आवो ओरा प्रेम सखीना प्राण मळुं भरी बाथजीरे लोल ॥ ४ ॥ पद ५ ॥ वाला तारि मुर्ति अति रसरुप रसिक जोइने जीवेरे लोल, वाला ए रसना चाखणहार छाश ते नव पियेरे लोल ॥ १ ॥ वाला मारे सुख संपत तमे

श्याम मोहन मन भावतारे लोल, आवो मारे मंदिर जीवन प्राण हसीने बोलावतारे लोल॥२॥ वाला तारुं रुप अनुपम गौर मुर्ति मनमां गमेरे लोल, वाला तारुं जोबन जोवा काज के चित्त चरणे नमेरे लोल, आवो मारा रसिया राजिपनेण मरम करि बोलतारे लोल, आवो वाला प्रेम सखिना शेण मंदिरमारे डोलतारे लोल ॥ ४ ॥ पद ६॥ वाला तारुं रुप अनुपम नाथ उदर शोभा घणीरे लोल, त्रिवली जोवुं सुंदर छेल आवोने ओरा अम भणीरे लोल ॥ १ ॥ वाला तारि नाभि नौतमरुप उंडी अति गोळ छे रे लोल, कटिलंक जोइने जादवराय के मन रंग चोळछेरे लोल ॥ २ ॥ वाला तारि जंघा

जुगलनि शोभा मनमां जोइ रहुंरे लोल, वाला नित निरखुं पिंडिने पानि कोइने नव कहुंरे लोल ॥ ३ ॥ वाला तारा चरण कमळनुं ध्यान धरुं अति हेतमांरे लोल, आवो वाला प्रेमसखिना नाथ राखुं मारा चित्तमांरे लोल ॥४ ॥ पद ७॥ वाला तारा जुगल चरण रसरुप वखाणुंहुं वालमांरे लोल, वाला अति कोमळ अरुण रसाळ चोरे चित चालमांरे लोल ॥ १ ॥ वाला तारे जमणे अंगुठे तिलके नखमां चिंनछेरे लोक, वाला छेली आंगळिए तिल एक जोवा मनदिन छेरे लोल ॥२॥ वाला तारा नखनी अरुणता जोइने शशिकळा क्षीणछेरे लोल, वाला रस चोर चकोर जे भक्त जोवाने प्रविणछेरे लोल ॥ वाला तारी

वधेरेस्वामां चित्त रहो करी वासनेरे लोल
मागे प्रेम सखि करजोडी देजो दान दा-
सनेरे लोल ॥ ४ ॥ पद ॥ ८ ॥

॥ अथ शिक्षापत्री लिख्यते ॥

॥ श्लोकः ॥ वामेपस्य स्थिताराधा
श्रीश्रयस्या स्तिवक्षसि ॥
वृंदावन विहारंतं श्री कृष्णं
हृदिचिंतये ॥ १ ॥

अर्थः ॥– श्री सहजानंद स्वामि जे ते पोताना सत्संगि प्रत्ये शिक्षापत्री लिखता थका प्रथम पोताना इष्ट देव जे श्रीकृष्ण भगवान तेनुं ध्यानरूप मंगलाचरण करेछे. हुं जे ते मारा हृदयने विषे श्री कृष्ण

श्रीप्रगटप्रभु श्रीसहजानंद



स्वामी जयवंत वर्तो

चरण सेवक शास्त्री ह. रा. दी. नद.

श्रीसहजानंद स्वामीना चिन्होनुं



ध्यान करवा योग्य तेमना चरणारविंद

चरण सेवक, शास्त्री ह. रा. श्री. नं.

भगवाननुं ध्यान करुंछुं ते श्रीकृष्ण केवा छे तो जेना डाबापडखाने विषे राधिकाजि रह्यां छे अने जेना वक्ष स्थलने विषे लक्ष्मीजि रह्यां छे अने वृंदावनने विषे विहारना करनारा छे ॥ १ ॥ श्लोकः ॥ लिखामिसहजानंदस्वामीसर्वान्निजाश्रितान् नानादेशस्थितान् शिक्षापत्रीं वृत्तालय स्थितः ॥ २ ॥ अर्थः ॥ अने वरताल गामने विषे रह्या एवा सहजानंदस्वामि जे अमे ते अमे जे ते नानाप्रकारना जे सर्व देश तेमने विषे रह्या एवा जे अमारा आश्रित सर्वे सत्संगिते प्रत्ये शिक्षापत्रीने लिखिये छिये ॥ २ ॥ श्लोकः ॥ भ्रात्रो राममतापेच्छारामयोर्धर्मजन्मनोः ॥ यावयोध्याप्रसादाख्यरघुवीराभिधौसुतौ ॥ ३ ॥ अर्थः ॥

श्रीधर्मदेव थकि छे जन्म जेमनो एवा जे
अमारा भाई रामप्रतापजी तथा इच्छाराम
जी तेमना पुत्र जे अयोध्याप्रसाद नामे
ने रघुवीर नामे जेने अने अमारा दत्तपुत्र
करिने सर्वे सत्संगिना आचार्यपणाने विषे
स्थापन कर्या छे ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ मुकुं-
दानंदमुख्या श्चनैष्ठिकाब्रह्मचारिणः । गृह-
स्थाश्चमयाराम भट्टाद्यायेमदाश्रयाः ॥ ४ ॥
अर्थः ॥ तथा अमारा आश्रित एवा जे
मुकुंदानंद आदिक नैष्टिक ब्रह्मचारि तथा
अमारा आश्रित जे मयाराम भट्ट आदिक
गृहस्थ सत्संगि ॥ ४ ॥ श्लोकः ॥ सधवावि-
धवायोषायाश्चमच्छिष्यतांगताः । मुक्तानं-
दादयोयेस्युः साधवश्चाऽखिलाअपि ॥ ५ ॥
अर्थः ॥ तथा अमारे आश्रित जे सुवास-

नि ने विधवा एवि सर्वे बाईयुं तथा मुक्ता-
नंद आदिक जे सर्वे साधु ॥५॥ श्लोकः ॥
स्वधर्म रक्षिकामेतैः सर्वैर्वाच्याः सदा-
शिषः ॥ श्री मन्नारायणस्मृत्यासहिताः
शास्त्रसंमताः ॥ ६ ॥ अर्थः ॥ ए सर्वे तेमणे
पोताना धर्मनि रक्षाना करनाराने शास्त्रने
विषे प्रमाणरूप ने श्रीमन्नारायणनि स्मृ-
तिये सहित एवा जे अमारा रुडा आशी
र्वाद ते वांचवा ॥ ६ ॥ श्लोकः ॥ एकाग्रे-
णैवमनसापत्रीलेखः सहेतुकः ॥ अवधार्योऽ
यमखिलैः सर्वजीवहितावहः ॥७॥ अर्थः ॥
अने आ शिक्षापत्री लिख्यानुं जे कारण
छे ते सर्वे तेमणे एकाग्र मने करिने धार-
वुं अने आ शिक्षापत्री जे अमे लिखिछे
ते सर्वेना जिवने हितनि करनारिछे ॥७॥

श्लोकः ॥ येपालयंतिमनुजाः सच्छास्त्रम-
तिपादितान् । सदाचारान्सदातेत्रपरत्रच
महासुखाः ॥ ८ ॥ अर्थः ॥ अने श्रीमद्भा-
गवतपुराण आदिक जे सतशास्त्र तेमणे
जीवना कल्याणने अर्थे प्रतिपादन कर्‍या
एवा जे अहिंसा आदिक सदाचार तेमने
जे मनुष्य पालेछे ते मनुष्य जेते आ लो-
कने विषे ने परलोकने विषे महासुखिया
थायछे ॥ ८ ॥ श्लोकः । तानुल्लंघ्याऽत्रव-
र्त्तंवेयेतुस्वैरंकुबुद्धयः ॥ तइहामुत्रचमहल्लु-
भंतेकष्टमेवहि ॥ ९ ॥ अर्थः । अने ते स-
दाचारनुं उलंघन करिने जे मनुष्य पो-
ताना मनमां आवे तेम वर्तेछे तेतो कुबु-
द्धिवाला छे ने आ लोक परलोकने विषे
निश्चे मोटाकष्टनेज पामेछे ॥ ९ ॥ श्लोकः।

अतोमवद्भिर्मत्शिष्यैः सावधानतयाऽखि-
लैः । प्रीत्यैतामनुसृत्यैववर्त्तितव्यंनिरंतरम्
॥ १० ॥ अर्थः ॥ ते माटे अमारा शिष्य
एवा जे तमे सर्वे तेमणे तो प्रीतिये करिने
आ शिक्षापत्रीने अनुसरिनेज निरंतर
सावधानपणे वरतवुं पण आ शिक्षापत्रीनुं
उलंघन करिने वरतवुं नहि ॥ १० ॥
श्लोकः । कस्यापिप्राणिनोहिंसा नैवकार्यात्रमामकैः । सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपिबुद्ध्याकदाचन ॥ ११ ॥ अर्थः । हवे ते
वरत्यानि रित्य कहिये छिये जे अमारा
जे सत्संगि तेमणे कोइ जिव प्राणिमात्रनि
पण हिंसा न करवि अने जाणिने तो
झीणा एवा जुं मांकड चांचड आदिक
जीव तेमनि पण हिंसा क्यारेय न करवी

॥ ११ ॥ श्लोकः ॥ देवतापितृयागार्थ मप्यजादेश्चाहिंसनम् । नकर्त्तव्यमाहिंसैवधर्मः प्रोक्तोऽस्तियन्महान् ॥ १२ ॥ अर्थः । अने देवताने पितर तेना यज्ञने अर्थे पण बकरा मृगला शशला माछला आदिक कोइ जिवनि हिंसा न करवी केमजे अहिंसाछे तेज मोटो धर्मछे एम सर्वे शास्त्रमां कह्योछे ॥ १२ ॥ श्लोकः । स्त्रियाधनस्यवाप्राप्त्यैसाम्राज्यस्यचवा क्वचित् ॥ मनुष्यस्यतुकस्यापिहिंसाकार्यानसर्वथा ॥ १३ ॥ अर्थः । अने स्त्रि धन ने राज्य तेनी प्राप्तिने अर्थे पण कोइ मनुष्यनि हिंसा तो कोइ प्रकारे क्यारेय पण नज करवि ॥ ॥ १३ ॥ श्लोकः ॥ आत्मघातस्तुतीर्थेपिनकर्त्तव्यश्चनक्रुधा ॥ अयोग्याचरणात्क्वापि-

नविषोदंबंधनादिना ॥ १४ ॥ अर्थः ॥
अने आतमघाततो तीर्थने विषे पण न क-
रवो ने क्रोध करिने न करवो अने क्यारेक
कोइ अयोग्य आचरण थई जाय ते
थकि मुंझाईने पण आतमघात न करवो
अने झेरखाईने तथा गलेटुंपो खाईने तथा
कुवे पडिने तथा परवत उपरथि पडिन
इत्यादिक कोइ रितपे आतमघात न करवो
॥ १४ ॥ श्लोकः ॥ नभक्ष्यंमर्वथामांसं-
यज्ञशिष्टमपिक्वचित् । नपेयंचसुरामद्यमपि-
देवनिवेदितम् ॥ १५ ॥ अर्थः ॥ अने जे
मांसछे तेतो यज्ञनुं शेष होय तोपण आ-
पतकालमां पण क्यारेय नखावुं अने त्रण
प्रकारनि सुरा ने अगीयार प्रकारनुं मद्य
तु देवतानुं नैवेद्य होय तोपण न पिवुं १५

श्लोकः । अकार्याचरणेक्वापिजातेस्वस्य-परस्यवा । अंगच्छेदोनकर्त्तव्यः शस्त्राद्यैश्च-क्रुधापिवा ॥ ॥१६॥ अर्थः ॥ अने क्यारेक पोतावते क्यांईक अयोग्य आचरण थई गयुं होय अथवा कोइ बिजावते अयोग्य आचरण थइ गयुं होय तो शस्त्रादिके क-रिने पोताना अंगनुं तथा बिजाना अंगनुं छेदन न करवुं अथवा क्रोधे करिने पण पोताना अंगनुं तथा बिजाना अंगनुं छेदन न करवुं ॥ १६ ॥ श्लोकः । स्ते-नकर्मनकर्त्तव्यंधर्मार्थमपिकेनचित् ॥ स-स्वामिकाष्टपुष्पादिनग्राह्यंतदनाज्ञया ॥१७॥ अर्थः । अने धर्म करवाने अर्थे पण अ-मारा सत्संगि कोईये चोरीनुं काम न क-रवुं । अने धणियातुं जे काष्ठ पुष्प आ-

दिक वस्तु ते तेना धणिनि आज्ञा विना न लेवुं ॥ १७ ॥ श्लोकः ॥ व्यभिचारोन कर्त्तव्यः पुंभिः स्त्रीभिश्चमांश्रितैः ॥ द्युता दिव्यसनंत्याज्यंनाद्यंभंगादिमादकम् । १८ । अर्थः । अने अमारा आश्रित जे पुरुष तथा स्त्रियुं तेमणे व्यभिचार न करवो अने जुगटा आदिक जे व्यसन तेनो त्याग करवो अने भांग्य मफर माजम गांजो ए आदिक जे केफ करनारां वस्तु ते खावां नहि ने पिवां पण नहि ॥१८॥ श्लोकः । अग्राह्यान्नेनपक्कंयदन्नंतदुदकंचन । जगन्नाथपुरोऽन्यत्रग्राह्यंकृष्णप्रसाद्यपि ॥ १९ ॥ अर्थः ॥ अने जेना हाथनुं रांधेल अन्न तथा जेना पात्रनुं जल ते खपतुं नहोय तेणे रांधेल अन्न तथा तेना पात्रनुं जल ते श्री

कृष्ण भगवाननि प्रसादि चरणामृतनामा-
हात्मे करिने पण जगन्नाथपुरि विना अ-
न्यस्थानकोरे विषे ग्रहण न करवुं न जग-
न्नाथपुरिने विषे जगन्नाथजिनो प्रसादले-
वाय तेनो दोष नहि ॥ १९॥ श्लोकः।मि-
थ्यापवादःकस्मिंश्चिदपिस्वार्थ स्यसिद्धये
नारोप्योनापशब्दाश्च भाषणीयाःकदाचन
॥२०॥ अर्थः। अने पोताना स्वार्थनिसि-
द्धिने अर्थे पण कोईने विषे मिथ्या अपवाद
आरोपण न करवो अने कोईने गालतो
क्यारे न देवि ॥ २०॥ श्लोकः ॥ देवता-
तीर्थविप्राणां साध्वीनांचसतामपि। वेदा-
नांचनकर्त्तव्यानिंदाश्रव्यानचक्वचित्।२१।
अर्थः ॥ अने देवतातीर्थ ब्राह्मण पतिव्रता
साधुने वेद एमनि निंदा क्यारे न करवि

ने न सांभलवि ॥२१॥ श्लोकः । देवतायै भवेद्यस्यै सुरामांसनिवेदनम् । यत्पुरोजादि हिंसा च न भक्ष्यं तन्निवेदितम् ॥२ ॥ अर्थः । अनेजे देवताने सुरामांसनुं नैवेद्य थातुंहोय अने वलि जे देवताने आगल्य बकराआ- दिक जिवनि हिंसा थाति होय तेदेवतानुं नैवेद्य न खावुं ॥२२॥ श्लोकः । दृष्ट्वाशि- वालयादीनि देवागाराणिवर्त्मनि । प्रण- म्यतानितद्देवदर्शनंकार्यमादरात् ।२३। अर्थः अने मार्गने विषे चालतेसते शिवालयादिक जे देवमंदिर आवे तेने जोईनेतेनेनमस्कार करवो अने आदर थकि ते देवनुं दर्शन करवुं ॥२३॥ श्लोकः । स्ववर्णाश्रमधर्मोयः सहातव्योनकेर्नचित् ॥ परधर्मोनचाचर्यो नचपाषंड कल्पितः ॥२४॥अर्थः। अने

पोतपोताना वर्णाश्रमनो जे धर्म ते कांई सत्संगिये त्याग न करवो अने परधर्मनुं आचरण न करवुं तथा पाषंडधर्मनुं आचरण न करवुं तथा कल्पित धर्मनुं आचरण न करवुं ॥२४॥ श्लोकः । कृष्णभक्तेः स्वधर्माद्वापतनं यस्यवाक्यतः । स्यात्तन्मुखान्नवैश्रव्याः कथावार्त्ताश्चवाप्रभोः॥ २५॥ अर्थः।अने जेना वचनने सांभलवे करिने श्रीकृष्णभगवाननि भक्ति ने पोतानो धर्म ए बे थकि पडि जवाय तेना मुख थकि भगवाननि कथा वार्त्ता न सांभलवि ।२५। श्लोकः । स्वपरद्रोहजननंसत्यंभाष्यंनकर्हिचित् । कृतघ्नसंगस्त्यक्तव्योलुंचाग्राह्यानकस्यचित् ॥ २६ ॥ अर्थः । अने जे सत्य वचन बोलवे करिने पोतानो द्रोह थाय

तथा पारको द्रोह थाय एवुं जे सत्य व-
चन ते क्यारेय न बोलवुं अने जे कृतघ्नि
होय तेना संगनो त्याग करवो अने व्य-
वहार कारजने विषे कोईनि लांच नलेवी
॥ २६ ॥ श्लोकः । चौरपापिव्यसनिनां
संगः पाषंडिनांतथा । कामिनांचनकर्त्तव्यो
जनवंचनकर्मणाम् ॥ २७ ॥ अर्थः । अने
चोर पापि व्यसनि पाषंडि कामि तथा
किमिया आदिक क्रियाये करिने जनने
ठगनारो ए छो प्रकारनां जे मनुष्य तेम-
नो संग न करवो ॥२७॥ श्लोकः । भक्तिं
वाज्ञानमालंब्य स्त्रीद्रव्यरसलोलुभाः । पापे
प्रवर्त्तमानाःस्युःकार्यरतेषांनसंगमः ॥ २८ ॥
अर्थः । अने जे मनुष्य भक्तिनुं अथवा
ज्ञाननुं आलंबन करिने स्त्री द्रव्यने रसा-

स्वाद तेने विषे अतिशे लोलुप थका पा-
पने विषे प्रवरतता होय ते मनुष्यनो स-
मागम न करवो ॥२८॥ श्लोकः ॥ कृष्ण
कृष्णावताराणांखंडनंयत्रयुक्तिभिः । कृतं
स्यात्तानिशास्त्राणिनमान्यानिकदाचन २९
अर्थः । अने जे शास्त्रनेविषे श्रीकृष्ण भ-
गवान तथा श्रीकृष्णभगवानना जे वारा-
हादिक अवतार तेमनुं जुक्तिये करिने
खंडन कर्युं होय एवां जे शास्त्र ते क्यारेय
न मानवां ने न सांभळवां ॥२९ ॥ श्लोकः
॥ अगालितंनपातव्यंपानीयंचपयस्तथा ॥
स्नानादिनैवकर्त्तव्यंसूक्ष्मजंतुमयांभसा ।३०।
अर्थः ॥ अने गाल्या विनानुं जे जळ तथा
दुध ते न पिवुं अने जे जळने विषे झिणा
जिव घणाक होय ते जळे करिने स्नाना-

दिक क्रिया न करवि ॥ ३० ॥ श्लोकः ।
यदोषधंचसुरया संपृक्तंपललेनवा ॥ अज्ञा-
तवृत्तवैद्येनदत्तंचाधंनतत्कचित् ॥ ३१ ॥
अर्थः ॥ अने जे ओषधदारु तथा मांस तेणे
जुक्त होय ते ओषध क्यारेय न खावुं अने
वलि जे वैदना आचरणने जाणता न
होईये ते वैदे आप्युं जे ओषध ते पण
क्यारेय न खावुं ॥ ३१ ॥श्लोकः।स्थानेषु-
लोकशास्त्राभ्यांनिषिद्धेषुकदाचन । मलमू-
त्रोत्सर्जनंचनकार्यंष्ठीवनंतथा ॥ ३२ ॥ अर्थः।
अने लोकने शास्त्र तेणे मलमूत्र करवाने
अर्थे वरज्यां एवां स्थानक जे जिरण दे-
वालय तथा नदि तलावना आरा तथा
मार्ग तथा वावेलुं खेतर तथा वृक्षनि छा-
या तथा फुलवाडि बगिचा ए आदिक जे

स्थानक तेमने विषे क्यारेय पण मलमूत्र न करवुं तथा थुंकवुं पण नहि ॥ ३२ ॥ श्लोकः । अद्वारेणननिर्गम्यंप्रवेष्टव्यंनते-नच । स्थानेसस्वामिके वासःकार्योऽपृष्ट्वा नतप्रतिम् ॥३३॥ अर्थः ॥ अने चोर मार्गे करिने पेसवुं नहि ने निसरवुं नहि अने जे स्थानक धणिपातुं होय ते स्थानकने विषे तेना धणिने पुछ्या विना उतारो न कर-वो ।३३। श्लोकः । ज्ञानवार्त्ताश्रुतिर्नार्या-मुखात्कार्यानपुरुषैः । नविवाहः स्त्रिया-कार्योनराज्ञानचतज्जनैः॥३४॥ अर्थः । अने अमारा सत्संग जे पुरुषमात्र तेमणे बाई माणसनो मुख थकि ज्ञानवार्त्ता न सांभ-ळवि अने स्त्रियुं साथे विवाद न करवो तथा राजा संघाथे तथा राजानां माणस

संघाथे विवाद न करवो ॥ २४॥ श्लोकः
अपमानोन कर्तव्योगुरूणांनवरीयसाम्
लोकप्रतिष्ठितानां चविदुषां शास्त्रधारिणाम्
॥ २५ ॥ अर्थः।अने गुरुनुं अपमान न क
रवुं तथा जे अतिशे श्रेष्ट मनुष्य होय
तथा जे लोकने विषे प्रतिष्ठित मनुष्य होय
तथा जे विद्यावान मनुष्य होय तथा जे
शास्त्रधारि मनुष्य होय ते सर्वेनुं अपमान
न करवुं ॥ २५ ॥ श्लोकः कार्यंनसहसा-
किंचित्कार्योधर्मस्तुसत्वरम् । पाठनीयाऽ
धीतविद्याकार्यः संगोऽन्वहं सताम् । २६।
अर्थः । अने विचार्या विनानुं ततकाळ
कांई कारज न करवुं अने धर्म संबंधि जे
कारज तेतो ततकाल करवुं अने पोते जे
विद्या भण्या होईये ते बिजाने भणाववि

अने नित्य प्रत्ये साधुनो समागम करवो ।२६। श्लोकः । गुरुंदेवनृपेक्षार्थंनगम्यंरिक्तपाणिभिः विश्वासघातो नोकार्यःस्वश्लाघास्वमुखेनच ॥२७॥ अर्थः। अने गुरु देवने राजाए त्रण्यना दर्शनने अर्थे ज्यारे जावुं तारे ठाले हाथे न जावुं अने कोईनो विश्वासघात न करवो अने पोताने मुखे करिने पोतानां वखाण न करवां ॥ २७ ॥ श्लोकः । यस्मिन्परिहितेपिस्युर्दृश्यान्यंगानिचात्मनः । तद्दुष्यंवसनंनैवपरिधार्यंमदाश्रितैः ॥ २८ ॥ अर्थः । अने जे वस्त्र पेरे थके पण पोतानां अंग देखाय तेवुं जे झुंडुं वस्त्र ते अमारा सत्संगि तेमणे न पेरवुं ॥ २८ ॥ श्लोकः । धर्मेणरहिताकृष्ण भक्तिः कार्यानसर्वथा । अज्ञानिंदा-

भयान्नैवत्याज्यं श्रीकृष्णसेवनम् ॥ ३९ ॥
अर्थः। अने श्रीकृष्णभगवानिनि जे भक्ति ते धर्मे रहित एवि कोई प्रकारे न करवि अने अज्ञानि एवां जे मनुष्य तेमनि निंदाना भय थकि श्रीकृष्ण भगवानिनि सेवानो त्याग करवोज नहि ।३९।श्लोकः।
उत्सवाहेषुनित्यंचकृष्णमंदिरमागतैः। पुंभिः स्पृश्यानवनितास्तत्रताभिश्चपुरुषाः ॥ ४०॥
अर्थः। अने उछवना दिवसने विषे तथा नित्य प्रत्ये श्रीकृष्णना मंदिरमां आव्या एवा जे सत्संगि पुरुष तेमणे ते मंदिरने विषे स्त्रियुंनो स्पर्श न करवो तथा स्त्रियुं तेमणे पुरुषनो स्पर्श न करवो अने मंदिरमांथि निसरया पछे पोतपोतानि रिते वरतवुं ॥ ४० ॥ श्लोकः । कृष्णदीक्षांगु-

रोः प्राप्तैस्तुलसीमालिके गले । धार्येनित्यं चोर्ध्वपुंड्रंललाटादौद्विजातिभिः ॥ ४१ ॥ अर्थः॥ अने धर्मवंशि गुरुथकि श्रीकृष्णनि दीक्षाने पांम्या एवा जे ब्राह्मण क्षत्रिय ने वैश्य ए त्रण्य वर्णना अमारा सत्संगि तेमणे कंठने विषे तुलसीनि बेवडी माळा नित्ये धारवि अने ललाट हृदयने बे हाथ ए चार ठेकाणे ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करवुं ॥४१॥ श्लोकः ॥ तत्तुगोपीचंदनेनचंदनेनाऽथवाहरेः ॥ कार्यंपूजावशिष्टेनकेसरादियुतेनच ॥ ४२ ॥ अर्थः ॥ अने ते तिलक जेते गोपीचंदने करिने करवुं अथवा भगवानिनि पुजा करतां बाकि रह्युं जे केसर कुंकुमादिके जुक्त एवुं जे प्रसादि चंदन तेणे करिने तिलककरवुं ॥४२॥ श्लोकः । तन्म-

ष्यएवकर्त्तव्यःपुंड्रंद्रव्येणचंद्रकः । कुंकुमे-
नाऽथवावृत्तोराधालक्ष्मीप्रसादिना ॥ ४३ ॥
अर्थः। अनेते तिळकना मध्यने विषे गोळ
एवोजेचांदलो ते जेते गोपीचंदने करिनेकर
वो अथवा राधिकाजि ने लक्ष्मीजि तेनुं प्र-
सादि एवुं जे कुंकम तेणे करिने ते चांदलो
करवो ॥ ४३ ॥ श्लोकः। सच्छूद्राः कृ-
ष्णभक्तायेतैस्तुमालोर्ध्वपुंड्रके । द्विजातिव-
द्धारणीयेनिजधर्मेषुसंस्थितैः ॥४४॥ अर्थः ॥
अने पोताना धर्मने विषे रह्याने श्रीकृष्ण
ना भक्त एवा जे सत्शूद्र तेमणे तो तुळ-
सीनि माळाने उर्ध्वपुंड्र तिलक जेते ब्राह्मण
क्षत्रिय वैश्यनि पेठे धारवां ॥ ४४ ॥
श्लोकः । भक्तैस्तदितरैर्मालेचंदनादींधनो
द्भवे ॥ धार्येकंठेललाटेऽथकार्यःकेवलचंद्र

कः ॥ ४५ ॥ अर्थः । अने ते सत्शूद्र थकि बिजा जे जातिये करिने उतरता एवा भक्तजन तेमणे तो चंदनादिक काष्ठनि जे बेवडी माळा ते भगवाननि प्रसादि कराविने कंठने विषे धारवि अने ललाटने विषे केवल चांदलो करवो पण तिलक न करवुं ॥ ४५ ॥ श्लोकः ॥ त्रिपुंड्ररुद्राक्षधृतिर्येषांस्यात्स्वकुलागता । तैस्तुविप्रादिभिः क्वापिनत्याज्यासाप्रदाश्रितैः ॥ ४६ ॥ अर्थः । अने जे ब्राह्मणादिकने त्रिपुंड्र जे आडुं तिलक करवुं तथा रुद्राक्षनि माळा धारविएबेवानांजेने पोतानि कुळ परंपराये करिने चाल्यां आव्यां होय ते ब्राह्मणादिक अमारा आश्रित थया होय तोपण तेमणे ते त्रिपुंड्रने रुद्राक्षनो

क्यारेय त्याग न करवो॥४६॥ श्लोकः। ऐकात्म्यमेवविज्ञेयंनारायणमहेशयोः। उभयोर्ब्रह्मरूपेणवेदेषुप्रतिपादनात् ॥ ४७॥ अर्थः॥ अने नारायणने शिवजी ए बेनुं एकात्मापणुंज जाणवुं केमजे वेदने विषे ए बेयनुं ब्रह्मरुपे करिने प्रतिपादन कर्युं छे ॥ ४७॥ श्लोकः। शास्त्रोक्तआपद्धर्मोयःस्वल्पापदिकर्हिचित् ॥ मदाश्रितैर्मुख्यतयाग्रहीतव्योनमानवैः॥ ४८॥ अर्थः। अने अमारा आश्रीत जे मनुष्य तेमणे शास्त्रे कह्यो जे आपद्धर्म ते अल्प आपतकालने विषे मुख्यपणे करिने क्यारेय ग्रहण न करवो ॥ ४८॥ श्लोकः। प्रत्यहंतुप्रबोद्धव्यंपूर्वमेवोदयाद्रवेः ॥ विधायकृष्णस्मरणकार्यःशौचविधिस्ततः॥४९॥ अर्थः। अने

अमारा सत्संगि तेमणे नित्ये सूर्य उग्याथि प्रथमज जागवुं श्रीकृष्णभगवाननुं स्मरण करिने पछे शौच विधि करवा जावुं ।४९॥ श्लोकः । उपविश्यैवचैकत्रकर्त्तव्यंदंतधावनम् । स्नात्वाशुच्यंबुना धौतेपरिधायैचवाससी ॥ ५० ॥ अर्थः । अपने पछे एक स्थानक ने विषे बेशिने दातण करवुं अने पछे पवित्र जले करिने स्नान करिने पछे धोयेलुं वस्त्र एक पेरवुं ने एक ओढवुं ॥ ५० ॥ श्लोकः । उपविश्य ततःशुद्ध आसनेशुचिभूतले ॥ असंकीर्णउपस्पृश्यंप्राङ्मुखंवोत्तरामुखम् ॥ ५१ ॥ अर्थः । अने तेवार पछे पवित्र पृथविने विषे पाथर्यु ने शुद्ध ने कोइ बिजा आसनने अडयुं न होय ने जे उपर सारिपेठे बेसाय एवुं जे

आसन तेने विषे पूर्व मुखे अथवा उत्तर मुखे बेसिने आचमन करवुं ॥ ५१ ॥ श्लोकः ॥ कर्त्तव्यमूर्ध्वपुंड्रंचपुंभिरेवसचंद्रकम् ॥ कार्यः सधवनारीभिर्भाले कुंकुमचंद्रकः ॥ ५२ ॥ अर्थः । अने पछे सत्संगि पुरुषमात्रे चांदले सहित ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करवुं अने सुवासनि जे स्त्रियुं तेमणे तो पोताना भालने विषे कुंकुमनो चांदलो करवो ॥५२॥ श्लोकः । पुंड्रंवाचंद्रकोभालेनकार्योमृतनाथया ॥ मनसापूजनकार्यंततः कृष्णस्यचाखिलैः ॥ ५३ ॥ अर्थः । अने ते विधवा स्त्रियुं मात्रे पोताना भालने विषे तिलक न करवुं ने चांदलो पण न करवो अने ते पछे ते सर्वे जे अमारा सत्संगि तेमणे मने करिने कल्प्यां जे चंदन पुष्पा-

दिक उपचार तेमणे करिनें, श्रीकृष्णभगवाननि मानसि पूजा करवि ॥ ५३ ॥ श्लोकः । प्रणम्यराधाकृष्णस्यलेख्याचांतत आदरात् ॥ शक्त्याजपित्वातन्मंत्रंकर्त्तव्यं व्यावहारिकम् ॥ ५४ ॥ अर्थः । अने ते पछे श्रीराधाकृष्णनि जे चित्र प्रतिमा तेनुं आदर थकि दरशन करिने, नमस्कार करिने पछे पोताना सामर्थ्य प्रमाणे श्रीकृष्णनो जे अष्टाक्षर मंत्र तेनो जप करिने ते पछे पोतानुं व्यवहारिक कामकाज करवुं ॥ ५४ ॥ श्लोकः । येत्वंबरीषवद्भक्ताः । स्युरिहात्मनिवेदिनः । तैश्चमानसपूजांतंका[illegible]वै ॥५५॥ अर्थः । अने जे अमारा सत्संगिमां अंबरिषराजानि पेठे आत्म निवेदि एवा उत्तम भक्त होय तेमणे

पण प्रथम कह्युं तेवि रिते अनुक्रमे करिने मानसि पूजा परजंत सर्वे क्रिया करवी ॥ ५५ ॥ श्लोकः । शैलीवाधातुजामूर्तिः । शालग्रामोऽर्च्यंएवतैः । द्रव्यैर्यथाप्तैः कृष्ण स्यजप्योऽथाष्टाक्षरोमनुः ॥ ५६ ॥ अर्थः । अने तेजे आत्म निवेदि भक्त तेमणे पाशाणनि अथवा धातु निजे श्रीकृष्णभगवाननि प्रतिमा अथवा शालग्राम तेनि जे पूजा ते देशकालने अनुसरिने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे प्राप्त थयां जे चंदन पुष्प फलादिक वस्तु तेणे करिने करवि अने पछे श्रीकृष्णभगवाननो जे अष्टाक्षर मंत्र तेनो जप करवो ॥५६॥ श्लोकः । स्तोत्रादेरथ कृष्णस्यपाठः कार्यः स्वशक्तितः । तथानधीतजीर्वाणैः कार्यंतन्नामकीर्त्तनम्

॥ ५७ ॥ अने ते पछे श्रीकृष्णभगवानना
जे स्तोत्र अथवा ग्रंथ तेनो जे पाठ ते पो-
ताना सामर्थ्य प्रमाणें करवो अने जे सं-
स्कृत न भण्या होय तेमणे श्रीकृष्णभग-
वाननुं नाम कीर्त्तन करवुं ॥५७॥ श्लोकः॥
हरेर्विधायनैवेद्यंभोज्यंप्रासादिकंततः ॥ कृ-
ष्णेनापरैःप्रीत्याभवितव्यंचतैःसदा ॥५८॥
अर्थः । अने पछे श्रीकृष्णभगवानने नैवेद्य
करिने पछे ते प्रसादि एवुं जे अन्न ते
जमवुं अने ते जे आत्म निवेदि वैष्णव ते
मणे सर्व कालने विषे प्रीतिये करिने श्री-
कृष्णभगवाननि सेवा परायण थावुं॥५८॥
श्लोकः । प्रोक्तास्तेनिर्गुणाभक्तानिर्गुणस्य
हरेर्यतः ॥ संबंधात्तत्क्रियाःसर्वाभवंत्येवहि-
निर्गुणाः ॥५९॥ अर्थः । अने निर्गुण केतां

मायाना जे सत्वादिक त्रणपगुण तेणे रहि-
त एवाजे श्रीकृष्णभगवान तेना संबंध
थकि ते आत्मनिवेदि भक्तनि जे सर्वे क्रि-
या ते निर्गुण थाय छे ते हेतुमाटे ते आ-
त्मनिवेदिभक्त जे ते निर्गुण कह्याछे॥५९॥
श्लोकः । भक्तैस्तैस्तुकृष्णायानर्पितंवार्यपि-
क्वचित् ॥ नपेयंनैवभक्ष्यंचपत्रकंदफलाद्य-
पि ॥६०॥ अर्थः॥ अने ए जे आत्मनिवे-
दिभक्त तेमणे श्रीकृष्ण भगवानने अर्पण
कर्याविनानुं जळ पण क्यारेय न पिवुं
अने पत्रकंदफळादिक जे वस्तु ते पण श्री
कृष्णभगवानने अर्पण कर्याविनानुं न खा-
वुं ॥ ६० ॥ श्लोकः सर्वंरशक्तौवार्द्धक्याद्वरी
यस्यापदाऽथवा ॥ भक्तःपक्रष्णमन्यस्मै-
दत्वावृत्यंयथाबलम् ॥ ६१ ॥ अर्थः । अने

वळि सर्वे जे अमारा सत्संगि तेमने वृद्ध
पणाथकि अथवा कोई मोटो आपतकाळे
करिने असमर्थपणुं थइ गये सते पोताने
सेववानुं जे श्रीकृष्णनुं स्वरूप ते बिजा भ-
क्तने आपि दईने पोतेपोताना सामर्थ्य प्र
माणे वरतवुं ॥ ६१ ॥ श्लोकः ॥ आचार्ये
णैवदत्तंयद्यच्चतेनप्रतिष्ठितम् ॥ कृष्णस्वरू-
पंतत्सेव्यंवंद्यमेवेतरत्तुयत् ॥६२॥ अर्थः । अने
जे श्रीकृष्णनुं स्वरूप पोताने सेववाने अ-
र्थे धर्मवंशना जे आचार्य तेमणेज आप्युं
होय अथवा ते आचार्ये जे स्वरूपनि प्र-
तिष्ठा करि होय तेज स्वरूपने सेववुं अने
ते विना बिजुं जे श्रीकृष्णनुं स्वरूप तेतो
नमस्कार करवा जोग्यछे पण सेववा जो-
ग्य नथि ॥६२ ॥ श्लोकः ॥ भगवन्मंदिरं

सर्वैःसायंगंतव्यमन्वहम् ॥ नामसंकीर्त्तनं कार्यंतत्रोच्चैराधिकापतेः ॥ ६३ ॥ अर्थः ॥ अने अमारा जे सर्वे सत्संगि तेमणे नित्य प्रत्ये सायंकाले भगवानना मंदिरप्रत्ये जावुं अने ते मंदिरने विषे श्रीराधिकाजिना पति एवा जे श्रीकृष्णभगवान तेना नामनुं उंचे स्वरे करिने कीर्त्तन करवुं ॥ ६३॥ श्लोकः ॥ कार्यास्तस्यकथावार्त्ताः श्रव्या श्चपरमादरात् ॥ वादित्रसहितंकार्यंकृष्ण कीर्त्तनमुत्सवे ॥ ६४ ॥ अर्थः ॥ अने ते श्रीकृष्णनि जे कथा वार्त्ता ते परम आदर थकि करवि ने सांभालवी अने उछ्वने दिवसे वाजंत्रे सहित श्रीकृष्णानां कीर्त्तन करवां ॥ ६४ ॥ श्लोकः ॥ प्रत्यहंकार्यमित्थं हिसर्वैरपिमदाश्रितैः ॥ संस्कृतप्राकृत

ग्रंथाभ्यासश्चापि यथामति ॥ ६५ ॥ अने अमारा आश्रित जे सर्वे सत्संगि तेमणे जेमकार पूर्वे कह्युं ए प्रकारे करिनेज नित्यप्रत्ये वरतवुं अने संस्कृत ने प्राकृत एवा जे सतग्रंथ तेमनो अभ्यास पण पोतानि बुद्धिने अनुसारे करवो ॥ ६५ ॥ श्लोकः ॥ यादृशैर्योगुणैर्युक्तस्तादृशेसतुकर्मणि ॥ योजनीयोविचार्यैवनान्यथ तुकदाचन ॥ ६६ ॥ अर्थः ॥ अने जे मनुष्य जेवा गुणे करिने जुक्त होय ते मनुष्यने तेवा कारजने विषे विचारिनेज प्रेरवु पण जे कारजने विषे जे जोग्य न होय ते कारजने विषे तेने क्यारेय पण न प्रेरवुं ॥ ६६ ॥ श्लोकः ॥ अन्नवस्त्रादिभिः सर्वैःस्वकीयाः परिचारकाः ॥ संभावनीयाःसततंयथायोग्यंयथाधनम् ॥ ६७ ॥

अर्थः ॥ अने पोताना जे सेवक होय ते
सर्वेनि पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्नवस्त्रा-
दिके करिने जथा जोग्य संभावना निरं-
तर राखवी ॥६७॥ श्लोकः ॥ याद्दग्गुणोयः
पुरुषस्ताद्दशावचनेनसः ॥ देशकालानुसा-
रेणभाषणीयोनचान्यथा ॥ ६८ ॥ अर्थः ॥
अने जे पुरुष जेवा गुणवालो होय ते पु-
रुषने तेवा वचने करिने देशकालानुसारे
जथा जोग्य बोलववो पण एथि बिजि
रिते न बोलाववो ॥ ६८ ॥ श्लोकः । गुरु
भूपालवर्षिष्ठत्यागिविद्वत्तपस्विनाम् ॥ अ-
भ्युत्थानादिनाकार्यः सन्मानोविनयान्वि-
तैः॥६९॥अर्थः ॥ अने विनये करिने जुक्त
एवा जे अमारा आश्रीत सत्संगि तेमणे
गुरु राजा अतिवृद्ध त्यागि विद्वान ने तप

स्वि ए छोजणा आवे तारे सन्मुख उठवुं तथा आसन आपवुं तथा मधुरे वचने बोलाववुं इत्यादिक क्रियाये करिने एमनुं सन्मान करवुं ॥ ६९ ॥ श्लोकः ॥ नोरौक्त्वापादमेकंगुरुदेवनृपांतिके ॥ उपवेश्यंसभायांचजानूबध्वानवाससा ॥ ७० ॥ अर्थः अने गुरुदेवने राजा एमने समीपे तथा सभाने विषे पग उपरच्य पग चढाविने न बेसवुं तथा वस्त्रे करिने ढिचणने बांधिने न बेसवुं ॥ ७० ॥ श्लोकः । विवादोनैवकर्त्तव्यः स्वाचार्येणसहक्कचित् ॥ पूज्यास्तेध नवस्त्राद्यैर्यथाशक्तिसचाखिलैः ॥ ७१ ॥ अर्थः ॥ अने अमारा आश्रित जे सर्वे सत्संगि तेमणे पोताना आचार्य संघाथे क्यारे य पण विवाद न करवो अने पोताना

सामर्थ्य प्रमाणे अन्न धनवस्त्रादिके करिने ते पोताना आचार्यने पूजवा ॥७१॥ श्लोकः समायांतं निशम्याशुप्रत्युद्गंतव्यमादरात् ॥ तस्मिन् यात्यनुगम्यंचग्रामांतावधिमच्छ्रितैः ॥ ७२ ॥ अर्थः ॥ अमारा जे आश्रित जन तेमणे पोताना आचार्यने आवता सांभलिनें आदर थकि ततकाल सनमुख जावुं॥ अने ते आचार्य पोताना गामथि पाछा पधारे तारे गामनि भागोल सुधि वलाववा जावुं ॥७२॥ श्लोकः। अपिभूरिफलंकर्मधर्मापेतंभवेद्यदि ॥ आचार्यं तर्हितन्नैवधर्मः सर्वार्थदोऽस्तिहि ॥ ७३ ॥ अर्थः । अने घणुंवछे फल जेने विषे एवुं पण जे कर्म ते जे ते जो धर्मे रहित होय तो तेनुं आचरण नज करवुं केमजे धर्म

छे तेज सर्व पुरुषार्थनो आपनारोछे माटे कोईक फळना लोभे करिने धर्मनो त्याग न करवो ॥ ७३ ॥ श्लोकः ॥ पूर्वैर्महद्भि रपियदधर्माचरणंक्वचित् । कृतंस्यात्तत्तु-नग्राह्यंग्राह्योधर्मस्तुतत्कृतः ॥७४॥ अर्थः ॥ अने पूर्वे थया जे मोटा पुरुष तेमणे पण जो क्यारेक अधर्माचरण कर्युं होय तो तेनुं ग्रहण न करवुं अने तेमणे जे धर्मा· चरण कर्युं होय तो तेनुं ग्रहण करवुं ॥ ७४ ॥ श्लोकः ॥ गुह्यवार्त्तातुकस्यापि प्रकाश्यानैवकुत्रचित् । समदृष्ट्या नकार्य-श्चयथार्हार्चाऽव्यतिक्रमः ॥ ७५ ॥ अर्थः । अने कोयनि पण जे गुह्य वारता तेवो कोई ठेकांणे पण प्रकाश करविज नहि अने जे जिवनुं जेवि रिते सन्मान करवुं

घटतुं होय तेनुं तेवि रितेज सन्मान करवुं पण समदृष्टिये करिने ए मरजादानुं उलं-घन करवुं नहि । ७५ । श्लोकः विशेष-नियमोधार्यश्चातुर्मास्येऽखिलैरपि ॥ एक स्मिन्श्रावणे मासिसत्वशक्तैस्तुमानवैः ॥ ७६ ॥ अर्थः ॥ अने अमारा जे सर्वे सत्सं-गि तेमणे चातुर्मासने विषे विशेष नियम धारवो ने जे मनुष्य असमर्थ होय तेमणे तो एक श्रावण मासने विषे विशेष नि-यम धारवो ॥ ७६ ॥ श्लोकः । विष्णोः कथायाः श्रवणं वाचनंगुणकीर्त्तनम् ॥ म-हापूजामंत्रजपः स्तोत्रपाठः प्रदक्षिणाः ॥ ७७ ॥ अर्थः ॥ अने ते विशेष नियम ते कियां तो भगवानिनि कथानुं श्रवण करवुं तथा कथा वांचवि तथा भगवानना

गुणनुं कीर्त्तन करवुं तथा पंचामृत स्नाने करिने भगवाननि महापूजा करवि तथा भगवानना मंत्रनो जप करवो तथा स्तोत्रनो पाठ करवो तथा भगवाननी प्रदक्षिणाओ करवि ॥७८ श्लोकः ॥ साष्टांगप्रणतिश्चेतिनि[illegible]: एतेष्टैकतमोभक्त्याधारणीयोविशेषतः ॥ ७८ ॥ अर्थः ॥ तथा भगवानने साष्टांग नमस्कार करवो एजे आठ प्रकारना नियम ते अमे उत्तम मान्याछे तेमाटे ए नियममांथि कोई एक नियम जे ते चोमासाने विषे विशेषपणे भक्तिये करिने धारवो ॥७८॥ श्लोकः ॥ एकादशीनांसर्वासांकर्त्तव्यंव्रतमादरात् । कृष्णजन्मदिनानांचशिवरात्रेश्चसोत्सवम् ॥ ७९ ॥ अर्थः अने सर्वे जे

एकादशियुं तेमनुं व्रत जे ते आदर थकि करवुं तथा श्रीकृष्णभगवानना जे जन्माष्टमी आदिक जन्म दिवस तेमनुं व्रत जे ते आदरथकि करवुं तथा शिवरात्रिनुं व्रत जे ते आदर थकि करवुं अने ते व्रतना दिवसने विषे मोटा उछव करवा ॥ ७९ ॥ श्लोकः । उपवासदिनेत्याज्यादिवानिद्राप्रयत्नतः । उपवासस्तयानश्येन्मैथुनेनेवयन्नृणाम् ॥ ८० ॥ अर्थः । अने जे दिवसे व्रतनो उपवास कर्यो होय ते दिवसे अतिशे जतने करिने दिवसनी निद्रानो त्याग करवो केमजे जेम मैथुने करिने मनुष्यना उपवासनो नाश थाय छे तेमज दिवसनि निद्राये करिने मनुष्यना उपवासनो नाश थई जाय छे ॥ ८० ॥ श्लोकः

सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनंदनः । श्री
विठ्ठलेशःकृतवान्व्रतोत्सवनिर्णयम् ॥८१॥
अर्थः । अने सर्व वैष्णवना राजा एवा
जे श्रीवल्लभाचार्य तेना पुत्र जे श्रीविठ्ठल-
नाथजि तेजे ते जे व्रतने उछवना निर्णयने
करता हवा ॥ ८१ ॥ श्लोकः ॥ कार्यास्त
मनुसृत्यैव सर्वव्रतोत्सवाः ॥ सेवारीति
श्रकृष्णस्यग्राह्यातदुक्तैवहि ॥ ८२ ॥ अर्थः
। अने ते विठ्ठलनाथजिये कर्यो जे नि-
र्णय तेनेज अनुसरिने सर्व व्रतने उछव
करवा अने ते विठ्ठलनाथजिये कहि जे
श्री कृष्णनि सेवा रीति तेनुंज ग्रहण क-
रवुं ॥ ८२ ॥ श्लोकः । कर्तव्याद्वारिका-
मुख्यतीर्थयात्रायथाविधि ॥ सर्वैरपिय-
थाशक्तिभाव्यंदीनेषुवत्सलैः ॥ ८३ ॥ अने

सर्वे जे अमारा आश्रित तेमणे द्वारिका आदिक जे तीर्थ तेमनि जात्रा जेते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे जथा विधिये करिने करवि अने वलि पोताना सामर्थ्य प्रमाणे दीनजनने िप दप वान थावुं ॥ ८३ ॥ श्लोकः । विष्णुः शिवोगणपतिः पार्वतीचदिवाकरः । एताः पूज्यतयामान्यादेवताः पंचमामकैः ॥ ८४ ॥ अर्थः । अने अमारा जे आश्रित तेमणे विष्णु शिव गणपति पार्वती ने सूर्य ए पांच देव जेने पूज्यपणे करिने मानवा ॥ ८४ ॥ श्लोकः । भूत द्युपद्रवंक्व ितवर्मनारायणात्मकम् । जप्यंचहनुमन्मंत्रोजप्योनक्षुद्रदैवतः ॥ ८५ ॥ अर्थः ॥ अने जो क्यारेक भूत प्रेतादिकनो उपद्रव थाय तारे तो

नारायण कवचनो जप करवो अथवा हनुमानना मंत्रनो जप करवो पण ए विना बिजा कोई क्षुद्र देवनां स्तोत्र मंत्रनो जप न करवो ॥ ८५ ॥ श्लोकः ॥ रवेरिंदोश्चो परागेजायमानेऽपराः क्रियाः ॥ हित्वाऽऽ शुश्चिभिः सर्वैः कार्यः कृष्णमनोर्जपः ॥ ८६ ॥ अर्थः ॥ अने सूर्यनुं ने चंद्रमानुं ग्रहण थये सते अमारा जे सर्वे सत्संगि तेमणे बिजी सर्वे क्रियानो ततकाल त्याग करिने पवित्र थैने श्रीकृष्णभगवानना मंत्रनो जप करवो ॥ ८६ ॥ श्लोकः ॥ जातायामथतन्मुक्तौकृत्वास्नानंसचैलकम् ॥ देयंदानंगृहिजनैः शक्त्यान्यैस्त्वर्च्यईश्वरः ॥ ८७ ॥ अर्थः ॥ अने ते ग्रहण मुकाई रह्या पछे वस्त्रे सहित स्नान करिने जे अमारा

गृहस्थ सत्संगि होय तेमणे पोताना सामर्थ्य प्रमाणे दान करवुं ने जे त्यागी होय तेमणे भगवाननि पूजा करवि ॥ ८७ ॥ श्लोकः ॥ जन्माशौचंमृताशौचंस्वसंबंधानुसारतः ॥ पालनीयंयथाशास्त्रंचातुर्वर्ण्यजनैर्मम ॥ ८८ ॥ अर्थः । अने अमारा सत्संगि एवा जे चारे वर्णना मनुष्य तेमणे जन्मनुं सूतक तथा मरणनुं सूतक ते पोतपोताना संबंधने अनुसारे करिने यथाशास्त्र पाळवुं ॥ ८८ ॥ श्लोकः । भाव्यंशमदमक्षांतिसंतोषादिगुणान्वितैः ब्राह्मणैः शौर्यधैर्यादिगुणोपेतैश्चबाहुजैः ॥ ८९ ॥ अर्थः । अने जे ब्राह्मण वर्ण होय तेमणे शम दम क्षमा ने संतोष ए आदिक जे गुण तेमणे जुक्त थावुं अने जे त्रिय

वर्ण होय तेमणे शूरीवरपणुं ने धिरज ए आदिक जे गुण तेमणे युक्त थवुं ॥८९॥

श्लोकः । वैश्यैश्चकृषिवाणिज्यकुसीदमुख वृत्तिभिः ॥ भवितव्यंतथाशूद्रैर्द्विजसेवा-दिवृत्तिभिः ॥ ९० ॥ अर्थः । अने वैश्य वर्ण होय तेमणे कृशिकर्म तथा वणज वेपार तथा व्याजवटो ए आदिक जे वृत्तियुं तेमणे करिने वरतवुं अने जे शूद्र वर्ण होय तेमणे ब्राह्मणादिक त्रण्य वर्णनि सेवा करवि ए आदिक जे वृत्तियुं तेमणे करिने वरतवुं ॥ ९० ॥ श्लोकः ॥ संस्काराश्चान्हिकंश्राद्धं यथाकालंयथाधनम् ॥ स्वस्वगृह्यानुसारेण कर्त्तव्यंचद्विजन्मभिः ॥९१॥ अर्थः । अने जे द्विज होय तेमणे गर्भाधानादिक संस्कार तथा आन्हिक

तथा श्राद्ध ए अण्य जेते पोताना गृह्य सू-
त्रने अनुसारे करिने जेवां जेना अवसर
होय ने जेवि धन संपति होय ते प्रमाणे
करवां ॥ ९१ ॥ श्लोकः ॥ अज्ञानाज्ज्ञा-
नतो वापिगुरुवालघुपातकम् । कापिस्या-
त्तर्हितत्प्रायश्चित्तंकार्यंस्वशक्तितः ॥ ९२ ॥
अर्थः ॥ अने क्यारेक जांणे अथवा अ-
जांणे जो नानु मोटुं पाप थइ जाय तो
पोतानि शक्ति प्रमाणे ते पापनु प्रायश्चित्त
करवुं ॥ ९२ ॥ श्लोकः ॥ वेदाश्चव्या-
ससूत्राणिश्रीमद्भागवताभिधम् ॥ पुराणं
भारतेतुश्रीविष्णोर्नामसहस्त्रकम् ॥ ९३ ॥
अर्थः । अने च्यार वेद तथा व्यास सूत्र
तथा श्रीमद्भागवत नामे पुराण तथा महा
भारतने विषे तो श्री विष्णु सहस्रनाम

॥ ९३ ॥ श्लोकः ॥ तथा श्री भगवद्गी-
तानीविश्वविदुरोदिता ॥ श्री वासुदेव
माहात्म्यंस्कांदवैष्णवखंडगम्॥९४॥ अर्थ :॥
तथा श्रीभगवद्गीता तथा विदुरजीनि
कहेलि जे नीति तथा स्कंदपुराणनो जे
विष्णुखंड तेने विषे रह्युं एवुं जे श्रीवासु-
देव महात्म्य ॥९४॥ श्लोकः ॥ धर्मशास्त्रां-
तर्गताचयाज्ञवल्क्यऋषेः स्मृतिः ॥ एता-
न्यऽष्टममेष्टानि सच्छास्त्राणिभवंतिहि ॥
९५ ॥ अर्थः । अने धर्म शास्त्रना मध्यमां
रहि एवि जे याज्ञवल्क्यऋषिनि स्मृति
ए जे आठसत शास्त्र ते अमने इष्ट छे ॥
९५ ॥ श्लोकः । स्वहितेच्छुभिरेतानि
मच्छिष्यैःसकलैरपि ॥ श्रोतव्यान्यथपा-
ठ्यानि कथनीयानिचद्विजैः॥९६॥ अर्थः ।

अने पोताना हितने इछता एवा जे अमा रा सर्वे शिष्य तेमणे ए आटसत शास्त्र जेते सांभलवां अने अमारा आश्रित जे द्विज तेमणे ए सतशास्त्र जेते भणवां तथा भणाववां तथा एमनी कथा करवि ॥९६॥ श्लोकः । तत्राचारव्यवहृतिनिष्कृतानां-चनिर्णये ॥ ग्राह्यामिताक्षरोपेता याज्ञव-ल्क्यस्यतुस्मृतिः ॥९७॥ अर्थः । अने ते आठसत शास्त्रमांथि आचार व्यवहारने प्रायश्चित्त ए त्रणनो जे निर्णय करवो तेने विषे तो मिताक्षरा टीकाये जुक्त एविजे याज्ञवल्क्यऋषिनि स्मृति तेनुं ग्रहण कर-वुं । ९७ । श्लोकः । श्रीमद्भागवतस्यैषु स्कंधोदशमपंचमो । सर्वाधिकतयाज्ञेयौकृ-ष्णमाहात्म्यबुद्धये ।९८। अर्थः। अने वली

ए आठसत शास्त्र ने विषे जे श्रीमद्भाग-
वत पुराण तेना दशम ने पंचम नामे जे बे
स्कंध ते जे ते श्रीकृष्णभगवानना माहात्म्य
जांणवाने अर्थे सर्वथी अधिकपणे जांणवा
। १८ । श्लोकः॥ दशमः पंचमः स्कंधोयाज्ञ-
वल्क्यस्यचस्मृतिः भक्तिशास्त्रंयोगशास्त्रं-
धर्मशास्त्रंक्रमेणमे ॥ १९ ॥ अर्थः । अने
दशमस्कंध तथा पंचमस्कंध तथा याज्ञव-
ल्क्य स्मृति ए जे त्रण्यते अनुक्रमे करिने
अमारुं भक्तिशास्त्र योगशास्त्र ने धर्मशास्त्र
छे कता दशमस्कंध ते भक्तिशास्त्र छे ने
पंचमस्कंध ते योगशास्त्रछे ने याज्ञवल्क्य
स्मृति ते धर्मशास्त्रछे एम जाणवुं ॥ १९ ॥
श्लोकः । शारीरकाणांभगवद्गीतायाश्चा
वगम्यताम् ॥ रामानुजाचार्यकृतंभाष्यमा-

ध्यात्मिकंमम ॥ १०० ॥ अर्थः । अने श्रीरामानुजाचार्यें कर्युं एवुं जे व्यास सूत्रनुं श्रीभाष्य तथा श्रीभगवद्गीतानुं भाष्य एजे बे ते अमारुं अध्यात्म शास्त्र छे एम जांणवुं ॥ १०० ॥ श्लोकः । एतेपुयानिवाक्यानिश्रीकृष्णस्यवृषस्यच । अत्युत्कर्षपराणिस्युस्तथाभक्तिविरागयोः ॥ ॥ १०१ ॥ अर्थः ॥ अने ए सर्वे सतशास्त्रने विषे जे वचन जे ते श्रीकृष्णभगवाननुं स्वरूप तथा धर्म तथा भक्ति तथा वैराग्य ए चारना अति उत्कर्षपणाने कहेतां होय ॥१०१॥ श्लोकः ॥ मंतव्यानि प्रधानानितान्येवेतरवाक्यतः । धर्मेणसहिताकृष्णभक्तिः कार्येतितद्रहः ॥ १०२ ॥ अर्थः । ते वचन जेते बिजा वचन करतां

प्रधानपणे मानवां अने श्रीकृष्णभगवान-
नि भक्ति जे ते धर्मे सहितज करवि एवि
रिते ते सर्वे सतशास्त्रनुं रहस्य छे ॥१०२॥
श्लोकः ॥ धर्मोज्ञेयः सदाचारः श्रुतिस्मृ-
त्युपपादितः । माहात्म्यज्ञानयुग्भूरिस्नेहो-
भक्तिश्चमाधवे ॥१०३॥ अर्थः । अने श्रुति
ने स्मृति तेणे प्रतिपादन कर्यो एवो जे
सदाचार ते धर्म जांणवो अने श्रीकृष्ण
भगवानने विषे माहात्मज्ञाने सहित जे
घणो स्नेह ते भक्ति जांणवि ॥ १०३ ॥
श्लोकः। वैराग्यंज्ञेयमप्रीतिःश्रीकृष्णेतरवस्तुषु
॥ ज्ञानंचजीवमायेशरूपाणांसुष्ठुवेदनम् ॥
॥१०४॥ अर्थः ॥ अने श्री कृष्णभगवान
विना अन्य पदार्थमां प्रीति नहि ते वैरा-
ग्य जांणवो अने जीव मायाने ईश्वर ते-

मना स्वरूपने जे रुडी रिते जांणवुं तेने ज्ञान कहिये ॥१०४॥ श्लोकः। हृत्स्थोऽणुसूक्ष्मश्चिद्रूपोज्ञाताव्याप्याऽखिलांतनुम् ॥ ज्ञानशक्त्यास्थितोजीवोज्ञेयोऽछेद्यादिलक्षणः ॥ १०५ ॥ अर्थः। अने जे जिवछे ते हृदयनेविषे रह्योछे ने अणु सरखो सूक्ष्म छे ने चैतन्यरूप छे ने जांणनारो छे ने पोतानि ज्ञान शक्तियें करिने नखथि शिखापर जंत समग्र पोताना देह प्रत्ये व्यापिने रह्यो छे ने अछेद्य अभेद्य अजर अमर इत्यादिक छे लक्षण जेनां एवो जीव छे एम जांणवो ॥ १०५ ॥ श्लोकः। त्रिगुणात्मातमः कृष्णशक्तिर्देहतदीययोः ॥ जीवस्यचाहं ममताहेतुर्मायाऽवगम्यताम् ॥ १०६ ॥ अर्थः ॥ अने जे माया छे ते

त्रिगुणात्मक छे ने अंधकाररूप छे ने श्री कृष्णभगवाननि शक्ति छे ने आ जीवने देह तथा देहनां जे संबंधि तेमने विषे अहं ममत्वनि करावनारी छे एम मायाने जांणवी ॥ १०६ ॥ हृदयेजीववज्जीवेयों- तर्यामितयास्थितः ॥ ज्ञेयः स्वतंत्रईशोऽसौ सर्वकर्मफलप्रदः ॥ १०७ ॥ अर्थः ॥ अने जे ईश्वरछे ते जे ते जेम हृदयने विषे जिव रह्यो छे तेम ते जिवने विषे अंतर्यामिपणे करिने रह्या छे ने स्वतंत्रछे ने सर्व जीवने कर्मफळना आपनारा छे एम ईश्वरने जां णवा ॥ १०७॥ श्लोकः ॥ सश्रीकृष्णःपरं- ब्रह्मभगवान्पुरुषोत्तमः ॥ उपास्यइष्टदेवो नःसर्वाविर्भावकारणम् ॥१०८॥ अर्थः॥अने ते ईश्वर ते कियातो परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा

जे श्रीकृष्णभगवान ते ईश्वरछे अने ते श्री-
कृष्ण जे ते आपणा इष्टदेवछे ने उपासना
करवा जोग्यछे ने सर्वअवतारना कारणछे
॥१०७॥ श्लोकः ॥ सराधयायुतोज्ञेयोराधा
कृष्णइतिप्रभुः ॥ रुक्मिण्यारमयोपेतोल-
क्ष्मीनारायणः सहि ॥१०९॥ अर्थः । अने
समर्थ एवा जे श्रीकृष्ण ते जे ते राधाजिये
जुक्त होय तारे राधाकृष्ण एवे नामे
जांणवा अने रुक्मणीरूप जे लक्ष्मी तेणे
जुक्त होय तारे लक्ष्मीनारायण एवे नामे
जांणवा ॥ १०९ ॥ श्लोकः ॥ ज्ञेयोऽर्जुने-
नयुक्तोऽसौनरनारायणाभिधः ॥ बलभद्रा-
दियोगेनतत्तन्नाम्नोच्यतेसच ॥ ११० ॥
अर्थः ॥ अने ए श्रीकृष्ण जे ते अर्जुने
जुक्त होय तारे नरनारायण एवे नामे

जांणवा अने वलि ते श्रीकृष्ण जेवे बल-
भद्रादिकने जोगे करिने ते ते नामे केहे-
वाय छे एम जांणवुं ॥ ११० ॥ श्लोकः ।
एतेराधादयो भक्तास्तस्यस्युः पार्श्वतः क-
चित् ॥ कचित्तदंगेतिस्नेहात्सतुज्ञेयस्तदैक-
कः ॥ १११ ॥ अर्थः ॥ अने ए जे राधा-
दिक भक्त ते जे ते क्यारेक तो श्रीकृष्ण-
भगवानने पडखे होयछे अने क्यारेक तो
अति स्नेहे करिने श्रीकृष्णभगवानना
अंगने विषे रहेछे. तारे तो ते श्रीकृष्णभ-
गवान एकलाज होय एम जांणवा ॥ १११ ॥
श्लोकः ॥ अतश्चास्यस्वरूपेणभेदोज्ञेयोन-
सर्वथा ॥ चतुरादिभु[illegible]-
चैच्छिकम् ॥ ११२ ॥ अर्थः ॥ ए हेतु
माटे ए श्रीकृष्णभगवानना जे स्वरूप

तेमने विषे सर्व प्रकारे करिने भेद न जा-
णवा अने चतुर्भुजपणुं अष्टभुजपणुं सह-
स्त्रभुजपणुं इत्यादिक जे भेद जणाय छे ते
तो द्विभुज एवा जे ते श्रीकृष्ण तेने इ-
च्छाए करिने छे एम जांणवुं ॥ ११२ ॥
श्लोकः ॥ तस्यैवसर्वथाभक्तिः कर्त्तव्या-
मनुजैर्भुविनिः श्रेयसकरंकिंचित्ततोऽन्यन्ने-
तिदृश्यताम् ॥ ११३ ॥ अर्थः ॥ अने एवा
जे ते श्रीकृष्णभगवान तेनि जे भक्ति ते
जे ते पृथ्वीने विषे सर्व मनुष्य तेमणे क-
रवि अने ते भक्ति थकि बिजुं एवुं क-
ल्याणकारि साधन कोइ नथि एम जांणवुं
॥ ११३ ॥ श्लोकः । गुणिनांगुणवत्ताया-
ज्ञेयंह्येतत्परंफलम् ॥ कृष्णेभक्तिश्चसत्संगो-
न्यथायांतिविदोप्यधः ॥ ११४ ॥ अर्थः ॥

अने विद्यादिक गुणवाला जे पुरुष ते-
मना गुणवानपणानुं एज परम फल जां-
णवुं कियुं तो जे श्रीकृष्णभगवानने विषे
भक्ति करवि ने सत्संग करवो ॥ अने ए
भक्तिने सत्संग ए बे विना तो विद्वान होय
ते पण अधोगतिने पांमेछे ॥११४॥ श्लोकः ॥
कृष्णस्तदवताराश्चध्येयास्तत्प्रतिमापिच ।
नतुजीवानृदेवाद्याभक्ताब्रह्मविदोपिच ॥
११५ ॥ अर्थः ॥ अने श्रीकृष्णभगवान
तथा श्रीकृष्णभगवानना जे अवतार ते
जे ते ध्यान करवा जोग्यछे तथा श्रीकृ-
ष्णभगवाननि जे प्रतिमा ते पण ध्यान
करवा जोग्यछे माटे एमनुं ध्यान करवुं
अने मनुष्यने देवादिक जे जिव ते तो-
श्रीकृष्णभगवानना भक्त होय ने ब्रह्मवेत्ता

होय तोपण ध्यान करवा जोग्य नथि माटे एमनुं ध्यान न करवुं ॥११५॥ श्लोकः ॥ निजात्मानंब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ॥ विभाव्यतेनकर्त्तव्याभक्तिः कृष्णस्यसर्वदा ॥ ११६ ॥ अर्थः ॥ अने स्थूल सूक्ष्म ने कारण ए जे त्रण्य देह ते थकि विलक्षण एवो जे पोतानो जीवात्मा तेने ब्रह्म रूपनि भावना करिने पछे ते ब्रह्मरूप करिने श्री कृष्णभगवाननि भक्ति जे ते सर्व कालने विषे करवि ॥११६॥ श्लोकः। श्रव्यः श्रीमद्भागवतदशमस्कंध,मादरात् ॥ प्रत्यहंवासकृद्वर्षेवर्षेवाच्योऽथपंडितैः ११७ अर्थः ॥ अने श्रीमद्भागवतपुराणनो जे दशमस्कंध ते जे ते नित्य प्रत्ये आदर थकि सांभळवो अथवा वरसो वरस एकवार

सांभलवो । अने जे पंडित होय तेमणे नित्य प्रत्ये वांचवो अथवा वरसो वरस एकवार वांचवो ॥ ११७ ॥ श्लोकः । कारणीयापुरश्चर्यापुण्यस्थानेऽ स्यशक्तितः । विष्णुनामसहस्रादेश्चापिकार्येप्सित प्रदा । ११८ । अर्थः । अने ए जे दशमस्कंध तेनुं पुरश्चरण जे ते पुण्यस्थानकने विषे पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवुं कराववुं अने वलि विष्णु सहस्र नाम आदिक जे सतशास्त्र तेनुं पुरश्चरण पण पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवुं कराववुं ते पुरश्चरण केवुंछे तो पोताना मनवांछित फळने आपे एवुं छे ॥ ११८ ॥ श्लोकः । दैव्यापापदिकष्टायांमानुष्यांवागदादिषु । यथा स्वपररक्षास्यात्तथावृत्यंनचान्यथा ॥११९॥

अर्थः ॥ अने कष्टनी देनारि एवि कोई देव संबंधि आपदा आवि पडे तथा मनुष्य संबंधि आपदा आवि पडे तथा रोगादिक आपदा आवि पडे तेने विषे जेम पोतानि ने बिजानिरक्षा थाय तेम वरतवुं पण बिजिरित्ये न वरतवुं ॥ ११९ ॥

श्लोकः । देशकालवयोवित्तजातिशक्त्यनुसारतः । आचारोव्यवहारश्चनिष्कृतंचावधार्यताम् । १२० । अर्थः । अने आचारव्यवहारने प्रायश्चित ए जे त्रणपवांनां ते जे ते देशकाल अवस्था द्रव्य जातिने सामर्थ्य एटलाने अनुसारे करिने जांणवां ॥ १२० ॥ श्लोकः । मवंविशिष्टाद्वैतंमेगोलोकोधामचेप्सितम् ॥ तत्रब्रह्मात्मनाकृष्ण सेवामुक्तिश्चगम्यताम् ॥ १२१ ॥ अर्थः ॥

अने अमारुं जे मत ते विशिष्टा द्वैतछे एम जांणवुं अने अमने प्रिय एवुं जे धाम ते गोलोकछे एम जांणवुं अने ते धामने विषे ब्रह्मरूप करिने जे श्री कृष्णभगवाननि सेवा करवि ते अमे मुक्तिमांनि छे एम जांणवं ॥ १२१ ॥ श्लोकः ॥ एतेसाधारणाधर्माः पुंसांस्त्रीणांचसर्वतः । मदाश्रितानांकथिताविशेषनथकीर्त्तये ॥ १२२ ॥ अर्थः । अने आ जे पूर्वे सर्वे धर्म कह्या ते जे ते अमारा आश्रित जे त्यागि गृहस्थ बाई भाई सर्वे सत्संगि तेमना सामान्य धर्म कह्या छे केतां सर्वे सत्संगि मात्रने सरखा पालवाना छे अने हवे ए सर्वना जे विशेष धर्म छे तेमने पृथक् पृथक्पणे करिने कहियें छैयें ॥ १२२ ॥ श्लोकः ।

मज्ज्येष्ठावरजभ्रातृ सुताभ्यांतुकदाचन ।
स्वासन्नसंबंधहीनानोपदेश्याहियोषितः ।
॥ १२३ ॥ अर्थः । हवे प्रथम धर्मवंशि जे आचार्य ने तेमनि पत्नियुं तेमना जे विशेष धर्म ते कहिये छईये ॥ अमारा मोटा भाई ने नानाभाइ तेना पुत्र जे अयोध्याप्रसादने रघुवीर तेमणे पोताना समीप संबंध विनानि जे बिजि स्त्रियुं तेमने मंत्र उपदेश क्यारेय न करवो ॥ १२३ ॥ श्लोकः ।
नस्प्रष्टव्याश्चताः क्वापिभाषणीयाश्चतानहि ॥ क्रौर्यंकार्येनकस्मिंश्चिन्न्यासोरक्ष्यानेकस्यचित् ॥१२४॥ अर्थः । अने ते स्त्रियुंने क्यारये पण अडवुं नहि ने ते साथे बोलवुं नहि अने कोई जीवने विषे क्रूरपणुं न करवुं ने कोईनि थापण न राखवी ॥

१२४ ॥ श्लोकः । प्रतिभूत्वंनकस्यापिका-
र्यंचव्यावहारिके ॥ भिक्षयापदतिक्रम्यानतु
कार्यमृणंकचित् ॥ १२५ ॥ अर्थः । अने
व्यवहार कारज ने विषे केनुं पण जमान-
गरुं न करवुं अने कोई आपतकाळ आवि
पडे तो भिक्षा मागिने पोतानो निरवाह
करिने ते आपतकाळ ने ओलंघवो पण
कोईनुं करज तो क्यारेय न करवुं॥१२५॥
श्लोकः ॥ स्वशिष्यार्पितधान्यस्यकर्त्तव्यो
विक्रयोनच ॥ जीर्णंदत्वानवीनंतुग्राह्यंतन्नै
षविक्रयः ॥ १२० ॥ अर्थः । अने पोता-
ना जे शिष्य तेमणे धर्म निमित्त पोताने
आप्युं जे अन्न ते वेचवुं नहि ने ते अन्न
जुनुं थाय तो ते जुनुं कोईकने देईने नवुं
लेवुं ने एवि रिते जे जुनानुं नवुं करिये ते

वेच्युं न केवाय ॥ १२६ ॥ श्लोकः । भा-
द्रशुक्लचतुर्थ्यांचकार्यंविघ्नेशपूजनम्इषकृष्ण
चतुर्दश्यांकार्योऽर्चांचहनुमतः ॥ १२७ ॥
अर्थः ॥ अने भादरवा शुदि चतुर्थीने दि-
वसे गणपतीनी पूजा करवि तथा आसो
वंदी चतुर्दशिने दिवसे हनुमाननि पूजा क-
रवी ॥ १२७ ॥ श्लोकः ॥ मदाश्रितानांस-
र्वेषांधर्मरक्षणहेतवे ॥ गुरुत्वेस्थापिताभ्यां-
चताभ्यांदीक्ष्यामुमुक्षवः ॥ १२८ ॥ अर्थः
अने अमारे आश्रित जे सर्वे सत्संगि तेम-
ना धर्मनि रक्षा करवाने अर्थे ए सर्वेना
गुरूपणाने विषे अमे स्थापन कर्या एवा
जे ते अयोध्याप्रसाद ने रघुवीर तेमणे
मुमुक्षुजनने दीक्षा आपवि ॥१२८॥ श्लोकः
॥ यथाधिकारंसंस्थाप्याःस्वेस्वेधर्मेनिजा-

श्रिताः ॥ मान्याः संतश्चकर्त्तव्यःसच्छास्त्रा-
भ्यासआदरात् ॥ १२९ ॥ अर्थः॥अने पो-
ताना आश्रित जे सर्वे सत्संगि तेमने अ-
धिकार प्रमाणे पोते पोताना धर्मने विषे
राखवा अने साधुने आदरथकि मानवा
तथा सतशास्त्रनो अभ्यास आदरथकि क-
रवो ॥ १२९ ॥ श्लोकः ॥ मयाप्रतिष्ठापि-
तानांमंदिरेषुमहत्सुच ॥ लक्ष्मीनारायणा-
दीनांसेवाकार्यायथाविधि ॥ १३० ॥ अर्थः
अने मोटां जेमंदिर तेमने विषे अमे स्था-
पन कर्यां एवां जे श्री लक्ष्मीनारायण
आदिक श्रीकृष्णनां स्वरुप तेमनि जे से-
वा ते यथाविधिये करिने करवि । १३० ।
श्लोकः ॥ भगवन्मंदिरंप्राप्तोयोऽन्नार्थीको
पिमानवः ॥ आदरात्सतुसंभाव्योदानेना

त्र्स्यपशक्तितः ॥ १३१ ॥ अर्थः ॥ अने भगवानना मंदिरमत्ये आव्यो जे हरकोई अन्नार्थि मनुष्य तेनि पोताना सामर्थ्य प्रमाखे अन्नने दाने करिने आदरथकि सं भावना करवि ॥ १३१ ॥ श्लोकः । संस्था प्यविप्रंविद्वांसं पाठशालांविधाप्यच ॥ प्रव- र्त्तनीयासद्विद्याभुविपत्सुकृतंमहत् ॥१३२॥ अर्थः । अने विद्यार्थि भणाव्यानि शाला कराविने पछे तेमां एक विद्वान ब्राह्मणने राखीने पृथविने विषे सद्विद्यानि प्रवृत्ति करावविं केमजे विद्यादाने करिने मोटुं पु- ण्य थाय छे ॥ १३२ ॥ श्लोकः ॥ अथै तयोस्तु भार्याभ्यामाज्ञया पत्युरात्मनः ॥ कृष्णमंत्रोपदेशश्चकर्त्तव्यःस्त्रीभ्यएवहि १३३ अर्थः ॥ अने हवे ए अयोध्याप्रसाद ने

रघुविर ए बेनि जे पत्नीयुं तेमणे पोतपो-
ताना पतिनि आज्ञाये करिनेस्त्रियुंनेजश्री
कृष्णना मंत्रनो उपदेश करवो पण पुरुषने
न करवो ॥१२३॥ श्लोकः ॥ स्वासन्नसं-
बंधहीनानरास्ताभ्यांतु कर्हिचित् ॥ नस्प्र-
ष्टव्यानभाष्याश्चतेभ्योदर्श्यंमुखंनच ॥१२४॥
अर्थः।अने वलि ते बे जणनि जे पत्नीयुं
तेमणे पोताना समीप संबंधविनाना जे
पुरुष तेमनो स्पर्श क्यारेय न करवो ने ते-
मनि साथे बोलवुं पण नहि ने तेमने पो-
तानुं मुख पण न देखाडवुं एविरित्ये धर्म-
वंशि आचार्यने तेमनि पत्नीयुं तेमना जे
विशेष धर्म ते कह्या ॥ १२४ ॥ श्लोकः ॥
गृहाख्यश्रमिणोपेस्युः पुज्यसदुपाश्रिताः ॥
स्वासन्नसंबंधहीनानस्पृश्या विधवाश्चतेः

॥१३५॥ अर्थः ॥ हवे गृहस्थाश्रमिना जे विशेष धर्म छे ते कहिये छिये अमारे आश्रित जे गृहस्थाश्रमि पुरुष तेमणे पोताना समिप संबंध विनानि जे विधवा स्त्रियुं तेमनो स्पर्श न करवो ॥ १३५ ॥ श्लोकः ॥ मात्रास्वस्राद्दुहित्रावाविक्ते तुवयः स्थया ॥ अनापदिनतैः स्थेयंकार्यं-दानंनयोषितः ॥१३६॥ अर्थः । अने वे गृहस्थाश्रमि पुरुष तेमणे जवान अवस्थाये जुक्त एवि जे पोतानि मा बोनने दिकरि ते संघाथे पण आपतकाळ विना एकांत स्थलने विषे न रहेवुं अने पोतानि स्त्रीनुं दांन कोइने न करवुं १३६ प्रसंगो व्यवहारे-णयस्याः केनापिभूपतेः । भवेत्तस्याः स्त्रियाः कार्यःप्रसंगोनैवसर्वथा ॥१३७॥ अर्थः ।अने

जे स्त्रीने कोइ प्रकारना व्यवहार करिने राजानो प्रसंग होय तेवी स्त्रीनो जे प्रसंग ते कोई प्रकारे पण नज करवो ॥ १३७ ॥ श्लोकः ॥ अन्नाद्यैः शक्तितोभ्यर्च्योह्यतिथिस्तैर्गृहागतः दैवंपित्र्यंयथाशक्तिकर्त्तव्यंचयथोचितम् ॥ १३८ ॥ अर्थः। अने ते गृहस्थाश्रमि तेमणे पोताने घेर आव्यो एवो जे अतिथि तेने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्नादि के करिने पूजवो अने वलि होमादिक जे देव कर्म ने श्राद्धादिक जे पितर कर्म ते जे ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे जथा विधि जेम घटे तेम करवुं ॥ १३८ ॥ श्लोकः ॥ यावज्जीवंचशुश्रूषाकार्यामातुः पितुर्गुरोः। रोगार्त्तस्यमनुष्यस्ययथाशक्ति चमामकैः ॥

१३९ ॥ अर्थः । अने अमारा आश्रित जे गृहस्थ तेमणे माता पिताने गुरू तथा रोगातुर एवो जे कांई मनुष्य तेमनि जे सेवा ते जिवतपरंजत पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवी ॥ १३९ ॥ श्लोकः ॥ यथाशक्त्युद्यमः कार्योनिजवर्णाश्रमोचितः ॥ मुष्कछेदोनकर्त्तव्योवृषस्यकृषिवृत्तिभिः ॥ १४० ॥ अर्थः ॥ अने वलि पोताना वर्णाश्रमने घटित एवो जे उद्यम ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवो अने कृषिवृत्तिवाळा जे गृहस्थ सत्संगि तेमणे बळधियाना वृषणनो उछेद न करवो ।१४०। श्लोकः। यथाशक्तियथाकालंसंग्रहोऽन्नधनस्यतैः ॥ यावद्व्ययंचकर्तव्यः पशुमद्भिस्तृणस्यच ॥ १४१ ॥ अर्थः । अने ते गृहस्थसत्संगि

तेमणे पोवाना सामर्थ्यं प्रमाणे समयने अनुसरिने जेटलो पोताना घरमां वरो होय तेटला अन्न द्रव्यनो संग्रह जेते करवो अने जेना घरमां पशु होय एवा जे गृहस्थ तेमणे पोताना सामर्थ्यं प्रमाणे चारच पुलानो संग्रह करवो ॥ १४१ ॥ श्लोकः ॥ गवादीनांपशूनांच तृणतोयादिभिर्यदि ॥ संभावनंभवेत्स्वेनरक्ष्यास्तेतर्हिनान्यथा ॥ १२२ ॥ अर्थः ॥ अने गाय बलद भेश घोडा आदिक जे पशु तेमनि तृण जलादिके करिने पोतावते जो सभावना थाय तो ते पशुने रास्ववां ने जो संभावना न थाय तो न रास्ववां ॥ १४२ ॥ श्लोकः ॥ ससाक्ष्यमंतरालेख्यं पुत्रमित्रादिनापिच ॥ भूवित्तदानादानाभ्यांव्यवहार्यंनकर्हिचित् ॥

१४३ ॥ अर्थः । अने साक्षिये सहित लखत कर्‍या विना तो पोताना पुत्रने मित्रादिक साथे पण पृथवि ने धनना लेण देण करिने व्यवहार जे ते क्यारेय न करवो ॥ १४३ ॥ श्लोकः । कार्येवैवाहिके स्वस्याऽन्यस्यवार्प्यधनस्यतु । भाषाबंधोनकर्त्तव्यःससाक्ष्यंलेखमंतरा ॥ १४४ ॥ अर्थः ॥ अने पोतानुं अथवा बिजानुं जे विवाह संबंधि कारज तेने विषे आपवा योग्य जे धन तेनुं साक्षिये सहित लखत कर्‍या विना केवल बोलिज न करवि ॥ १४४ ॥ श्लोकः ॥ आयद्रव्यानुसारेण व्ययःकार्योहिसर्वदा ॥ अन्यथातुमहद्दुःखं भवेदित्यवधार्यताम्॥१४६॥ अर्थः॥अने पोतानि उपजनुं जे द्रव्य तेने अनुसार नि-

रंतर खरच करवो पण ते उपरांत न क-
रवो ॥ अने जे उपज करतां वधारे खरच
करे छे तेने मोटुं दुःख थाय छे एम सर्वे
गृहस्थने मनमां जाणवुं ॥१४५॥ श्लोकः ॥
द्रव्यस्यायोभवेद्यावान् व्ययोवाव्यावहारि-
कं ॥ तौसंस्मृत्यस्वपंलेख्यौ स्वक्षरैःप्रति-
वासरम् ॥१४६॥ अर्थः ॥ अने पोताना
व्यवहार कारजने विषे जेटला धननि उ-
पज होय तथा जेटलो खरच होय ते बे-
यने संभारिने नित्य प्रत्ये रुडा अक्षर क-
रिने पोताने तेनुं नांमु लखवुं ॥ १४६ ॥
श्लोकः ॥ निजवृत्त्युद्यमप्राप्तधनधान्यादि-
तश्चतैः ॥ अर्प्योदशांशः कृष्णायविंशोंश-
स्त्विहदुर्बलैः ॥१४७॥ अर्थः ॥ अने ते गृ-
हस्थाश्रमि सत्संगि तेमणे पोतानि जे वृ-

तिने उद्यम तेथकि पाम्युं जे धनधान्या-
दिक तेथकि दशमो भाग काढिने श्रीकृ-
ष्णभगवानने अर्पण करवो अने जे व्य-
वहारे दुर्बल होय तेमणे विशमो भाग अ-
र्पण करवो ॥१४७॥ श्लोक ॥ एकादशी
मुख्यानांचव्रतानांनिजशक्तितः ॥ उद्यापनं
यथाशास्त्रंकर्तव्यंचतितार्थदम् ॥ १४८ ॥
अर्थः ॥ अने एकादशि आदिक जे व्रत
तेमनुं जे उद्यापन ते जे ते पोताना साम-
र्थ्य प्रमाणे जथा शास्त्र करवुं ते उद्यापन
केवुं छे तो मनवांछित फलनुं आपनारुछे
॥१४८॥ श्लोक : ॥ कर्तव्यंकारणीयंवा-
श्रावणेमासिसर्वथा ॥ बिल्वपत्रादिभिः प्री-
त्याश्रीमहादेवपूजनम् ॥ १४९ ॥ अर्थः ॥
अने श्रावण मासने विषे श्रीमहादेवनुं पु-

जन जे ते बिल्वपत्रादिके करिने प्रिति
पुर्वक सर्व प्रकारे पोते करवुं अथवा बि-
जा पासे करावबुं ॥ १८९ ॥ श्लोकः स्वा-
चार्याच्छ्रीकृष्णंमाद्यंश्रीरुणस्यचमंदिरात् ॥
ताभ्यां स्वव्यवहारार्थेपात्र भूषांशुकादिच
॥ १९० ॥ अर्थः ॥ अने पोताना जे आ
चार्य ते थकि तथा श्रीकृष्ण भगवानन
जे मंदिर तेथकि करज न काढवुं ॥ अने
वलि ते पोताना आचार्य थकि ने श्रीकृ-
ष्णना मंदिर थकि पोताना व्यवहारने
अर्थे पात्र घरेणां ने वस्त्रादिक जे वस्तु ते
मागि लाववां नहि ॥ १९० ॥ श्लोकः ॥
श्रीकृष्णगुरुसाधूनांदर्शनार्थंगतोपथि ॥ त-
त्स्थानेषुचन ग्राह्यंपरान्ननिजपुण्यहृत् १९१
अर्थः ॥ अने श्रीकृष्ण भगवान तथा पो-

वाना गुरु तथा साधु एमनां दरशन कर-
वाने अर्थे जाते सते मार्गने विषे पारकुं
अन्न खावुं नहि तथा श्रीकृष्ण भगवान
तथा पोताना गुरु तथा साधु तेमनां जे
स्थानक तेमने विषे पण पारकुं अन्नखावुं
नहि केमजे ते पारकुं अन्नतो पोताना पु-
ण्यने हरिले एवुं छे माटे पोतानि गांठनुं
खरच खावुं ॥१५१॥ श्लोकः ॥ प्रतिज्ञा-
तंधनंदेयंपरस्यात्तत्कर्मकारिणे ॥ न गो-
प्यमृणशुध्यादिव्यवहार्यंनदुर्जनैः ॥१५२॥
अर्थः ॥ अने पोताना काम काज करवा
तेड्यां जे मनुष्य तेमने जेटलुं धन अथवा
धान्य दिधानुं कह्युं होय ते प्रमाणेज आ-
पवुं पण तेमांथि ओछुं न आपवुं ॥ अने
पोता पासे कोई करज मागतो होय के

ते करज देई चुक्या होइये ते वातने छानि न राखवि तथा पोतानो वंश तथा कन्यादान ते पण छानुं न राखवुं अने दुष्ट श्वा जे जन तेमनि साथे व्यवहार न करवो ॥१५२॥ श्लोकः ॥ दुष्कालस्यरिपूणांवानृपस्योपद्रवेणवा ॥ लंज्जाधनप्राणनाशः प्राप्तः स्याद्यत्रसर्वथा ॥ १५३ ॥ अर्थः ॥ अने जे ठेकांणे पोते रेहेता होईये ते ठेकांणे कोईक कठण भुंडो काळ अथवा शत्रु अथवा राजा तेमना उपद्रवे करिन सव प्रकारे पोतानि लाज जाति होय के धननो नाश थातो होय के पोताना प्राणनो नाश थातो होय ।१५३। श्लोकः ॥ मूलदेशोपितस्त्वंषां सद्यएवविचक्षणैः । त्याज्योगदाश्रितैः स्थेयंण-

त्वादेशांतरंसुखम् ॥ १५४ ॥ अर्थः । अने ते जो पोताना मुळ गरासनुं तथा वतननुं गांम होय तोपण तेना विवेक एवा जे अमारा सत्संगि गृहस्थ तेमणे ततकाळ त्याग करि देवा ने ज्यां उपद्रव न होय तेवो जे बिजो देश ते प्रत्ये जईने सुखेथि रहेवुं ॥१५४॥ श्लोकः । आढ्यैस्तुगृहिभिः कार्याअहिंसावैष्णवामखाः तीर्थेषुपर्वसु तथाभोज्या विप्राश्चसाधवः ॥ १५५ ॥ अर्थः ॥ अने धनाढ्य एवा जे गृहस्थ सत्संगि तेमणे हिंसायेरहित एवा जे विष्णु संबंधिजज्ञ ते करवा तथा तीर्थने विषे तथा द्वादशि आदिक पर्वने विषे ब्राह्मण तथा साधु तेमने जमाडवा ॥ १५५ ॥ श्लोकः । महोत्सवाभगवतःक-

तेष्वामंदिरेषुतैः । देयानिपात्रविप्रेभ्यो-
दानानिविविधानिच ॥ १५५ ॥ अर्थः ।
ते धनाढ्य एवा जे गृहस्थ सत्संगि तेमणे
भगवानना मंदिरने विषे मोटा उछव क-
रवा तथा सुपात्र एवा जे ब्राह्मण तेमने
नाना प्रकारनां दांन देवां ॥ १५६ ॥
श्लोकः ॥ मदाश्रितैर्नृपैर्धर्मशास्त्रमाश्रित्य
चाऽखिलाः । प्रजाः स्वाः पुत्रवत्पाल्या-
धर्मः स्थाप्योधरातले ॥ १५७ ॥ अर्थः ।
अने अमारे आश्रित एवा जे सत्संगि
राजा तेमणे धर्मशास्त्रने आशरिने पोताना
पुत्रनि पेठे पोतानि प्रजानुं पालन करवुं ॥
अने पृथ्विने विषे धर्मनु स्थापन करवुं ॥
॥ १५७ ॥ श्लोकः । राज्यांगोपायषड्वर्गा-
ज्ञेयास्तीर्थानिचांजसा । व्यवहारविदः

सभ्यादंडच्यादंडच्याश्वलक्षणैः ॥ १५८ ॥
अर्थः । अने ते राजा तेमणे राज्यनां जे
सात अंग तथा च्यार उपाय तथा छो
गुण ते जे ते लक्षणे करिने जथार्थपणे
जाणवां अने तीर्थ जे चार मांकल्यानां
स्थानक तथा व्यवहारना जांणनारा जे
सभासद तथा दंडवा जोग्य जे माणस
तथा दंडवा जोग्य नहि एवां जे माणस
ए सर्वेने लक्षणे करिने जथार्थपणे जां-
णवां ॥ १५८ ॥ श्लोकः । सभर्तृकाभि
र्नारीभिः सेव्यः स्वपतिरीशवत् । अंधो-
रोगीदरिद्रोवाषंढोवाच्यंनदुर्वचः ॥ १५९ ॥
अर्थः । हवे सुवासनि बाईयुंना विशेष धर्म
कहिये छइये अमारे आश्रित जे सुवासनि
बाईयुं तेमणे पोतानो पति अंध होय

रोगि होय दरिद्रि होय नपुंसक होय तो पण तेने इश्वरनि पेठे सेववो ने ते पति प्रत्ये कटुक वचन न बोलवुं ॥ १५९ ॥ श्लोकः । रूपयौवनयुक्तस्यगुणिनोन्यनरस्यतु । प्रसंगोनैवकर्त्तव्यस्ताभिः साहजिकोपिच ॥ १६० ॥ अर्थः । अने ते सुवासनि स्त्रियुं तेमणे रुपने जोबन तेणे जुक्तने गुणवान एवो जे अन्य पुरुष तेनो प्रसंग सहज स्वभावे पण नज करवो ॥ ॥ १६० ॥ श्लोकः ॥ नरेक्षपानाभ्यूरुकुचानुत्तरीयाचनोभवेत् । साध्वीस्त्रीनिचभंडेक्षानानिर्लज्जादिसंगिनी ॥ १६१ ॥ अर्थः । अने पतिव्रता एवि जे सुवासनि स्त्रियुं तेमणे पोतानि नाभि साथल ने छाति तेने बिजो पुरुष देखे एम न वरतवुं अने

ओढ्याना वस्त्र विना उघाडे शरिरे न रेहेवुं ने भांडभवाइ जोवा न जावुं अने निर्लज एवि जे स्त्रियुं तथा स्वैरीणीकामिनिने पुंश्चली एवि जे स्त्रियुं तेमनो संग न करवो ॥ १६१ ॥ श्लोकः । भूषासदंशुकधृतिः परगेहोपवेशनम् ॥ त्याज्यंहास्यादिचस्त्रीभिः पत्यौदेशांतरंगते ॥ १६२ ॥ अर्थः । अने ते सुवासनि स्त्रियुं तेमणे पोतानो पति परदेश गये सते आभूषण न धारवां ने रुडां वस्त्र न पेरवां ने पारके घेर बेसवा न जावुं ने हास्यविनोदादिकनो त्याग करवो ॥ १६२ ॥ श्लोकः ॥ विधवाभिस्तुयोषाभिः सेव्यः पतिधियाहरिः ॥ आज्ञायांपितृपुत्रादेर्वृत्यंस्वातंत्र्यतानतु ॥ १६३ ॥ अर्थः । हवे

विधवा स्त्रियुंनो विशेष धर्म कहिये छइये अमारे आश्रित जे विधवा स्त्रियुं तेमणे तो पति बुद्धिये करिने श्रीकृष्ण भगवानने सेववा ने पोताना पिता पुत्रादिक जे संबंधि तेमनि आज्ञाने विषे वरतवुं पण स्वतंत्रपणे न वरतवु ॥ १६३ ॥ श्लोकः ॥ स्वासन्न संबंधहीनानराः स्पृश्यानकर्हिचित् ॥ तरुणैस्तैश्चतारुण्येभाष्यंनावश्यकंविना ॥ १६४ ॥ अर्थः ॥ अने ते विधवा स्त्रियुं तेमणे पोताना समीप संबंध विनाना जे पुरुष तेमनो स्पर्श क्यारेय न करवो अने पोतानि जोवन अवस्थाने विषे अवश्य काजे विना समीप संबंधि विनाना जे जुवान पुरुष तेमनि साथे क्यारेय पण बोलवुं नहि ॥ १६४ ॥ श्लोकः । स्तनं-

घथस्यनुः स्पर्शेनदोषोस्तिपशोरिव ॥ आ-
वश्यकेचवृद्धस्यस्पर्शेतेनचभाषणे । १६५ ।
अर्थः । अने धावणो जे बालक तेना स्प-
र्शने विषे तो जेम पशुने अडि जवाय ने
दोष नथि तेम दोष नथि अने कोई अव-
श्यनु कामकाज पडे तेने विषे कोईक वृद्ध
पुरुषने अडि जवाय तथा ते वृद्ध साथे
बोलाय तेने विषे दोष नथि ॥ १६५ ॥
श्लोकः ॥ विद्यानासन्नसंबंधात्ताभिःपाठ्या
नकापिनुः व्रतोपवासैः कर्तव्योमुहुर्देहद-
मस्तथा ॥ १६६ ॥ अर्थः ॥ अने ते वि-
धवा स्त्रियुं तेमणे पोताना समीप संबंध
विनाना जे पुरुष ते थकि कोई विद्या पण
न भणवि अने व्रत उपवासे करिने वारं-
वार पोताना देहनुं दमन करवुं ॥ १६६

श्लोकः । धनंचधर्मकार्येंपिस्वनिर्वाहोपयो-
गियत् ॥ देयंताभिर्नतत्कापिदेयंचेदधि-
कंतदा ॥ १६७ ॥ अर्थः । अने ते विधवा
स्त्रियुं तेमणे पोताना घरमां पोताना जी-
वत परजंत देह निर्वाह थाय एटलुंज जो
धन होय तो ते धन जे ते धर्म कारजने
विषे पण न आपवुं ने जो तेथि अधिक
होय तो आपवुं ॥ १६७ ॥ श्लोकः । का-
र्येश्चसकृदाहारस्ताभिःस्वापरतु भूतलेमैथु-
नासक्तपोर्वीक्षाक्पिकार्यानदेहिनोः १६८
अर्थः ॥ अने ते विधवा स्त्रियुं तेमणे एक-
वार आहार करवो ने पृथ्विने विषे सुवुं
ने मैथुनासक्त एवा जे पशु पक्षि आदिक
जीव प्राणिमात्र तेमने क्यारेय पण जां-
णिने जोवां नहि ॥ १६८ ॥ श्लोकः ॥

वेषोनधार्यस्ताभिश्चसुवासिन्याः स्त्रियास्तथा । न्यासिन्यावीतरागायाविकृतश्चनकर्हिचित् ॥१३९॥ अर्थः । अने ते विधवा स्त्रियुं तेमणे सुवासनि स्त्रिना जेवो वेष न धारवो तथा संन्यासणि तथा वेरागण तेना जेवो वेश न धारवो ॥ अने पोतानो देशकुळ ने आचार तेने विरुद्ध एवो जे वेश ते पण क्यारेय न धारवो ॥ १६९ ॥ श्लोकः । संगोनगर्भपातिन्याः स्पर्शःकार्यश्च योषितः ॥ शृंगारवार्त्तानतृणांकार्याः श्रव्यानचैकचित् ॥ १७० ॥ अर्थः ॥ अने गर्भनि पाडनारि जे स्त्रि तेनो संग न करवो ने तेनो स्पर्शरण न करवो अने पुरुषना रस शृंगार संबंधि जे वारता ते क्यारेय न करवि ने न सांभळवि॥१७०॥

श्लोक: ॥ निजसंबंधिभिरषिताह्रण्येतरुणै-
नरैः ॥ सार्कं रहसिन स्थेयंताभिरापदमंतरा
॥१७१॥ अर्थः । अने जुवान अवस्थाने
विषे रहि एवि जे विधवा स्त्रियुं तेमणे
जुवान अवस्था वाला जे पोताना संबंधि
पुरुष तेमनि संघाथे पण एकांत स्थलने
विषे आपतकाल पड्या विना न रहेवुं
॥ १७१ ॥ श्लोकः ॥ नहोलाखेलनंकार्यं
नभूषादेश्चधारणम् । नधातुसूत्रयुक्तसूक्ष्मव
स्त्रादेरपिकर्हिचित् ॥ १७२ ॥ अर्थः ॥अने
होलिनि रमत न करवि ने आभूषणादि-
कनुं धारण न करवुं ने सुवर्णादिक धा-
तुना तारे जुक्त एवां जे झिणां वस्त्र तेनुं
धारण पण क्यारेय न करवुं ॥ १७२ ॥
श्लोकः । सधवा विधवाभिश्चनस्नातव्यं-

निरंवरम् । स्वरजोदर्शनंस्त्रीभिर्गोपनीयंन-सर्वथा ॥ १७३ ॥ अर्थः । अने सुवासनि ने विधवा एवि जे स्त्रियुं तेमणे वस्त्र पेर्या विना नावुं नहि ने पोतानुं जे रजस्वला-पणुं ते कांई प्रकारे गुप्त न राखवुं ॥१७३॥ श्लोकः ॥ मनुष्यंचांशुकादीनिनारीका-पिरजस्वला ॥ दिनत्रयंस्पृशेन्नैवस्नात्वातु यैह्निप्रास्पृशेत् ॥ १७४ ॥ अर्थः ॥ अने वलि रजस्वला एवि जे सुवासनि ने वि-धवा स्त्रियुं ते त्रण दिवस सुधि कांई म-नुष्यने तथा वस्त्रादिकने अडे नहि अने चोथे दिवसे नाहिने अडवुं एवि रित्ये गृहस्थाश्रमि एवा जे पुरुष ने स्त्रियुं तेम-ना जे आ विशेष धर्म कह्या ते सर्वे धर्म वंशि आचार्यने तेमनि पत्नीयुं तेमने पण

पालवा केमजे ए गृहस्थ छे ॥ १७४ ॥

श्लोकः ॥ नैष्ठिकव्रतवंतोयेवार्णिनोमदुपाश्रयाः ॥ तैःस्पृश्यानस्त्रियोभाष्यानवीक्ष्याश्चताधिया ॥ १७५ ॥ अर्थः । हवे नैष्टिकब्रह्मचारीना जे विशेष धर्म ते कहियेछइये । अमारे आश्रित एवा जे नैष्टिक ब्रह्मचारि तेमणे स्त्रि मात्रनो स्पर्श न करवो ने स्त्रियुं संघाथे बोलवुं नहि ने जांणिने ते स्त्रियुं सन्मुख जोवुं नहि॥ १७५॥

श्लोकः ॥ तासांवार्त्तानकर्त्तव्यानश्रव्याश्चकदाचन । तत्पादचारस्थानेषुनचस्नानादिकाःक्रियाः ॥ १७६ ॥ अर्थः । अने ते स्त्रियुंनि वार्त्ता क्यारेय न करवि ने ने सांभलवि ॥ अने जे स्थानकने विषे स्त्रियुंनो पगफेर होय ते स्थानकने विषे

स्नानादिक क्रिया करवा न जावुं ॥१७६॥
श्लोकः । देवताप्रतिमांहित्वालेख्याका-
ष्टादिजापिवा ॥ नयोषित्प्रतिमास्पृश्या-
नवीक्ष्याबुद्धिपूर्वकम् ॥ १७७ ॥ अर्थः ॥
अने देवतानि प्रतिमा विना बिजि जे
स्त्रिनि प्रतिमा चित्रनि अथवा काष्टादि-
कनि होय तेनो स्पर्श न करवो ने जा-
णिने तो ते प्रतिमाने जोयि पण नहि ॥
॥ १७७॥ श्लोकः । नस्त्रीप्रतिकृतिःकार्या
नस्पृश्यंयोषितोंशुकम् ॥ नवीक्ष्यंमैथुन-
परंप्राणिमात्रंचतैर्धिया ॥ १७८ ॥ अर्थः ।
अने ते नैष्टिकब्रह्मचारि तेमणे स्त्रिनि प्र-
तिमा न करवी ने स्त्रिये पोताना शरीर उ
परथ धारेलुं जे वस्त्र तेने अडवुं नहि अने
मैथुनासक्त एवां जे पशुपक्ष्यादिक प्राणि

मात्र तेमने जांणिने जोवां नहि । १७८।
श्लोकः । नस्पृश्योनेक्षणीयश्चनारीवेषधरः
पुमान् ॥ नकार्यंस्त्रीः समुद्दिश्यभगवद्गुण-
कीर्त्तनम् ॥ १७९ ॥ अर्थः । अने स्त्रिना
वेशने धरि रह्यो एवो जे पुरुष तेने अडवुं
नहि ने तेनि सामुं जोवुं नहि ते ते साथे
बोलवुं नहि अने स्त्रिनो उद्देश करिने
भगवाननि कथा वार्ता कीर्तन पण न
करवां ॥ १७९ ॥ श्लोकः ॥ ब्रह्मचर्य-
व्रतत्यागपरंवाक्यंगुरोरपि ॥ तैर्नमान्यंस-
दाम्थेयंधारैस्तुष्टैरमानिभिः ॥ १८० ॥
अर्थः ॥ अने ते नैष्ठिकब्रह्मचारि तेमणे
पोताना ब्रह्मचर्य व्रतनो त्याग थाय एवुं
जे वचन वतो पोताना गुरुनुं पण न
मानवुं ने सदाकाळ धिरजवान रेहेवुं ने

संतोष जुक्त रेहेवुं ने माने रहित रेहेवुं ॥ ॥ १८० ॥ श्लोकः ॥ स्वातिनै वञ्चमायां तमिसभंवनितानुया ॥ निवारणीयासाभाष्यतिरस्कृत्यापिवाद्भुतम्॥१८१ ॥ ऋर्थः ॥ अने बलात्कारे करिने पोताने अतिशे समीपे आववि एवि जे स्त्रि तेने बोलिने अथवा तिरस्कार करिने पण तुरत वारवि पण समीपे आववा देवि नहि ॥ १८१ ॥ श्लोकः । प्राणापद्युपपन्नायांस्त्रीणांस्वेषांचवाक्कचित् ॥ तदास्पृष्ट्वापितद्रक्षाकार्यासंभाष्यताश्चवा ॥ १८२ ॥ अर्थः ॥ अने जो क्यारेक स्त्रीयुंनो ऋथवा पोतानो प्राण नाश थाय एवो आपत्काल आवि पडे तारे तो ते स्त्रियंने अडिने अथवा ते साथे बोलिने पण ते स्त्रियुंनि रक्षा करवि

॥ १८२ ॥ श्लोकः । तैलाभ्यंगोनकर्त्तव्योनधार्यंचायुधंतथा ॥ वेषोन विकृतोधार्योजेतव्यारसनाचतैः ॥ १८३ ॥ अर्थः । अने ते नैष्टिक ब्रह्मचारि तेमणे पोताने शरिरे तैलमर्दन न करवुं ने आयुध न धारवुं ने भयंकर एवो जे वेश ते न धारवो ने रसना इंद्रियने जितवि ॥ १८३ ॥ श्लोकः ॥ परिवेषणकर्त्रीस्याद्यत्रस्त्रीविप्रवेश्मनि ॥ नगम्यंतत्रभिक्षार्थंगंतव्यमितरत्रतु ॥ १८४ ॥ अर्थः ॥ अने जे ब्राह्मणना घरने विषे स्त्रि पीरसनारी होय तेने घेर भिक्षा करवा जावुं नहि ने ज्यां पुरुष पिरसनारो होय त्यां जावुं ॥ १८४ ॥ श्लोकः । अभ्यासोवेदशास्त्राणांकार्यश्चगुरुसेवम् ॥ वर्ज्यःस्त्रीणामिवस्त्रैणपुंसांसं-

गम्यतैः सदा ॥ १८५ ॥ अर्थः । अने ते नैष्ठिकब्रह्मचारि तेमणे वेद शास्त्रनो अभ्यास करवो ने गुरुनि सेवा करवि ने स्त्रिपुंनि पेठेज स्त्रैण पुरुषनो संग जे ते सर्वे काले वरजवो ॥ १८५ ॥ श्लोकः । चर्मवारिनवैपेयंजात्या विप्रेणकेनचित् ॥ फलांडुलशुनाद्यंचतंनभक्ष्यंनसर्वथा ॥१८६॥ अर्थः । अने जातिये करिने जे ब्राह्मण होय ते कोईये पण चर्मवारि न पीवुं ने डुंगलिने लसण आदिक जे अभक्ष्य वस्तु ते ब्राह्मण जाति होय तेणे कोइ प्रकारे न खावुं ॥ १८६॥ श्लोकः । स्नानंसंध्यांचगायत्रीजपंश्रीविष्णुपूजनम् ॥ अकृत्वावैश्वदेवंचकर्त्तव्यंनैवभोजनम्॥१८७॥ अर्थः । अने जे ब्राह्मण होय तेणे स्नान संध्या गा-

यत्रिनो जप श्रीविष्णुनि पुजा ने वैश्वदेव एटलांवानां कर्यां विना भोजन करवुंज नहि एवि रिते नैष्टिकब्रह्मचारिना विशेष धर्म कह्या ॥ १८७॥ श्लोकः । साध्वोपेऽ थवैः सर्वैर्नैष्टिकब्रह्मचारिवत् । स्त्रीस्त्रणसं- गादिवर्ज्यजेतव्याश्चांतराऽरयः ॥ १८८ ॥ अर्थः ॥ हवे साधुना जे विशेष धर्म ते कहिये छइये अमारे आश्रित जे सर्वे साधु तेमणे नैष्टिघब्रह्मचारिनि पेठे स्त्रीयुना द- र्शन भाषणादिक प्रसंगनो त्याग करवो तथा स्त्रैण पुरुषना प्रसंगादिकनो त्याग करवो अने अंतर शत्रु जे कामक्रोधलोभ ने मान आदिक तेमने जितवा ॥ १८८ ॥ श्लोकः । सर्वेंद्रियाणिजेयानिरसनातुवि- शेषतः । नद्रव्यसंग्रहःकार्यःकारणीयोन-

कर्नचित् ॥ १८९ ॥ अर्थः । अने सर्वे जे इंद्रियो ते जितवां ने रसना इंद्रियने तो विशेषे करिने जितवी अने द्रव्यनो संग्रह पोताने करवो नहि ने कोइ बिजा पासे पण कराववो नहि ॥ १८९ ॥ श्लोकः । न्यासोरक्ष्योनकस्यापिधैर्यंत्याज्यंन कर्हिचित् । नप्रवेशयितव्याचस्वावासेस्त्री कदाचन ॥ १९० ॥ अर्थः ॥ अने कोईनि पण थापण न राखवि अने क्यारेय पण धिरजतानो त्याग न करवो अने पोताना उतारानि जायगा बंधिनि होय तो तेने विषे क्यारेय पण स्त्रिनो प्रवेश थावा देवो नहि ॥ १९० ॥ श्लोकः ॥ नचसंघंविनारात्रौ चलितव्यमनापदि ॥ एकाकिभिर्नगंतव्यं तथाक्वापिविनापदम्

॥ १९१ ॥ अर्थः ॥ अने तेम साधु तेणे आपतकाल पड्या विना रात्रिने विषे संग सोबत विनानुं चालवुं नहि तथा आपतकाल पड्याविना क्यारेय पण एकला चालवुं नहि ॥ १९१ ॥ श्लोकः ॥ अनर्घ्यंचित्रितंवासः कुसुंभाद्यैश्चरंजितम् ॥ नधार्यंचमहावस्त्रंप्राप्तमन्यच्छयापितत् ॥ ॥ १९२ ॥ अर्थः ॥ अने जे वस्त्र बहु मुलवालुं होय तथा चित्र विचित्र भात्यनुं होय तथा कसुंबादिक जे रंग तेणे करिने रंगलुं होय तथा साल दुसाला होय ने ते जो बिजानि इछायेकरिने पोताने प्राप्त थयुं होय तोपण ते वस्त्र पोताने पेरवुं ओढवुं नहि ॥ १९२ ॥ श्लोकः ॥ भिक्षांसभांविनानैव गंतव्यंगृहिणागृहम् ॥

व्यर्थः । कालोननेतव्योभक्तिंभगवतोविना
॥ १९३ ॥ अर्थः ॥ अने भिक्षा तथा स-
भा प्रसंग ए बे कारज विना गृहस्थना
घर प्रत्ये जावुं नहि अने भगवानेनि जे
नव प्रकारनि भक्ति ते विना व्यर्थकाल
निगमवो नहि निरंतर भक्ति करिनेज का
ळ निगमवो ॥ १९३ ॥ श्लोकः ॥ पुमा-
नेवभवेद्यत्रपक्कान्नपरिवेषणः ॥ ईक्षणादि
भवेन्नैवयत्रस्त्रीणांचसर्वथा ॥ १९४ ॥
अर्थः ॥ अने जे गृहस्थना घरने विषे
रांधेल अन्ननो पिरसनारो पुरुषज होय
तथा स्त्रियुंनो दर्शनादिक प्रसंग कोइं रि-
त्ये थाय एम न होय ॥ १९४ ॥ श्लोकः
॥ तत्रगृहिगृहेभोक्तुंगंतव्यंसाधुभिर्मम ॥
अन्यथामान्नमर्थित्वापाकः कार्यः स्वयंस-

वैः ॥ १९५ ॥ अर्थः ॥ तेवि रित्यनुं जे
गृहस्थनुं घर ते प्रत्ये अमारा साधु तेमणे
जमवा जावुं अने ए कह्युं तेवुं न होय तो
काचुं अन्न मागिने पोताने हाथे रसोइ
करवि ने भगवानने नैवेद्य धरिने जमवुं
॥ १९५ ॥ श्लोकः ॥ आर्षभोभरतःपूर्वं-
जडविप्रोयथा भुवि ॥ अवर्तताऽत्रपरम-
हंसैर्वृत्यंतथैवतैः ॥ १९५ ॥ अर्थः ॥ अने
पूर्वे रुषभदेव भगवानना पुत्र जे भरतजि
ते जे ते पृथविने विषे जड ब्राह्मण थका
जेम वरतता हवा तेमज परमहंस एवा जे
अमारा साधु तेमणे वरतवुं ॥१९६॥ श्लो-
कः ॥ वर्णिभिः साधुभिश्चतैर्वर्जनीयंप्रयत्न
तः ॥ तांबूलस्याहिफेनस्यतमालादेश्चभ-
क्षणम् ॥ १९७ ॥ अर्थः । अने नैष्टिक

ब्रह्मचारि ने ए साधु तेमणे तांबूल तथा अफिण तथा तमाकु इत्यादिकनुं जे भक्षण ते जतने करिने वरजवुं ॥१९७॥ श्लोकः ॥ संस्कारेषुनभोक्तव्यंगर्भाधानमुखेषुतैः ॥ प्रेतश्राद्धेषुसर्वेषुश्राद्धेचद्वादशाहिके ।१९८। अर्थः । अने ते नैष्ठिकब्रह्मचारि ने साधु तेमणें गर्भाधान आदिक जे संस्कार तेमने विषे जमवुं नहि तथा एकादशाह परजंत जे प्रेत श्राद्ध तेमने विषे जमवुं नहि तथा द्वादशाह श्राद्धने विषे जमवुं नहि ।१९८। श्लोकः ॥ दिवास्वापोनकर्त्तव्योरोगाद्यापदमंतरा ॥ ग्राम्यवार्तानकार्याचनश्रव्या बुद्धिपूर्वकम् ॥ १९९ ॥ अर्थः ॥ अनेरोगादिक आपतकालपड्या विना दिवसे सुवुं नहि अने ग्राम्यवार्त्ता करवि नहि

अने जाणीनेसांभलविनहि ॥१९९॥ श्लोकः । स्वप्नंनतैश्चत्वक्ष्यांविनारोगादिमापदम् ॥ निच्छद्मवर्त्तितव्यंच साधूनामग्रतःसदा ॥ २०० ॥ अर्थः ॥ अने ते नैष्टिक ब्रह्मचारिने साधु तेमणे रोगादिक आपतकाल पड्या विना खाटला उपरच्च सुवुं नहि अने साधुनि आगलयतो निरंतर निष्कपटपणे वरतवुं ॥ २०० ॥ श्लोकः ॥ गालिदानंताडनंचकृतंकुमतिभिर्जनैः ॥ क्षंतव्यमेवसर्वैषांचिंतनीयंहितंचतैः ॥ २०१ ॥ अर्थः । अने ते साधुने ब्रह्मचारि तेमणे कोईक कुमतिवालो दुष्ट जन होय ने ते पोताने गालदे अथवा मारे तो ते सहनज करवुं पण तेने सांमु गाल न देवी ने मारवो नहि ने तेनुं जेम हित थाय तेमज

मनमां चिंतवन करवुं पण तेनुं भुडुं थाय एवो तो संकल्प पण न करवो ॥ २०१ ॥ श्लोकः । दूत्यकर्मनकर्त्तव्यंपैशुनंचारकर्मच । देहेऽहंताचममतानकार्या स्वजनादिषु ॥ २०२ ॥ अर्थः । अने कोईनुं दूतपणुं न करवुं तथा चाडीयापणुं न करवुं ने कोईना चारचक्षु न थावुं अने देहने विषे अहं बुद्धि न करवी ने स्वजनादिकने विषे ममता न करवि एवि रिते साधुना विशेष धर्म कह्या ॥ २०२ ॥ श्लोकः ॥ इतिसंक्षेपतोधर्माः सर्वेषांलिखितामया ॥ सांप्रदायिकग्रंथेभ्योज्ञेयएषांतु विस्तरः । ॥ २०३ ॥ अर्थः । अने अमारे आश्रित एवो जे सत्संगि बाई भाई सर्वे तेमना जे सामान्य धर्मने विशेष धर्म जे ते संक्षेपे

करिने आवि रिते अमे लिख्याछे अने आ धर्मनो जे विस्तार तेतो अमारा संप्रदायना जे ग्रंथ ते थकि जांणवो ।२०३। श्लोकः ॥ सच्छास्त्राणांसमुध्धृत्यसर्वेषांसारमात्मना । पत्रीयंलिखितानृणामभीष्टफलदायिनी ॥ २०४ ॥ अर्थः । अने सर्वे जे सतशास्त्र तेनो जे सार तेने अमे अमारि बुद्धिये करिने उद्धारिने आ शिक्षापत्रि जेते लखिछे ते केविछे तो सर्व मनुष्य मात्रने मनवांछित फलनि देनारिछे।२०४। श्लोकः । इमामेवततोनित्यमनुसृत्यममाश्रितैः ॥ यतात्मभिर्वर्तितव्यंनतुस्वैरंकदाचन ।२०५। अर्थः । ए हेतु माटे अमारा आश्रित जे सर्वे सत्संगि तेमणे सावधान पणे करिने नित्य प्रत्ये आ शिक्षापत्रिने

अनुसरिनेज वरतवुं पण पोताना मनने जांणे तो क्यारेय न वरतवु ॥ २०५ ॥ श्लोकः । वर्तिष्यंतेयइत्थंहिपुरुषायोपितस्तथा ॥ ते धर्मादिचतुर्वर्गसिद्धिंप्राप्स्यंतिनिश्चितम् ॥ २०६ ॥ अर्थः ॥ अने जे अमारा आश्रित पुरुष ने स्त्रियुं ते जेते आ शिक्षापत्रि प्रमाणे वरतशे तो ते धर्म अर्थ काम ने मोक्ष ए चारे पुरुषार्थनि सिद्धिने निश्चे पांमशे ॥२०६॥ श्लोकः । नेत्थंयआचरिष्यंतितेत्वस्मत्संप्रदायतः । बहिर्भूताइतिज्ञेयंस्त्रीपुंसैः सांप्रदायिकैः ॥ २०७ ॥ अर्थः । अने जे बाई भाई आ शिक्षापत्रि प्रमाणे नहि वरते ते तो अमारा संप्रदाय थकि बाहेरछे एम अमारा संप्रदायवाळां स्त्री पुरुष तेमणे जांणवुं ॥

२०७ ॥ श्लोकः । शिक्षापत्र्याःप्रतिदि-
नंपाठोऽस्यामदुपाश्रितैः । कर्त्तव्योऽनक्ष-
रज्ञैस्तुश्रवणंकार्यमादरात्॥२०८॥ अर्थः ॥
अने अमारा जे आश्रित सत्संगि तेमणे
आ शिक्षापत्रिनो नित्य प्रत्ये पाठ करवो
अने जेने भणतां आवडतुं न होय
तेमणे तो आदरथकि आ शिक्षापत्रिनुं
श्रवण करवुं ॥ २०८ ॥ श्लोकः । वक्त्र-
भावेतुपुजैवकार्याऽस्याः प्रतिवासरम् ॥
मद्रूपमिति मद्वाणीमान्येयं परमादरा ॥
२०९ ॥ अर्थः । अने आ शिक्षापत्रि ने
वांचि संभळावे एवो कोई न होय तारे
तो नित्य प्रत्ये आ शिक्षापत्रिनि पूजा
करवी अने आ जे अमारि वाणि ते अ-
मारुं स्वरुपछे ए रिते परम आदरथकि

मांनवी ॥ २०९ ॥ श्लोकः ॥ युक्ताय-
संपदादैव्यादातव्येयंतुपत्रिका ॥ आसु-
र्यासंपदाढ्यायपुंसेदेयानकर्हिचित् ॥२१०॥
अर्थः । अने आ ज अमारि शिक्षापत्रि
ते जे ते दैवि संपदाये करिने जुक्त जे
जन होय तेने आपवी अने जे जन आ-
सुरि संपदाये करीने जुक्त होय तेने तो
क्यारेय न आपवि ॥ २१० ॥ श्लोकः ।
विक्रमार्कशकस्याब्देनेत्राष्टवसुभूमिते॥ वसं-
ताद्यदिनेशिक्षापत्रीयंलिखिताशुभा॥ २११।
अर्थः ॥ संवत् १८८२ अढारब्यासिना
माहा शुदी पंचमीने दिवसे आ शिक्षापत्रि
अमे लिखिछे ते परम कल्याणकारिछे ॥
२११ ॥ श्लोकः । निजाश्रितानांसकला-
र्तिहंतासधर्मभक्तेरवनंविधाता । दातासु-

स्वानांमनसेप्सितानांतनोतुकृष्णोऽखिलमंग-
ळंनः ॥ २१२ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वा-
मिलिखिता शिक्षापत्रिसमाप्ता । अर्थः ।
अने पोताना आश्रित जे भक्तजन तेमनि
जे समग्र पिडा तेना नाश करनारा एवा
जे धर्म सहित जे भक्ति ते नि रक्षाना
करनारा एवा ने पोताना भक्तजनने मन-
वांछित सुखना आपनारा एवा जे श्रीकृ-
ष्णभगवान ते जे ते अमारा समग्र मंगल
ने विस्तारो ॥ २१२ ॥ इतिश्रीसहजानंद
स्वामि शिष्य नित्यानंदमुनि लिखिता
शिक्षापत्रिं टीकासमाप्ता ॥

अथ जनमंगळ स्तोत्र प्रारंभ.

नमोनमः श्रीहरयेबुद्धिदायदयावतेभक्ति

धर्मांगजातायभक्तकल्पद्रुमायच ॥१॥ सुगं-
धिपुष्पहाराद्यैर्विविधैरुपहारकैः। संपूजिताय
भक्तौघैः सितांबरधरायच ॥ २ ॥ नाम्ना-
मष्टोत्तरशतंचतुर्वर्गमभीप्सिताम् । सद्यःफ-
लप्रदंनृणांतस्यवक्ष्यामिसत्पतेः ॥ ३ ॥
अस्य श्रीजनमंगळाख्यस्यश्रीहर्यष्टोत्तर श-
तनामस्तोत्रमंत्रस्यशतानंदऋषीः ॥ अनु-
ष्टुपछंदः धर्मनंदनः श्रीहरिर्देवता ॥ धा-
र्मिकइतिबीजमब्रूहद्व्रतधरइति शक्तिः ॥
भक्तिनंदनइतिकीलकम् चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थेजपे
विनियोगः ॥ अथध्यानम् । वर्णीवेषरमणी
यदर्शनंमंदहासरुचिराननांबुजम् ॥ पूजि-
तंसुरनरोत्तमैर्मुदाधर्मनंदनमहंविचिंतये ॥४ ॥
श्रीकृष्णोवासुदेवश्चनरनारायणः प्रभुः
भक्तिधर्मात्मजोजन्माकृष्णोनारायणो हरिः

॥ ५ ॥ हरिकृष्णोघनश्यामोधार्मिकोभक्तिनंदनः ॥ बृहद्व्रतधरः शुद्धोराधाकृष्णेष्ट देवतः ॥ ६ ॥ मरुत्सुतप्रियः कालिभैरवाद्यतिभीषणः ॥ जितेंद्रियीजिताहारस्तीव्रवैराग्यआस्तिकः ॥ ७ ॥ योगेश्वरोयोगकलाप्रवृत्तिरतिधैर्यवान् । ज्ञानीपरम हंसश्चतीर्थकृत्तीर्थिकार्चितः ॥ ८ ॥ क्षमानिधिः सदोन्निद्रोध्य ननिष्ठस्तपः प्रियः । सिद्धेश्वरः स्वतंत्रश्च ब्रह्मविद्याप्रवर्त्तकः ॥ ॥ ९ ॥ पाषंडोच्छेदनपटुः स्वस्वरूपाचल स्थितिः । प्रशांतमूर्त्तिर्निर्दोषो असुरगुर्वादिमोहनः ॥ १० ॥ अति कारुण्यनयन उद्धवाध्वप्रवर्तकः ॥ महाव्रतःसाधु शीलः साधुविप्रप्रपूजकः ॥ ११ ॥ अहिंसयज्ञप्रस्तोवासाकारब्रह्मवर्णनः । स्वामीनारायणः

स्वामीकालदोष निवारकः ॥ १२ ॥ सच्छास्त्रव्यसनः सद्यः । समाधिस्थिति कारकः । कृष्णार्चास्थापनकरः । कौलद्विट्कलितारकः ॥ १३ ॥ प्रकाशरूपो निर्दंभः । सर्वजीवहितावहः । भक्ति संपोषकोवाग्मी । चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १४ ॥ निर्मत्सरोभक्तवर्मा । बुद्धिदाताऽतिपावनः ॥ अबुद्धिहृद्ब्रह्मधाम । दर्शकश्चापराजितः ॥ ॥१५॥ आसमुद्रांतसत्कीर्तिः । श्रितसंसृतिमोचनः । उदारः सहजानंदः । साध्वीधर्मप्रवर्तकः ॥ १६ ॥ कंदर्पदर्पदलनो । वैष्णवक्रतुकारकः ॥ पंचायतनसन्मानो । नैष्ठिकव्रतपोषकः ॥ १७ ॥ प्रगल्भोनिस्पृहः सत्य । प्रतिज्ञो भक्तवत्सलः । अरोषणोदीर्घदर्शी । षडूर्मिविजयक्षमः ॥१८॥ निरहंकृ-

विरद्रोहकऋजुः सर्वोपकारकः । नियामकश्चोपशमस्थितिर्विनयवान् गुरुः ॥ १९ ॥ अजातवैरिर्निर्लोभोमहापुरुषआत्मदः ॥ अखंडितार्षमर्यादोव्याससिद्धांतबोधकः ॥ ॥ २० ॥ मनोनिग्रहहृत्तिज्ञोयमदूतविमोचकः । पूर्णकामः सत्यवादीगुणग्राहीगतस्मयः ॥ २१ ॥ सदाचारप्रियतरः पुण्यश्रवणकीर्तनः । सर्वमंगलसद्रूपोनानागुणविचेष्टितः ॥ २२ ॥ इत्येतत्परमंस्तोत्रं जनमंगलसंज्ञितम् ॥ यः पठेत्तेनपिठतंभवेद्वै सर्वमंगलम् ॥ २३ ॥ यः पठेच्छृणुयाद्भक्त्यात्रिकालं श्रावयेच्चवा । एतत्तस्यतुपापानिनश्येयुः किलसर्वशः ॥ २४ ॥ एतत्संसेवमानानां पुरुषार्थचतुष्टये । दुर्लभंनास्तिकिमपि हरिकृष्ण प्रसादतः ॥

॥२५॥ भूत प्रेत पिशाचानांडाकिनीब्रह्म-
राक्षसाम् ॥ योगिनीनां तथा बालग्रहादी-
नामुपद्रवः ॥ २६ ॥ अभिचारोरिपुकृतो-
रोगश्चान्योप्युपद्रवः ॥ अयुतावर्तनादस्य
नश्यत्येव न संशयः ॥ २७ ॥ दशावृत्त्या
प्रतिदिनमस्याभीष्टं सुखंभवेत् । गृहिभि-
स्त्यागिभिश्चापिपठनीयमिदंततः ॥ २८ ॥
इतिश्री सहजानंद स्वामीशिष्य शतानंद
मुनि विरचितं श्री जनमंगल स्तोत्रं सं-
पूर्णम् ॥

अथ थाल लख्यो छे ॥ स्वामि आवोने
मारे घेररे वारिजाउं बालमजी ॥ टेक ॥
सेवा करिशुं सारी पेररे ॥ वारी ॥ १ ॥
कांइ निर उने नवाडुंरे ॥ वारी ॥ वली
जक्ति करीने जमाडुंरे ॥ वारी ॥ २ ॥

कांई कंचन थाल कटोरारे ॥ वारी ॥ पासे पाणी पीवाना आबखोरारे ॥ वारी ॥ ३॥ मेलुं सीरोपुरीने बेक सेवोरे ॥ वारी ॥ पासे शाक अथाणां भावे तेवांरे ॥ वारी ॥ ४ ॥ मेलुं चुरमुं कंसार बेक चोळीरे ॥ वारी ॥ रस रोटली घीमां झबकोळीरे ॥ वारी ॥ ५ ॥ मेलुं मही मांखण व्रत मेवारे ॥ वारी ॥ पासे तळीया पापड जोईए तेवारे ॥ वारी ॥ ६ ॥ कांई लाडु जलेबी बेक लेजोरे ॥ वारी ॥ वळी कसर रहेतो अमने कहेजोरे ॥ वारी ॥ ७ ॥ कांई घीए तळेलां घीसोडांरे ॥ वारी ॥ काचली ने तळेलां कंकोडांरे ॥ वारी ॥ ॥ ८ ॥ कांई तुरीयांनी तरकारीरे ॥ वारी ॥ बेक चोळाफळी छमकारीरे ॥ वारी

॥ ९ ॥ कांई सुरण तळ्यां छे तम सारुंरे ॥ वारी ॥ तमे जमोने थाळ मारे वारुंरे ॥ वारी ॥ १० ॥ कांई चोखाने दुध सिरावोरे ॥ वारी ॥ मांहे साकर बेक मंगावोरे ॥ वारी ॥ ११ ॥ तमो जमोने ढोलुंहुं वायरे ॥ वारी ॥ कांई तारे ते मारे टाढुं थायरे ॥ वारी ॥ १२ ॥ कांई जल जमुनानी झारिरे ॥ वारी ॥ तमने चळुकरावे ब्रह्मचारिरे ॥ वारी ॥ १३ ॥ काथो चुनोने पान सोपारीरे ॥ वारी ॥ मुखवास लेजो मुरारिरे ॥ वारी ॥ १४ ॥ कांई चंदन पुष्प चढावुंरे ॥ वारी ॥ वळी गुण तमारा गाउंरे ॥ वारी ॥ १५ ॥ कांई आरतियो उतारुंरे ॥ वारी ॥ वळी रुप ह्रदामां धारुंरे ॥ वारी ॥ १६ ॥ कांई

पलंग उपर पोढाडुंरे ॥ वारी ॥ झाझी वार थायतो जगाडुंरे ॥ वारी ॥ १७ ॥ कांई निद्रा उडे नेगेरे ॥ वारी ॥ वातो कहेजोने सुंदर वेणेरे ॥ वारी ॥ १८ ॥ कांई घेलुं घेलुं बोलीमुख देजोरे ॥ वारी ॥ कांई केवुं होयतो छानुं कहेजोरे ॥ वारी ॥ १९ ॥ आपो अवलाने आनंदरे॥वारी बलिहारी जाय ब्रह्मानंदरे ॥ वारी ॥ २० ॥

थाळ भूमानंद स्वामीकृत.

जमो थाळ जीवन जाउं वारी, धुवो कर चरण करो त्यारी. जमो. ॥ टेक ॥ बेसो मेल्या बाजोठीया ढाळी; कटोरा कंच-ननी थाळी, जळे भर्या चंबु चोखाळी ॥ जमो ॥ १ ॥ करी काठा घउनी पोळी

मेळी घ्रत साकरमां बोळी; काढ्यो रस केरीनो घोळी ॥ जमो ॥ २ ॥ गळ्या साटा घेवर फुलवडी, दुधपाक मालपुवा कढी; पुरी पोची थइ छे घीमां चडी ॥ जमो ३ ॥ अथाणां शाक सुंदर भाजी, लाविछुं तरत करी ताजी; दहीं भात साकर छे झाझी ॥ जमो ॥ ४ ॥ चळु करो लावुं जळ झारी, एलची लवींग सोपारी पान बीडी बनावी सारी ॥ जमो ॥ ५ ॥ मुखवास मन गमता लइने; प्रसादी थाळ तणी दइने, सिंहासने बेसो राजी थइने ॥ जमो ॥ ६ ॥ कमरे कशीने फेटो, राजेश्वर ओढीने रेंटो भुमानंदना वालाने भेटो जमो ॥ ७ ॥ पद १ पुरु ॥

गरबीओ.

थाळ.

अविनाशी आवोरे, जमवा श्री कृष्ण हरी ॥ श्री भक्ति धर्म सुतरे, जमाडुं प्रीत करी ॥ १ ॥ सेरडियो वाळीरे, फुलडां वेर्यां छे ॥ मळिपागरे मंदिररे, लिंप्यां लेर्यां छे ॥ २ ॥ चारवडियो पेरीरे, पधारो चटकंता ॥ मंदिरिये मारेरे, प्रभुजी लटकंता ॥ ३ ॥ बाजोठे बेसारीरे, चरण कमळ धोउं ॥ पामरिये प्रभुजीरे, पावलिया लोऊं ॥ ४॥ फुलेऊ सुगंधीरे, चोळुं शरीरे ॥ हेवे नवरावुंरे, हरी उने नीरे ॥ ५ ॥ पेरावुं प्रीतेरे, पीतांबर धोती ॥ उपरणि ओढाडुंरे, अती झीणा पोती ॥

६ ॥ केसर चंदननुंरे, भाळे तिलक करुं ॥
बंदन करि विष्णुरे, चरणे शीश धरुं॥७॥
उरहार गुलाबीरे, गजरा बांधीने ॥ नि-
रखुं नारायणरे, दृष्टी सांधीने ॥ ८ ॥
शीतळ सुगंधीरे, कळश भर्या जळना ॥
उलेच बांध्यां छे रे, उपर मुखमलना ॥
९ ॥ कंचन बाजोठेरे, बिराजो बहु नामी ।
पकवानने पीरशीरे, थाळ लावुं स्वामी ॥
१० ॥ मोतैया लाडुरे, सेवैया सारा ॥
तमकाज कर्या छेरे, लाखणशाइ प्यारा ॥
११ ॥ मगदळ ने सेवदळरे, लाडु दळना
छे ॥ खाजांने खुरमांरे, चुरमां गोळनां
छे ॥ १२ ॥ जलेबी घेवररे, बरफी बहु
सारी ॥ पेंडा पतासांरे, साटां सुखकारी
॥ १३ ॥ मरकी ने मेसुररे, जमो जग-

वंदनजी ॥ सुतरफेणी छेरे, भक्ति नंदनजी ॥ १४ ॥ मगण ने गांठियारे, गुंदवडां वाला ॥ गुलाबपाक जमजोरे, धर्मतणा लाला ॥ १५ ॥ एलाइचीदाणारे, चणा छे साकरिया ॥ गुंदरपाक सुंदररे, जमजो ठाकरीया ॥ १६ ॥ टोपरापाक टाढोरे, शकरपारा सारा ॥ सेवो घी शाकररे, तमे छो जमनारा ॥ १७ ॥ केसरियो बिरंजरे, गळ्यो ने मोळो छे ॥ शाकरनो शीरोरे, हरिशो धोळो छे ॥ १८ ॥ लाबशी कंसारमांरे, घी बहु रसबस छे ॥ खिर खांड घी रोटलीरे, जमो बहु सरस छे ॥ १९ ॥ बदाम चारोळीरे, द्राख ते नांखीने ॥ दुधपाक कर्पोछेरे जुओ हरि चाखीने ॥ २० ॥ पूरी कचोरीरे पूरण

पोळी छे ॥ रोटलियो झीणीरे, घीमां बोळी छे ॥ २१ ॥ पापड ने पुडलारे, मीठा मालपुडा ॥ मांखणने मिशरीरे; मावो दहिचूडा ॥ २२ ॥ घउंनी छे बाटीरे, बाजरानी पोळी ॥ झाझीवार घीमांरे हरि में झबकोळी ॥ २३ ॥ तलसांकळि सुंदररे, बीजीछे गळपापडी ॥ गांठीआने कळीरे, त्रीजी फूलवडी ॥ २४ ॥ भजियां ने वडांरे, सुंदर दैथरियां ॥ वघार्या चणारे, मांइ मीठुं मरियां ॥ २५ ॥ गुजांने मठियांरे, फाफडा फरसा छे ॥ मळवी आदानांरे, भजियां सरसां छे ॥ २६ ॥ कंचन कटोरेरे, पाणी पीजोजी ॥ जे जे कांइ जोइएरे, मागी लेजोजी ॥ २७ ॥ रोटली रस शाकररे. जमजो अलबेला ॥

रांयणने रोटलीरे, खांड केळां छेळा ॥ ॥ २८ ॥ मोरबा कर्या छेरे, केरी द्राख-तणा ॥ सुंदरवर जमजोरे, राखशो मां मणा ॥ २९ ॥ कटोरा पूर्यारे, सुंदर शाकांना ॥ केटलांक गणावुंरे, छे झाझां वाना ॥ ३० ॥ सूरण तळ्यां छेरे, सुंदर घी झाझे ॥ अळवि ने रताळुरे, तळयां छे त-मकाजे ॥ ३१ ॥ में मीठ करीनेरे, परवळ तलियां छे ॥ वंत्पाक ने वालोळरे, भेळां भळियां भे ॥ ३२ ॥ कंकोडां कोळांरे, केळां कारेलां ॥ गलकां ने तुरियांरे, रुडां वघारेलां ॥ ३३ ॥ चोळा वालोळोरे, मीत करी तळियो ॥ दुधियां ने डोडांरे, गुवारनी फळियो ॥ ३४ ॥ लिलवा व-घार्यारे; थया छे बहु सारा ॥ भींडानी

फळियोरे, तळियो हरि मारा ॥ ३५ ॥
टांको तांदळजोरे, मेथीनी भाजी ॥ मूळा
मोगरियोरे सुवानी ताजी ॥ ३६ ॥ च-
णेची डोडीरे, भाजी सारी छे ॥ काढी
ने वडीरे, सुंदर वघारी छे ॥ ३७ ॥ नै-
थांनां राइतांरे, अति अनोपम छे ॥ मीठु
ने राइरे, मांड ब सम छे ॥ ३८ ॥ केट-
लांक गणावुंरे, पार तो नहीं आवे ॥ सारुं
सारुं जमजोरे, जे तमने भावे ॥ ३९ ॥
खारु ने मोळुंरे, हरिवर कहेजोजी ॥ मीठुं
मरि चटणिरे, मागी लेजोजी ॥ ४० ॥
अथाणां जमजोरे, सुंदर स्वादुछे ॥ लिं-
बूने मरचांरे आंबळां आदु छे ॥ ४१ ॥
राइती चीरीरे, केरी बोळ करी ॥ खारेक
ने द्राखमांरे, नांरूपां लविंग मरी ॥ ४२ ॥

करां ने क्रमदांरे, तळि छे काचळीयो ॥ बीलां बहु सारांरे. वांस ने गरमरियो ॥ ४३ ॥ पंखाळिना भातमांरे, सुंदर सुगंध घणो ॥ एलायचिनो पिरस्योरे, आंबा मोहोरतणो ॥ ४४ ॥ में कठण करी छेरे, दाळ हरी तुवरनी ॥ पातळी पीरशी छेरे, दाळ मसूरनी ॥ ४५ ॥ मग ने अडदनीरे. करी छे धोइने. ॥ चोळा ने चणानीरे, घीमां करमोइने ॥ ४६ ॥ दाळ ने भात जमजोरे, तमने भावे छे ॥ चतुराइए जमतांरे, प्रिती उपजावे छे ॥४७॥ दही ने भात जमजोरे, शाकर नांखी छे ॥ दुध ने भात सारुरे, शाकर राखी छे ॥ ४८ ॥ दुधनी तर साकररे, भात जमो पेहेलां ॥ शाकर नांखीनेरे दुध पिपो

छेला ॥ ४९ ॥ जे जे कांइ जोइएरे, ते केहज्यो अमने ॥ कांइ कसर करोतो रे, मारा सम तमने ॥ ५० ॥ जीवन जमीनेरे, चळु करो नाथ ॥ चंदन गारेथुंरे, धोवरावुं हाथ ॥ ५१ ॥ तज एळची जापफळरे, जावंत्री सारी ॥ काथो ने चुनोरे, सारी सोपारी ॥ ५२ ॥ नागरवेलीनारे, पान लावी पाकां ॥ धोइने मुक्यां छेरे, अनोपम छे आखां ॥ ५३ ॥ मांइ चूरण मेलीरे, बीडी वाळी छे ॥ ललित लविंगनीरे, खीलि रसाळी छे ॥ ५४ ॥ मुखमां हुं मेलुरे, बीडी प्रीत करी ॥ आरती उतारुंरे, प्रभुजी भावभरी ॥ ५५ ॥ फुल सेज बिछावुंरे, पोढो प्राण पति ॥ पावलिया चांपुंरे, हैडे हरख अति ॥५६॥

थाळ गायो प्रीते रे, धर्मकुळ मुगट मणी ॥ आपो प्रेमानंदरे प्रसादी थाळ तणी ॥ ५७ ॥

प्रार्थना.

जय जय श्री वासुदेव भगवन्नारायण॥ महापुरुष महानुंभाव परम मंगळ ॥ परम कल्याण सच्चिदानंद दिव्यमूर्त्ति ॥ अनेक कोटि ब्रह्मांडाधीश श्वेत द्विपपते मथुरानाथ। वसुदेव देवकीनंदन ॥ गोकुलाधीश वृंदावन विहारी ॥ राधिका रमण, मुरली मनोहर, गोपीजन वल्लभ, वृजराज, नंद नंदन, यशोदा जीवन, कंश नाशन ॥ श्री द्वारिकाधीश ॥ लक्ष्मीनारायण ॥ नर-

नारायण ॥ भक्तजन शंकट नाशन ॥ द्रौपदि लज्जा रक्षक ॥ धर्म धुरंधर, भक्ती धर्म नंदन, अधमोद्धारक ॥ पतित पावन॥ अशरण शरण ॥ आनंदपाद ॥ आनंद मुख ॥ आनंद नयन ॥ आनंद रुप ॥ आनंद वसन ॥ आनंद भुषण ॥ अनंत कल्याण गुण, दया सागर ॥ दुर्मति नाशन ॥ काम क्रोध लोभ भय निवारण ॥ काल माया पाश मोचक, भवसागर तारक ॥ पुर्ण पुरुषोतम ॥ परमात्मा ॥ परमेश्वर, लक्ष्मीकांत, कृष्ण केशव ॥ घनश्याम, निलकंठ, नारायणमुने ॥ महाराजाधिराज ॥ तमे तो सवल जीव ईश्वर मायाना स्वामि छो ॥ ने हुं तमारो सेवक छुं अने हाथ जोडीने तमारी प्रार्थना करुं

छुं जे जाणीने तथा न जाणीने जे अप-
राध में कर्या होय ते सर्वे तमो क्षमा
करजो, तमे तो मारा उपर कृपा करीने
भवसागर तरवाने काजे नर देह आप्यो
छे पण हुं तो अनेक जन्मनां कर्म पा-
सनो बांधेलो पापी जीव छुं ते अवतर्यो
त्यारथी कुसंगमां पढेलो छुं ॥ मावाना
उदरमां हतो त्यारे छ लाख ने चोराशी
शहस्र नरकना कुंड छे ते करतां पण
गर्भवासनुं दुःख घणुं लाग्युं त्यारे तमारी
संगाते कोल दलासा कर्या जे हे महाराज
कृपा करीने मने आ गर्भ संकटमांथी छो-
डवो ॥ हवे आज पछी कशुं पाप करीश
नहीं ॥ ने तमारा चरणार्विंदनी भक्ति क-
रीश जेथी मारे फरीने आ ठेकाणे आववुं

पडे नहीं एवुं करीश ॥ एम कही बाहेर आव्यो ते वात तो भूली गयो ॥ ने तमारी मूर्ती निरखवाने काजे तथा तमारा भक्तनां दर्शन करवाने काजे तमे तो मने सारां सुंदर नेत्र आप्यां ते नेत्रवडे संसारी जीवनेज जोतो फर्यो पण तमने तथा तमारा संतने तो ओळख्याज नहीं ॥ ए मारो मोटो अपराध छे ते क्षमा करजो ॥ हे महाराज ॥ वळी तमे कृपा करीने तमारी कथा सांभळवाने तथा तमारा भक्तना गुण सांभळवाने काजे मने सारा कांन आप्या ते कान वडे हुं तो संसार व्यवहारनी वातो सांभळतो फर्यो पण भावे करीने तमारा ने तमारा भक्तना गुणानुवाद सांभळ्या नहीं ॥ ए मारो

मोटो अपराध छे ते तमे क्षमा करजो ॥
हे महाराज ॥ वळी तमे तो कृपा करीने
तमारा गुण गावाने काजे मने मुख आ-
प्युं ॥ ते वडे तो संसारनां कामनो
घणोक बकवाद करतो फर्यो पण प्रेमे
करीने तमारां ने तमारा भक्तनां कीर्तन
गायां नहीं ॥ ने तमारी प्रसादी कर्या
वीना ज ते खातो फर्यो ए मारो मोटो
अपराध छे ते तमे क्षमा करजो ॥ एवी
रीते मारा मोटा मोटा घणाक अपराध
छे ते तमे मनमां लावशो नहीं ॥ पोताना
बरदसामुं जोइने मारो उद्धार करजो ॥
हुं पोताने कर्मे करीने भवसागरमां वह्यो
जतो हतो पण तमे मोटा दयानिधि
छो ते मारो हाथ झाली लीधो छे ॥ हवे

वो बांह्य ग्रह्यानी लाज राखजो ॥ हे महाराज ॥ मारी आंखो तमारी मूर्त्ती सामी नित्ये रहेजो ॥ ने मारा कांन नित्ये तमारी कथा सांभळजो ॥ ने मारा हाथ तमारी सेवामां नित्ये रहेजो ॥ ने मारा पग नित्ये तमारा मंदिर प्रत्ये चालजो ने मारी जीभ नित्ये तमारुं नाम रटण करजो ॥ ने मारुं मन नित्ये तमारी मूर्त्तीनुं ध्यान करजो ॥ एटलां वांनां तमारी प्रार्थना करीने हुं मागुं छुं ॥ ते कृपा करीने आपो ॥ तमे तो क्षर अक्षर थकी पर छो॥ माया थकी परछो ॥ श्री पुरुषोत्तम स्वरुप पोते छो ॥ अक्षर ब्रह्म तमारु धाम छे ॥ माया तमारी शक्ति छे ॥ सर्वे जीव तमारा दास छे ॥ अनेक कोटि ब्रह्मांड-

नी उत्पत्ति स्थिति संहारना करनारा तमे एक स्वामि सत्य छो ॥ कारणना कारण छो ॥ काळना काळ छो ॥ इंद्रिय ना इंद्रिय छो ॥ तमे आत्माना आत्मा छो ॥ प्राणना प्राणछो ॥ इश्वरना इश्वर छो ॥ अंतर्यामी ब्रह्म छो ॥ सर्वेना साक्षि छो ॥ सकळ कर्मना फळदाता छो ॥ स्वयंज्योति रुप छो ॥ मायाना गुणे रहित तमारी मूर्त्ती, छे, माटे तमे निर्गुण छो ॥ मायानो घडेलो तमारो आकार नथी माटे तमे निराकार छो ॥ निरंजन छो ॥ अखंड अविनाशी छो ॥ तमारा गुणनो अंत चार मुखे ब्रह्मा पांमता नथी ने सहस्र मुखे शेषजी पण पामता नथी ॥ त्यारे हुं अल्प जीव तमारी स्तुति शी

करुं ? ॥ संसारमां जे मुमुक्षु जीव हशे तेने तो तमारा चरणारविंदनो एक द्रढ आश्रय विना कल्याणकारी बीजुं कशुं नथी ॥ सर्व देवता मात्र तमने नमे छे ॥ सर्व शास्त्र पुराण तमारुं वर्णन करे छे ॥ वेद सर्वे तमारी स्तुति करे छे ॥ तमारी भक्ति कर्या विना तो ब्रह्मादिक मोटा जे इश्वर छे तेमने पण संसारनी भ्रमणा छुटती नथी ॥ ने नीच जीव होय ने ते जो तमारी भक्ति करे तो तेने पण ब्रह्मादिक देवता नमस्कार करे छे ॥ ने तमारा धामने ते पामे छे ॥ तमारा भय थकी पृथ्वि, लोकने धरी रही छे ॥ तमारा भय थकी समय समय प्रत्ये वृक्ष पुष्प, फळ, आपे छे ॥ तमारा भय थकी शेष नाग

चौदा लोकने माथा उपर धरी रह्या छे ॥ तमारा भय थकी इंद्र राजा वरसाद वरसावेछे ॥ तमारा भय थकी सूर्य चंद्र काळचक्र नित्य फरे छे ॥ तमारा भय थकी मृत्यु पण ब्रह्मांडने विषे सर्वत्र फरे छे ॥ ने ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ए सर्वे जे एक एक ब्रह्मांडना इश्वर छे ते पण तमारी आज्ञाने विषे वर्ते छे ॥ एवा मोटा समर्थ छो एम जाणीने द्रढ विश्वासे तमारा चरण कमळनो आश्रय कर्यो छे ॥ ते माटे मारी उपर क्रुपा द्रष्टि नित्य राखजो ॥ मारा मनना विकार मात्रनो नाश करजो ॥ सुबुद्धि आपजो ॥ तमारा भक्तनो समागम नित्ये आपजो ॥ ने मारुं मन कोइ दिवस तमारा चरणा-

रविंद मुकीने पाप कर्म उपर जाय नहीं एवी कृपा करजो ॥ तमे तो सर्वज्ञ छो ने हुं तो अल्पज्ञ छुं तेथी तमारी प्रार्थना घणी शी करुं ॥ मारे तो आ लोकमां तथा परलोकमां तमारा चरणारविंद विना बीजा कोइनो आश्रय नथी ॥ ने हुं तो कशुं समझतो नथी ॥ माटे जेम मारुं सारूं थाय तेम करजो ॥ तमे जे उपकार कर्यो छे तेनुं साटुं वाळवानुं कोइनु पण सामर्थ्य नथी माटे हुं तो तमने साष्टांग दंडवत प्रणाम करूं छुं ॥ इति श्री दीनानाथ भट्ट विरचिता भक्ति धर्म नंदन श्री वासुदेव प्रार्थना समाप्ता ॥

छोडीके श्री कृष्ण देव ओरकी मैं करूं सेव काटी डारो करमेरो तीखी तरवारसें

छो ॥ त्यागीके रसीका कान ओरको जो धरु ध्यान चीर डारो छाती मोरी कठीन कुठारसें ॥१॥ कृष्न वीर अन्य जेही इष्ट जानी नमुं तेही, फोरडारो सीरमेरो मुसळ प्रहारसें॥ छो२ ॥ मुचानंद कहे मोइ ओर जो प्रतीत होइ, जानियो अधिक नीच स्रुपच लवारसें ॥छो २॥ पद ॥१॥छांडके श्री घनश्याम, ओरको जो जपुं नाम; करले कटारी मेरी जीभ्या काटी डारियो छां० लोकनकी लाज डरुं जो न भक्त चीत धरुं, पावकके मध्य मेरे तनकुं प्रजारियो॥ छां१॥ जीवीकाको लोभ जानी भक्ती जो करुं में छानी, तेही छीन तन मेरो सैलसे पछारियो ॥ छां२॥ मुक्तानंद कहे टेरी द्रढता जो डगे मेरी, स्रुरीये च-

ढाइ तीखे तीरनसे मारियो ॥ छां ३॥पद४॥ होयके श्रीकृष्णदास औरकी जो करु आश, जानियो लबार लुचो नीच ठग जारसें होय० जंत्र मंत्र मत्य जानु ताकी जो प्रतीत आनु, जानियो अधिक मुढ कुमती गमारसें ॥ होय१ ॥ धरमहीन भक्ती करुं प्रभुसें जो नाही डरुं, जानियोप्रबल पापी भुमीहुके भारसें ॥ होय२ ॥ मुक्तानंद कहे इष्ट एक, ताकी जो न राखुं टेक, जानियो अधिक बुरो गंडक बाडारसें ॥ ॥होय३॥पद३॥ पायके श्रीकृष्णपिया ओरसें जो जोरु जिया, जानो मोय जग मध्य सबसें लबारज्युं पाय० प्रगटरूप त्यागु ओरसें जो अनुरागु, जानियो जरूर माकु पापको प्रचारज्युं॥पाय१॥ मद्य मांस भोगी

देव, ताकी जो करुं में सेव, होना सीर मेरे सदा वज्रको महारज्युं ॥पाय२॥मुक्तानंद कहे मोय ओरकी जो आश होय, वेष्या समवेष मेरो जानो अति खवारज्युं ॥ पाय ३ ॥ पद ॥ ४ ॥

॥ श्री ॥

॥ श्रीहरिकृष्णायनमः ॥ श्रीअक्षर धामना अधिपति प्रकट पुरुषोत्तम एवा जे श्रीसहजानंदस्वामी तेमनी उपासनाये तथा एकांतिक साधुना समागमे करिने एकांतिकभाव जे स्वधर्मज्ञान वैराग्यसहित निष्काम भक्ति, तेने पाम्या एवा जे महा भगवदी पुरुष, तेमनी समजण्य तथा व-

रतणुक आखरडामां, घणाक जीवोना जाणवाने अर्थे प्रकट करि छे ते वांची ते प्रमाणे वर्त्तवुं, तथा समझण्य करवी ॥

॥ एकांतिक भक्तनां लक्षण नीचे प्रमाणे ॥

१ सिद्धकरयो छे निर्बीज सांख्य ते निर्बीजयोग; अने सबीज सांख्य ने सबीजयोग जेमणे एसा.

२ निर्बीज सांख्यते शुं तो, मायाथी उत्पन्न थयां जे चोवीश तत्त्व, ते थकी जीवात्माने नोखो समजवो.

३ निर्बीजयोग ते शुं तो नोखो पड्यो जे आत्मा ते आकारे वृत्ति करवी.

४ सबीज सांख्य ते शुं तो, अनंतकोटि ब्रह्मांडना जीव त. ईश्वर त. प्रधान पुरुषादिक त. अक्षर धामना जे मुक्त तेथकी पुरुषोत्तम भगवानने स्वरूप स्वभाव गुण ऐश्वर्यादिके करिने अतिशे विलक्षण पणे समझवा ते.

५ सबीजयोग ते शुं तो, उपरत्य कह्या एवा जे सर्वोपरि भगवान मनुष्याकृति, तेमने विषे इंद्रियुं अंतःकरणनी वृत्तियुं जोडवी.

॥ हवे सांख्य अने योग तेने स्थूल दृष्टांते करिने समझावे छे.

जेम के—आ श्री गोपीनाथजीनुं मंदिर

करवा माटे प्रथम, पाणि छट पायो नाखवा पाताल सुधी तेटली तमाम पृथ्वी खोदी नाखी मोटो खाडो कर्‍यो, तेने ठेकांणे निर्बीज सांख्य समजवूं पछी ते खाडाने पथरा चुनो आदिकथी मजबूत पूरी देवो, तेने ठेकांणे सबीज सांख्य विचारछे, ते पूरेला पाया उपर मोटुं शिखर बंधी मंदिर करवुं तेने ठेकांणे निर्बीजयोग छे. ते प्रकारना मोटा मंदिरमां साक्षात् श्रीमहाप्रभुजीनी मूर्ति पधरावची तेने ठेकांणे सबीज योग छे ॥

६ सांख्य योग सिद्ध करेला भक्त जनोए संसार संबंधी तमाम दुख, काग विष्टातुल्य जांण्युं छे एवा.

७ कलंक रूप जांणी छे सांसारिक की-

र्त्ते जेमणे एवा.

८ झेररूप जाण्युं छे विषय सुख जेमणे एवा.

९ डगला रूप जाण्यो छे देह ते जेमणे एवा.

१० दरजी दरजण रूप जाण्यां छे माता पिता ते जेमणे एवा.

११ नाहार जेवां (सिंहव्याघ्र जेवां) जाण्यां छे सगां संबंधी ते जेमणे एवा.

१२ जातमांनी छे अक्षर ते जेमणे एवा.

१३ नातमांनी छे भगवानना एकांतिक भक्त ते जेमणे एवा.

१४ देशमान्यो छे भगवाननुं अक्षर धाम ते जेमणे एवा.

१५ मोव्य१ मानि छे भगवानना एकां

तिक भक्त थावुं ते जेमणे एवा.

१६ लाभमान्यो छे सत्संग करवामां ते जेमणे एवा.

१७ खोटमानी छे भगवान भुलवामां ते जेमणे एवा.

१८ देहाभिमान त्याग कर्युं छे कदर्पनी पेठे वर्त्तवामां ते जेमणे एवा.

१९ भगवाननी कथा सांभलवी तेमां पृथुराजानी पेटे श्रद्धा करि छे जेमणे एवा.

२० जडभरतनी पेठे निस्प्रही वर्त्तवुं तेणे करिने देहनो कर्यो छे अनादर ते जेमणे एवा.

२१ गोपीयोनी पेठे कर्यो छे भगवानने विषे स्नेह ते जेमणे एवा.

२२ उद्धवजीनी पेठे कर्युं छे भगवानने

विषे दासपणुं ते जेमणे एवा.

२३ हनुमानजीनी पेठे करयुं छे भगवानने विषे पतिव्रतापणुं ते जेमणे एवा.

२४ प्रन्हादजीना जेवी करी छे सवळी समझण ते जेमणे एवा.

४५ जनक विदेही राजाना जेवुं उपार्जन करयुं छे ज्ञान ते जेमणे एवा.

२६ अंबरीष राजानी पेठे सदा भगवद्भक्ति परायण थईने, नथी गयो क्षणकाळपण भगवान विनानो ते जेमनो एवा.

२७ मोरध्वज अने हरिश्चंद्र राजाना जेवी छे धीरज जेमनी एवा.

२८ वृक्षनी पेठे परना कल्याणने अर्थे छे सर्व क्रिया ते जेमनी एवा.

२० पोताना एकांतिक पणामां विघ्न

करनारा जे भुंडा देशकालादि ८ तेनो परित्याग करिने सदाशुभ देशकालादिक ८ तेने सेवनारा एवा.

३० हलाहल झेर जेवो जांण्यो छे, स्त्री धन अने स्त्रैणपुरुष, तेमनो प्रसंग ते जेमणे एवा.

३१ शूरवीरपणुं छे स्वभाव जितवामां ते जेमनुं एवा.

३२ माथे डुंगर पड्यो एवो जांण्यो छे जगतव्यवहारनो अधिकार ते जेमणे एवा.

३३ वैर बांध्युं छे कामक्रोधादिक अंतर शत्रु साथे ते जेमणे एवा.

३४ ब्रह्मराक्षसना वलगाट जेवुं जांण्युं छे जगतनुं डाहापण ते जेमणे एवा.

३५ धर्मामृत निष्काम शुद्धि ने शिक्षा

पत्री ते प्रमाणे करयुं छे पोतानुं वरतणुक ते जेमणे एवा.

३६ ऋषभदेवनी शिक्षामां कह्यां एवां जे पर्च म स धन तेणे करीने टाळी छे अहंमपत्वरूपग्रंथी ते जेमणे एवा.

३७ भगवत धर्मे सिद्धकारने पांमी छे पराभक्ति ते जेमणे एवा.

३८ वचनामृत तथा भगवद्गीता तथा एकादशस्कंध, तेमने विषे कह्यु जे ज्ञान, तेने संतसमागमथी पामीने, प्रमाद अने मोहरूप शत्रुने जीती भगवानने विषे जो डाता एवा.

३९भगवाननुं स्वरूप स्वभाव गुण विभूति एश्वर्य प्रताप तेज सुख इत्यादिक अनेक प्रकारना माहात्म्यने जाणता एवा.

स्वरूप ते भगवाननुं सगुण निर्गुणपणु तथा अन्वय व्यतिरेकपणु तथा साकार निराकारपणु १ भगवानने सगुण केम जाणवा, तो–भगवानने विषे कल्याणकारि सत्यशौचादि अनेक गुण रह्याछे तेणे कारने सगुण कहेवाय छे २ भगवाननं निर्गुण केम जाणवा, तो–भगवानने विषे मायानो कोई गुण नथी, केवल दिव्यमूर्त्ति छे माटे निर्गुण कहेवाय छे ३ भगवान अन्वयपणु केम जाणवुं, तो–भगवाननुं जे ते अनेक ब्रह्मांडना जीव ईश्वर तथा अक्षरधामना मुक्त तेमने विषे अंतर्यामिपणे रह्या छे ते भगवाननुं अन्वय स्वरूप जाणवुं ४ भगवाननुं व्यतिरेक स्वरूप केम जाणवुं तो–भगवान जे ते

सर्वमां पोतानी शक्तिये व्यापिने अक्षर धाममां अनंतमुक्ते सेव्या थका विराजमान छे ते भगवाननुं व्यतिरेक स्वरूप जाणवुं ५ भगवान अक्षरधामने विषे दिव्य आकारे विराजमान छे, तेमने विषे मायानो कोई आकार नथी एवुं केहेवाने अर्थे भगवानने निराकार कहे छे. ६ भगवान सदा दिव्य मूर्तिमान छे ने, ते थकीज घटपटादिक सर्वे साकार सृष्टि थाय छे— जो आकाश निराकार छे तो कांई ते थकी घटपटादिक साकार बनतां नथी ते माटे भगवान सदा साकार दिव्य मूर्तिमानज छे एम समजवुं.

स्वभाव, ते सौशिल्य वात्सल्य उदार्य प्रागल्भ्य कारुण्य इत्यादिक गुण, ते अ-

ष्टमहागुण तथा षट्महागुण तथा सत्यशौ-
चादि अनंत छे ते. विभूति, अक्षर पुरुष
काळ माया इत्यादि अनंत छे.

ऐश्वर्य, ते जडचैतन्यना आधार प्रेरक
प्रवर्तक इत्यादिक अनंत छे.

॥ अथ हनुमान अष्टक लिख्यते॥

निति प्रवीण निगमागम शास्त्रबुद्धे ।
राजाधिराज रघुनायक मंत्रिवर्य ॥ सिंदूर
चर्चित कलेवर नैष्टिकेंद्र । श्रीरामदूत हनु-
मन् हर संकटंमे ॥ १ ॥ सीतानिमीत्तज-
रघुत्तम भूरिकष्ट । प्रोस्मारेणककसहायह-
तास्त्रपोघ । निर्दग्धपातुर्पातहाटकराज-
धानि ॥ श्री राम० ॥ २ ॥ दुर्वार्यरावण
विसर्ज्जितशक्तिघाता। कंटास्र्लक्ष्मणस्वाह्व-
वजीवबल्लो । द्रोणाचलानयननंदितरामपक्ष॥

श्री राम० ॥ ३ रामागमोक्ति तरितारित बंध्व योग । दुःख छिन्न मग्नभरतार्पि परि बर्हं । रामांघ्रिमध्वमधुगी भवदंवरात्मन् ॥ श्रीराम० ॥ ४ ॥ वानात्म केसरि महाकपिराट्तदाय । भार्यांजनीपुरुतपः फलपुत्र भाव । ताक्ष्योंपमोचितवपुर्बल तीव्रवेग ॥ ॥ श्रीराम० ॥ ५ ॥ नानाभिचार विसृष्टसर्वोक्रिया । निद्रावणारुणसमक्षिणदुःप्रघर्ष । रोगघ्नसन्भूतवित्तद मंत्र जाप ॥ ॥ श्रीराम० ॥ ६ ॥ यत्र मंत्रपदक श्रुतिमात्रतोपि । येब्रह्मराक्षसपिशाचगणाश्च भूताः । ते मारिकाश्च भयंयपयांति रुद्रं ॥ श्रीराम० ॥ ७ ॥ त्वं भक्तमानसविभिन्छन्न पूर्तिशक्ता । दीनस्यदुर्मदपपत्नभयार्तिभाजः । इष्टं ममापि परिपूरयपूर्णकाम ॥ श्रीराम०॥ ॥ ८ ॥ इतिश्री हनुमान अष्टकं संपूर्णा ॥

॥ योवेत्ति युगपत्सर्वं प्रत्यक्षेण सदास्वतः ॥

जे भगवान एक कालाविछिन्न सर्व जीवकोटीने तथा ईश्वरकोटीने जाणे छे, ते पण प्रत्यक्षपणे देखे छे, तेमां पण सदाकाल, तेमां पण पोतानी मेलेज पण कोईना कहेवाथी के सांभलवाथी जाणे छे एम नथी.

प्रताप ते भगवाननी उपासनाये करीने अनंतकोटि ब्रह्मादिक देव, तथा सूर्यचंद्रादिक सर्वे तेज सामर्थ्य इत्यादिकने पांम्या छे ते.

४० भगवाननुं कर्त्तापणुं तथा अकर्त्तापणुं तथा अन्यथा कर्त्तापणुं तथा मनुष्य-

भाव तथा दिव्यभाव ते सर्वने यथार्थ जाणता एवा.

भगवानने कर्त्ता केम समजवा तो—भगवाननी दृष्टिने पामी, महापुरुषादिक, अनंतकोटि ब्रह्मांडने सृजे छे. माटे भगवान् कर्त्ता छे १ भगवानने अकर्त्ता केम समजवा, तो—भगवान् पंडे कर्त्ता नथी, प्रकृति पुरुषादिक पासे करावेछे माटे अकर्त्ता छे. भगवानने अन्यथाकर्त्ता केम समजवा, तो—भगवान छे ते, अक्षर धामविना पण पोताना सामर्थ्ये करिने अनंतकोटि मुक्तने धारवा समर्थ छे. जेम-पृथु भगवाने पृथ्वीने कह्युं जे—तने मारीने पण हुं मारा सामर्थ्ये करिने सर्व जगतने धारवा समर्थ छुं. ३ मनुष्यभाव, ते—म-

गवान प्रकट थईने पोतानो दिव्य भाव छे पावी मनुष्यना सरखुं आचारण करे छे ते ४ दिव्यभाव, ते—मनुष्यथी न थई शके एवां चरित्र जे समाधि कराववी, अक्षर धामादिक देखाडवुं इत्यादिक अनंत प्रकारनां अलौकिक चरित्र, मनुष्य देह धारण करिने देखाडे छे ते.

४१ चार प्रकारना प्रलय जे—नित्य प्रलय १ नैमित्तिक प्रलय २ प्राकृत प्रलय ३ ने आत्यंतिक प्रलय ४ तेमने जांणिने अक्षरधाम तथा ते धामने विषे रहि जे महाराजनी मूर्त्ति तथा मुक्त तेविना त्याग करिछे लोक भोगनी इंषणा ते जमण एवा.

४२ च्यार प्रकारनी घांटियो उल्लंघन करिने भगवानने निरंतर भजता एवा.

॥ ते घांटियोनु स्वरूप ॥ अवतारी तथा नारदादि मुक्त अवतार ए बे सरखा समजवा ए अज्ञानरूपघांटी १ एकांतिक सिद्ध दशावाळा साधु, तथा साधन दशावाला साधु ए बे सरखा समजवा एरण अज्ञानरूप बीजी घांटी २ देह अने आत्मा नोखां छतां एक समझय छे ए अज्ञानरूप त्रीजी घांटी ३ सारा नरसा विषय समान छतां सारामां राग रहे छे ए अज्ञानरूप चर्थी घांटी ४.

४३ संतसमागम करवाने विषे तथा भगवान भजवाने विषे घना विघनने न गणिये समुद्र प्रत्ये जती एवी गंगाना जेवो छे वेग ते जनना एवा.

४४ पाणीना परपोटा जेवुं जाण्युं छे देहनुं नाशपणुं ते जेमणे एवा.

४५ स्वप्न माया मनोरथ तथा झांझवानां जल, तेमना जेवुं मिथ्या जाण्युं छे जगत ते जेमणे एवा.

४६ भगवान भजवामां विघन करनारा एवा जे स्वभाव संबंधा तथा पदार्थ तेमनो शत्रुनी पेठे कर्यो छे त्याग ते जेमणे एवा.

४७ भगवानना भक्तना अवगुणनो त्याग करी, सदा गुणमात्रनुं ग्रहण करिने, माहात्म्य सहित तेमनी सदा सेवा करता एवा.

४८ पोतानो अल्पमात्र पण अवगुण होय तेने मोटो जांणी तेने टाळवानो उद्यम करता एवा.

४९ भगवान अने भगवानना भक्त

पोताना उपर प्रसन्न थाय तेम वरत-
नारा एवा.

५० करता पणानो तथा ममतापणानो तथा फलनी इच्छानो त्याग करिने भगवानमा अनुसंधाने सहित सर्वे क्रियाने करता एवा.

५१ क्षमा धारण करी छे पृथ्वीनी पेठे ते जेमणे एवा:

५२ त्याग कर्यो छे रसास्वाद भृंगी ऋषिनुं बंधन जोइने ते जेमणे एवा.

५३ काम जे स्त्रीनी आसक्ति तेनो त्याग कर्यो छे पुरंजननु आख्यान सांभळीने ते जेमणे एवा.

५४ लोभ त्याग कर्यो सहस्रार्जुन तथा वशिष्ठादिकनुं आख्यान सांभलिने ते जेमणे एवा.

५५ भगवाननोज छे आधार, हालर जानवरनी लाकडिना द्रष्टांते करिने ते जेमने एवा.

५६ सुख दुःखना हेतु पोताना मनने जांणीने त्याग कर्यो छे राग द्वेष ते जेमणे एवा.

५७ शुकजीना जेवी दृढ करी छे आत्मनिष्ठा ते जेमणे एवा.

५८ सौभरि ऋषिनुं आख्यान सांभलीने मनना विश्वास न करता एवा.

५९ यादवोनुं निकंदन सांभलीने हांसी मश्करीनो त्याग करता एवा.

६० अलभ्य लाभ मान्यो छे भगवान तथा संतनी प्राप्तिमां कीडी कुंजरना द्रष्टांते करीने ते जेमणे एवा.

६१ सर्व शास्त्रनो सिद्धांत जाणी अहं ममत्व रूप मायानो त्याग करिने भगवानने विषे प्रीति करता एवा.

६२ केवल आत्मरूपे वरतवुं, ते करतां भगवान अने भगवानना भक्तना समागममां रहिने कथा वार्त्ता कीर्त्तनादिक भक्ति करवी तेज अधिक मान्युं छे ते जेमणे एवा.

६३ मरण मान्यु छे भगवानना एकांतिक भक्तनो द्रोह करवो ते जेमणे एवा.

६४ त्रिलोकीना राज्यवैभव माटे पण नथी चलायमान थयुं भगवानना चरणारविंदथी चित्त ते जेमनु एवा.

॥ इति एकांतिक भक्तनां लक्षण समाप्त ॥

गोडी.

लगनी लागीरे मने लगनी लागी ॥ सखी शामळीया संगाथे मारे लगनी लागी ॥ मीठ स्वरे मोहनजीनी मोरळी वाणी ॥ सांभळतांमां चटकी लागी झबकी जागी ॥ लगनी ॥ १ ॥ वृंदावननी वाटे चाली कुळ लज्जा त्यागी ॥ वांसळी वजाडतां जोया शाम सोहागी ॥ लगनी ॥ २ ॥ रशीया संगे रमतां सर्वे भ्रमना भागी ॥ मेंतो अखंड सोहाग्य लीधो मुखडे मागी ॥ लगनी ॥ ३ ॥ मुक्तानंद कहे पल एक न्यारा न मेलुं वाहालो ॥ शीरने साटे कपांथी मळे नंदनो लालो ॥ लगनी ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥

गीरधारीरे सखी गीरधारी ॥ मारे नीरभे अखुट नाणुं गीरधारी ॥ खरच्युं ना खुटे एने चोर न लुटे ॥ दामनी पेठे ए गांठे बांध्यु ना छुटे ॥ गीरधारी ॥ १॥ अणगल नाणुं संची अंते नीरधनीयां जाये ॥ तेनी पेठे नीरभे नाणुं दुर न थाये ॥ गीरधारी ॥ २ ॥ संपत्य वीपत्य सर्वे सुपनुं जाणुं ॥ हरीना चरणनी सेवा पुरण भाग्य प्रमाणुं गीरधारी ॥ ३ ॥ मुक्तानंद के मोहन वरने उरमां धारी ॥ हवे दुःख ने दारिद्र थकी थइ हुं न्यारी गीरधारी ॥ ४ ॥ पद ॥ २ ॥

सुख पामीरे सखी सुख पामी ॥ हुं तो स्यामळीयाने शरणे जातां सुख पामी ॥ शरनांगतने पाळे सदा बहु नामी ॥ मारे

हरीनो उपर हाथ कशी न रही स्वामी ॥
सुख ॥ १ ॥ तप ने तीरथ मेंतो कांइ न
कीधुं ॥ मारे घेर बेठां शाम थकी कारज
सीधुं ॥ सुख ॥ २ ॥ संसारीनुं सुखडुं
जुठु आवे ने जाये ॥ हरीनो अखंड सो-
हाग्य केदी काळ न खाये ॥ सुख ॥ ३ ॥
मुक्तानंद कहे हरी हरीजननी गती छे
न्यारी ॥ एने देह दरशी देखे पोता जेवा
संसारी ॥ सुख ॥ ४ पद ॥ ३ ॥

छेल छोगाळोरे मीठी मोरलीवाळो ॥
मारे मंदीरे पधारे नित छेल छोगाळो ॥
हसतां हसतां मुजने देखी आनंद पामे ॥
एनी करुणानी द्रष्टी सर्वे दुखडां वामे ॥
छेल ॥ १ ॥ मोतीडांनी माळा पेरी मल-
पंतो आवे ॥ मावुं त्यां संगाते मारे प्रेम-

शुं गावे ॥ छेल ॥ २ ॥ में वालो वस कीधा मुजने वाले वस कीधी ॥ अम-सामी पान बीडी दीधी ते लीधी ॥ छेल ॥ ३ ॥ मुक्तानंद के मोहन संगे लाभ घणो लीधो ॥ मुखडेथी तंबोळ मुजने मेर करी दीधो ॥ छेल ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥

शामनी छबीरे सखी शामनी छबी ॥ जोने फुलडेथी छाइ सखी शामनी छबी ॥ टेक ॥ १ ॥ फुलडाना तोरानी फोरे भ्रमर करे गुंजार ॥ अंगोअंग हरीने शोभे फुलडाना सणगार ॥ शामनी ॥ २ ॥ कांनोमें फुलडानां कुंडळ फुलाना भुजबंध ॥ फुल तणा गजरा फावे छे सुंदर मांइ सुगंध ॥ शामनी ॥ ३ ॥ फुलतणो शिर मुगट जोइने मगन फरे व्रजनार ॥ फुल-

वणी शोभापर जाये ब्रह्मानंद बलहार ॥ शामनी ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥

फुलनी माळारे शोभे फुलनी माळा ॥ बेनी सुंदरवरने शोभे गळे फुलनी माळा ॥ टेक ॥ १ ॥ नवल कुसंबी पटका उपर तोरे हद वाळी ॥ फुलनी पछोडी ओढी उभा वनमाळी ॥ फुलनी ॥ २ ॥ फुलडानी वयजंनी माळा हरीवरने फावे ॥ ए माळान जोवा सारु इंद्रादिक आवे ॥ फुलनी ॥ ३ ॥ फुल कलंगी माथे लटके छबी नौतम भारी ॥ ब्रह्मानंदके नटवर मुरति नेणुमां धारी ॥ फुलनी ॥ ४ ॥ पद ॥ २ ॥

फुलनी बांधीरे पोंची फुलनी बांधी ॥ हेलि नटवरजीने हाथे पोंची फुलनी बां-

धी ॥ टेक ॥ १ ॥ फुल तणां छोगळियां फरतां मल्यां मरमाळां कानो उपर फुलडां खोस्यां लागे रुपाळां ॥ फूलनी ॥ २ ॥ फूल दडो उछाळे वालो लटके मन लेवा ॥ ए लटकाने जोवा आवे ब्रह्मादिक जेवा ॥ फूलनी ॥ ३ ॥ फूलडांनी टोपी गुंथीने प्रेमे पेरावी ॥ ब्रह्मानंद के ए छबी में तो अंतर ठेरावी ॥ फूलनी ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥

मन मारुं मोयुं रे हेली मन मारुं मोयुं ॥ एनी फुलडांनी शोभा जोइने मन मारुं मोयुं ॥ टेक ॥ १ ॥ फुलडाना गजरा धारया सुंदरवर छेले ॥ जे गजरानी फोरे भ्रमरा केडो न मेलं ॥ मन ॥ २ ॥ फुलडां केरा तोरा पेर्या व्रजजीवन वाले ।

भुधरजी फुल्याने भारे लटकंता चाले ॥ मन ॥ ३ ॥ अलबेलाने सर्वे अंगे फुली फुल वाडी ॥ ब्रह्मानंदके ए छबिजोवा आवे सौ दाडी ॥ मन ॥ ४ ॥ पद ॥४॥

जय सदगुरुस्वामी जय सदगुरुस्वामी सहजानंद दयाळु बळंवत बहुनामी जयदेव । जयदेव । टेक ॥ १ ॥ चरण सरोज तमारां, वंदु कर जोडी; चरणे चीत धर्योथी, दुख नाख्यां तोडी ॥ जय २ ॥ नारायण नर भ्राता, द्वीजकुल तनुधारी; पामर पतीत ओधार्या, अगणीत नरनारी ॥ जय ३ ॥ नीत नीत गौतम लीला, करता अविनाशी; अडसट तीरथ चरणे कोटी गया काशी । जय ४ । पुरुषोतम परगटनुं जे दरशन करशे; काळ करमथी

छुटी कुटुंब सहीत तरझे । जय २ । आ अवसर करुणानीधी, करुणा बहु कीधी; मुक्तानंद कहे मुक्ती, सुगम करी सीधी ॥ जय ३ ॥ पद १ ॥

॥ संध्या आरती ॥

आरती प्रगट प्रभुजीकी की कीजे॥चरणकमळ लखी अंतरलीजे ॥ सनकादीक नारद श्रीपुरारी॥वीमळनाम रटे वारंवारी॥आ. १॥ अनंतकोटी भुवनेश भवानी॥सब वीधी महीमाशकतनही जानी ॥ आ. २ ॥ धरत ध्यानदृढ योगमुनेश्वर ॥ सेससहस्र मुखरटत नीरंतर ॥आ. ३॥ नरनाटक क्षर अक्षर न्यारा ॥ पुरुषोतम पूरण जन प्यारा ॥आ.

४॥ नौतम रुप अकळ छबी न्यारी॥ब्रह्मा-
नंद जावत बलीहारी ॥ आ. ५ ॥

॥संध्या आरती समयनी धून्य. ॥

रामकृष्ण गोविंद जय जय गोविंद ॥
हरे राम गोविंद, जय जय गोविंद ।
नारायण हरे, श्रीमन्नारायण हरे ॥ श्री-
मन्नारायण हरे कृष्नदेव हरे जय जय
कृष्नदेव हरे ॥ वासुदेव हरे, जय जय
वासुदेव हरे ॥ जय जय वासुदेव हरे,
वासुदेव गोविंद ॥ जय जय वासुदेव गो-
विंद । राधे गोविंद, जय राधे गोविंद ।
वृंद्रावन चंद, जय राधे गोविंद । माधव
मुकंदजय मा. । आनंद कंद, जय माधव
मुकंद ॥ स्वामिनारायण । स्वामिनारायण

॥ स्वामिनारायण ॥

अथ राधिका कृष्णाष्टक.

नवीन जीमूत समान वर्णम् ॥ रत्नोल्लसत्कुंडल शोभि कर्णम् ॥ महा किरीटाग्र मयूर पर्णम् श्रीराधाकृष्णमहं नमामि ॥ १ ॥ निधाय पाणि द्वितयेन वेणुं ॥ निजाधरे शेखरपातरेणुं । निनादयं तंचगवो करेणुं ॥ श्री० ॥ २ ॥ विशुद्ध हेमोज्वल पीत वस्त्रं ॥ हतारियूथंच विनापि शस्त्रं व्यर्थीकृतानेक सुर द्विडस्त्रं श्री०॥३॥अधर्म विण्पादित साधुपालम् ॥ सद्धर्म वैरासुर संघ कालम् ॥ पुष्पादि मालं व्रजराज बालम् ॥ श्री०॥ ४ ॥ गोपी प्रियारंभित

रास खेलं ॥ रासेश्वरी रंजन कृत्महलं ॥ स्कंधोल्लस त्कुंकुमचिन्हचेलं ॥ श्री० ॥ ५ ॥ वृंदावने प्रीततयावसंतं ॥ निजाश्रिताना पद मुद्धरंतं ॥ गोगोपगोपीरभिनंदयंतं ॥ श्री० ॥ ६ ॥ विश्व द्विषन्मनूमथदर्पहारं ॥ संसारी जीवाश्रयणीय सारं ॥ सदैवसत्पुरुष सौख्यकारं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ आनंदितात्मा व्रजवासी तोकं ॥ नंदादिसंदर्शित दिव्यलोकं ॥ विनाशितस्वाश्रित जीवशोकं ॥ श्री० ८ ॥

॥ स्तुति दोहा. ॥

निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चे तव घनश्याम महात्म ज्ञान जुत भक्ति तव एकां-

तिक सुखधाम ॥१॥ मोहिमे तव भक्तपनो, वामे कोइ प्रकार; रोष न रहे काइ जातको, सुनियो धर्म कुमार ॥ २ ॥ तुमारो तव हरिभक्तको, द्रोह कबु नहि होय, एकांतिक तव दासको, दिजे समागम मोय ॥ ३ ॥ नाथ निरंतर दर्श तव, तव दासनको दास, एहिमागुं करी विनयहरि, सदा रास्वीयां पास ॥ ४ ॥ हे कृपालु हे भक्तपती, भक्तवछळ सुनो बात; दयासिंधु स्तवन करि; मागु वस्तु सात ॥ ५ ॥ सहजानंद महाराजके, सब सतसंगी सुजाण ताकुं द्रढ होय वर्तनो शिक्षापत्रि प्रमाण ॥६॥ सोपत्रिमें अति बडे, नियम एकादश जोप; ताकि विधि कहतहु, सुनियो सवचित्त प्रोप ॥७॥ हिंसा न करनि जंतकी

परस्त्री संगको त्याग; मांस नखावत मधकु, पीवत नहि बडभाग ॥८॥ विधवाकुं परसत नहि करत नहि आत्मघात, चोरी न करनि काहुकी, कलंक न कोउकुं लगात ॥ ९ ॥ निंदत नहि कोय देवकुं, बिन खपतो नहि खात; विमुख जिवके वदनसें, कथा सूनि नहि जात ॥१०॥ एहि विधि धर्म समीपमें वरतो सब हरिदास: भजोश्री सहजानंद पद, छोडी ओर सब आस ॥११॥ रहि एकादश नीममें, करो श्रीहरि पद प्रीत; प्रेमानंद कहे धाममें, जाओ निशंक जगजित ॥ १२ ॥

॥ अथाष्टकानि लिख्यन्ते ॥

श्री वासुदेव विमळामृत धामवासं ना-

रायणं नरक तारण नामधेयं ॥ श्यामं सितं द्विभुजमेव चतुर्भुजंच त्वां भक्तिधर्म तनयं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥ शिक्षार्थमंत्रनिजभक्ति मतां नराणा मेकांत धर्म मखिलं परिशीलयंतं ॥ अष्टांग योग कलनाश्च महाव्रतानि ॥ त्वां ॥ २ ॥ श्वासेन साकमनुलोम विलोम वृत्या स्वांतर्बहिश्च भगवत्पुरुधा निजस्य ॥ पूरे गतागत जलांबुधिनोपमेयं । त्वां ॥ ३ ॥ वाह्यां तरिंद्रिय गणश्वसनाधि दैव वृत्युद्भवस्थिति लयानपि जायमानान् ॥ स्थित्वा ततः स्वमहसा प्रथगी क्षमाण ॥ त्वां ॥ ४ ॥ माषामया कृतितमो शुभवासनानां कर्तुं निषेध मुरुधा भगवत्स्वरूपे । निर्बीज सांख्य मतयोगस्तु युक्तिभाजं ॥ त्वां ॥ ५ ॥ दि-

व्याकृतित्व सुमहस्त्व सुवासनानां सम्य-
ग्विधिं प्रथयितुं चपतौ रमायाः । सालंब
सांख्य पथयोगा सुयुक्तिभाजं । त्वां ॥६ ॥
कामार्ते तस्कर नट व्यसनि द्विषंतः स्व-
स्वार्थ सिद्धिमिव चेतसि नित्यमेव ॥ ना-
रायणं परमयैव मुदास्मरंतं । त्वां ॥ ७ ॥
साध्वीचकोर शलभा स्तिमि कालकंठ को-
का निजेष्ट विषयेषु यथैव लग्नाः । मूर्तौ-
तथा भगवतोऽत्रमुदातिलग्नं । त्वां ॥ ८ ॥
स्नेहातुर स्त्वथ भयातुर आमपावी यद्व-
त्क्षुधातुर जनश्चविहाय मानं । दैन्यं भजं-
युरिहसत्सु तथा चरंतं । त्वां ॥ ९ ॥ ध-
र्मस्थितै रुपगतै र्वृहतानिजैक्यंसेव्योहरिः
सितमहः स्थित दिव्यमूर्तेः । शब्दाद्यरा-
गिभिरिति स्वमतं वदंतं ॥ त्वां ॥ १० ॥

सद्ग्रंथ नित्य पठन श्रवणादिसक्तं ब्राह्मी-
चसत्सदशिशासतमत्रविद्यां ॥ संसारजा-
लपतिताखिलजीवबंधो ॥ त्वां ॥ ११ ॥
धर्मं स्न्याज्यो नकैश्चित्स्वनिगमविहितो
वासुदेवेचभक्ति र्दिंपाकारे विधेया सि-
तघनमहसि ब्रह्मणैक्यं निजस्य निश्चित्यै-
वान्य वस्तुन्यणुमपि चरतिं संपरित्यज्य-
संतस्तन्माहात्म्पाय सेव्या इति वदति
निजान्धार्मिको नीलकंठः ॥ १२ ॥ दृष्टा
स्पृष्टानता वाकृतपरिचरणा भोजिताः पू-
जिता वासद्यः पुंसामघौघं बहुजनिजनितं
घ्नन्तिये वै समूलम् । प्रोक्ताः कृष्णेनये वा
निज हृदयसमा यत्पदे तीर्थजातं तेषां
मातः प्रसंगात्किमिह ननुसतां दुर्लभं स्या-
न्मुमुक्षोः ॥ १३ ॥

प्राभूद्वार्त्ता प्रवाहो मितहरियशसां पापताप प्रणाशो दिव्यानां यन्मुखेंदोरिवतुहिनगिरेः पूर्णगंगाप्रवाहः तनि वेंदांति तुच्छी कृतसकल महा लोक भोगं पवित्रं। मुक्तानंदाभिधानं मुनिवर मनघं नौमिसद्वृंदमुख्यम् ॥ १ ॥ योगाभ्यासं नितांतंकलितसुज्ञान गमादि श्रुतार्थं कृतार्थं प्रीत्यै श्रीधर्म सूनोर्विद धतमनिशं स्वामिनाः रायणस्य। गोपालानंद संज्ञं मुनिवरमनघं रक्षितैकांत धर्मं। वंदे नित्यं शरणं प्रतिहृतजनता ज्ञानसज्ञांध कारम् ॥ १ ॥

चक्रे नित्यं कथां यः प्रगट भगवतः सन्निधाने मनोज्ञां। यस्मै प्रादात्प्रसन्नो निजधृतवसनादीन्य सौपूर्ण कामः जेतायः पंडितानां जगति विवदतां देवताचार्य-

वक्ता नित्यानंदमुनींद्रंत मनुदिनमहं नौमि भक्ति प्रधानम् ॥ २ ॥

महाध्यानाभ्यासं विदधत मजस्रं भगवतः पवित्रे संप्राप्तं स्थिति मतिवरै कांतिकवृषे । सदानंदं सारं परमहरि वार्त्ता व्यसनिनं गुणातीतानंदं मुनिवर महं नौमि सततम् ॥ १ ॥

जनानामाप्तानांस्त्वमिहशरणं स्थापन तथा हरेः रैकांतिक्यं जगतिननु भक्तौ वृषभुवः । हरिर्यस्मिन्प्रीतः सभृगमभवत्तंशुभगुणं नमाम्याचार्येंदुममहि रघुवीरं गुरुमहम् ॥ २ ॥

रघुवीर देशिक सुताय ।
प्रवर गुण नीति शालिने
नौमिपरम पटवे गुरवे

भगवत्प्रसाद शुभनामधारिणे ॥ ३ ॥
भवसंभव भीति भेदनं सुख संपत्व र ण॥
निकेतनं ॥ व्रतदान तपः क्रिया फल ॥
सहजानंद गुरुं भजे सदा ॥ १ ॥ करु-
णामय चारुलोचनं शरणायात[illegible]
मोचनं पतितोद्धरणाय तत्परं ॥ सह०
॥ २ ॥ निजतत्व पथाव बोधनं जनता-
याः स्वतएव दुर्गमम् ॥ इति चिंत्य गृहीत
विग्रहं ॥ सह० ॥ ३ ॥ विधि शंभु मुखं र-
निग्रहं भवपाथोधिपरिभ्रमाकुलं उपदिधा-
र्यमनो नरः प्रभं ॥ सह० ॥ ४ ॥ निज-
पादपयोजकीर्त्तनं सततंस्याद्भवजीवगोचरं।
इतियः कुरुते क्रतू त्सवं ॥ सह० ॥ ५ ॥
बहिरीक्षण लोक मानुषं गिजदत्तां वकद-
र्शिनां हरिं ॥ भजनीय पदं जगद्गुरुम् ॥

सह० ॥ ६ ॥ शरणागतपाप पर्वतं नग-
यत्येवतदीय सद्गुणं ॥ अणुमप्यतुलंहिम-
न्यते ॥ सह० ॥ ॥ ७ ॥ भगवारिधि मो-
क्षसाधनं गुरुराज प्रकटस्व संगमम् ॥ प्र-
कटी कृतवान् कृपावशः ॥ सह० ॥ ८ ॥

भगवन् कृपया त्वयाकृतं जनताया मुप
कारमीदृशम् ॥ क्षमते प्रति कर्तु मत्रकः
कुरुते दीनजन स्ततोऽञ्जलिम् ॥ १ ॥

संवत् १८७६ ना मागसर सुदी ४
चतुर्थीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा
मध्ये दादाखाचरना दरबारमां साधुनी
आपगाने विषे सत्रिने समे पधारया हता
अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण करयां हतां
ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य साधु
तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराइने

बेठि हति पछे श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्युं
जे सर्वे साधनमां कियुं साधन कठण छे
तारे सर्व ब्रह्मचारि साधु तथा गृहस्थ
तेमणे पोतानि समझण्य प्रमाणे उत्तर क-
र्‍यो पण थयो नहि पछे श्रीजिमहाराज
बोल्या जेल्यो अमे उत्तर करिये जे भ-
गवानना स्वरूपमां मननी अखंड व्रत्ति
राखवी तेथी कोइ साधन कठण नथि
अने जे मनुष्यना मननि व्रत्ति भगवानना
स्वरूपमां अखंड रहे छे तेने तेथि बिजी
अधिक प्राप्ति शास्त्रमां कहि नथि कांजे
भगवाननि मूर्त्ति छे तेतो चिंतामणि तुल्य
छे जेम चिंतामणि कोइक पुरुषना हाथमां
होय ते पुरुष जे जे पदार्थने चिंतवे ते ते
प्राप्त थाय छे तेम भगवाननि मूर्त्तिने विषे

जेना मननि अखंड व्रत्ति रहे छे ते तो जीव ईश्वर मायाने ब्रह्म एमना स्वरूपने जो जोवाने ईछे तो तत्काल देखे छे तथा वैकुंठगोलोक ब्रह्ममोहोल ए आदिक जे जे भगववानना धाम छे तेने पण देखेछ माटे भगवानना स्वरूपमां अखंड व्रत्ति राखवि तेथि कोइ कठण साधन पण नथि ने तेथि कोइ मोटि प्राप्ति पण नथि तार पछे हरिभक्त सेठ गोवर्धन भाइये श्रीजि-महाराज प्रत्य प्रश्न पुछयुं जे जेने भग-वाननि माया कहे छे तेनुं रूप शुंछे पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननि मूर्त्तिनुं ध्यान करते जे पदार्थ आड आविने आवर्ण करे तेने माया कहिये पछे मुक्तानंद स्वामिये प्रश्न

पुछ्युं जे भगवाननो भक्त ज्यारे पंचभूतना देहने मुकिने भगवानना धाममां जाय छे तारे ते केवा देहने पांमेछे तारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे धर्मकुलने आश्रित एवो जे भगवाननो भक्त छे ते भगवाननि इछाये करिने ब्रह्ममय देहने पांमे छे अने ज्यारे देहने मुकिजे भगवानना धाम प्रत्ये जाय छे तारे कोइक तो गरुड उपरत्य बेसिने जाय छे ने कोइक तो रथ उपरत्य बेसिने जाय छे ने कोइक तो विमान उपरत्य बेसिने जाय छे एवि रित्ये भगवानना भक्त भगवानना धाममां जाय छे तेने योग समाधि वाला छे ते प्रत्यक्ष देखेछे पछे हरिभक्त ठकर हरजिये श्रीजिमहाराजने पुछ्युं जे केटलाक तो

घणा दिवसथि सत्संग करे छे तोपण तेने जेवि पोताना देहने देहना संबंधिने विषे गाढ प्रीति छे तेवि सत्संगमां गाढ प्रीति नथि थाति तेनुं शुं कारण छे पछे श्री-जिमहाराज बोल्या जे एने भगवाननुं माहात्म्य संपूर्ण जाण्यामां आव्युं नथि अने जे साधुने संगे करिने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जांण्यामां आवे छे ते साधु ज्यारे पोताना स्वभाव उपरच्य वात करेछे त्यारे ते स्वभावने मुकि सकतो नथि ने ते वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण लेछे ते पापे करिने सत्संगमां गाढ प्रीति थाति नथि कांजे अन्य स्थलने विषे जे पाप कर्यां होय ते संतने संगे करिने जाय अने संतने विषे जे पाप करे छे ते पाप

वो एक संतना अनुग्रह विना बिजा कोइ साधने करिने टलतां नथि ते शास्त्रमां कह्युं छे जे अन्यक्षेत्रे कृतंपापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपोभविष्यति १ ते माटे संतना अवगुण जो न ले वो एने सत्संगमां दृढ प्रीति थाय॥

॥ इतिवचनामृतम् ॥

॥ संवत् १८८६ ना अषाढ वदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बारन्य ओरडानि ओसरिये विराजमान हता ने सर्वेश्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठि हति पछे श्रीजिमहाराजेसर्वे

परमहंस तथा सर्वे सत्संगि आगल्य वार्त्ता करि जे भगवाननी माया ते केइ छे तो देहने विषे अहंबुद्धि ने देहसंबंधि पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि एज माया छे ते ए मायाने टालवी ने ए मायाने जेणे टाली ते मायाने तर्‍यो केवाय ने ए मायाने टालीने भगवानमां प्रीतिकरवी एटलुं सर्वे शास्त्रनुं सिद्धांत छे तेने आज समझो के घणे दिवसे करिने समझो अने हनुमान नारदप्रल्हाद एजे मोटामोटा भगवानना भक्त तेमणे पण भगवान पासे एमज माग्युं छे जे अहंममत्वरूप माया थकी रक्षा करज्योने तमारे विषे प्रीति थाज्यो ने ए मायाने तर्‍या होय ने तमारे विषे प्रीति वाला होय एवा जे साधु तेनो संग था-

ज्यो ने ए साधुने विषे हेत ने ममत्व थाज्यो माटे आपणे पण एम करवुं ने एम मागवुं ने एनो श्रवण मनन निदिध्यास करवो अने भगवानना जे भक्त होय तेने आत्म-निष्ठानुंबल तथा भगवानना माहात्म्यनुं बल ए बे बल जोईये ते आत्मनिष्ठा ते शुं तो पोताना आत्माने देहथि पृथक जांणवो अने साधु भेला रेहेता होईये ते-मां परस्पर कोईक निमित्त बोला चालि थाय तथा कोईक जात्यनो अहंममत्वथाय तथा मानक्रोध स्वादलोभ काम मत्सर्ईर्षा ए आदिक अवगुणनि प्रवृत्ति थाय तारे जो आत्मा पोताने न जांणता होईये तो साधुनो अवगुण आवे तेमांथि एनुं बहु भुंडुं थाय माटे पोताने देहथि पृथक आ-

त्यां जांणवो ने ते आत्मा छे ते ब्राह्मण नथी क्षत्रि नथि कणबी नथी कोईनो दीकरो नथि कोईनो बाप नथी एंनि कोई जात्य नथी नात्य नथी एवो छे अने ए आत्मा तो सूर्य तथा अग्नि जेवो तेजस्वी छे ने जांण पणे जुक्त छे ने ते अग्निनीज्वाला तथा सूर्यना किरण ते जो जड छे केम जे तेने आंगली अडाडीये तोखसे नही ने कीडी होय ने तेने आंगली अडाडीये तो खसीने अवली चाले माटे आत्मा ते जांण पणे जुक्त छे ने एने सूर्य अग्नि जेवो कहिये छैये ते तो एनो आकार एवो तेजस्वी छे ते माटे कहीयेछैये अने ए आत्मा अनेक योनिने पांम्यो छे अने एम केवाय जे जेटलुं समुद्रनुं पाणि

छे तेटलुं ए जीव पोतानी मातानुं दुध धाव्यो छे अने त्यां त्यां अनेक प्रकारे मरांणो छे तो पण मर्‍यो नथि जेवो छे तेवोने तेवोज छे ने ए अज्ञान अवस्थामां पोताने देहरूपे मांनतो हतो तारे पण न मर्‍यो तो हवे आपणे एनुं ज्ञान थयुं तारे तो ए केम मरशे एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मांनवुं अने भगवाननुं माहात्म्य केम जांणवुं तो भगवान छे ते अनेक ब्रह्मांडना राजाधिराज छे अने जे ब्रह्मांडना ए राजा छे ते ब्रह्मांडनि पण गणती नथी ते कह्युं छे जे ॥श्लोक ॥ द्युपतय एवन तेप गुरंतम नंततया ०॥ अने वे एक एक ब्रह्मांडमां ब्रह्माविश्नुशिव होय तथा सातद्वीप सातसमुद्र मेरु लोकालोक

आदिपर्वत तेणे जुक्त पृथ्वीनि रचना होय तथा चौदलोकनि रचना होय तथा अष्ट आवरणनी रचना होय इत्यादिक साम- ग्रीये सांतांजे अनेक ब्रह्मांड तेना राजा भगवान छे ने जेम आ पृथ्वीने चक्रव- र्त्ती राजा होय ने ते राजानां जे गांमडां ने तो गणाय एवां होयतो पण तेनी के ट्ली मोट्यप जांण्यामां आवे छे ने भग- वानने तो एवा ब्रह्मांडनी पण गणती नथी माटे भगवाननी तो बहुज मोट्यप छे अने ते ब्रह्मांडने विषे आ जीव छे ते भगवाननी आगल्य शालेखामां छे कांइ नथी अतितुछ छे अने ते भगवाने ए ब्र- ह्मांडने विषे पंच विषय संबंधि सुखजीवुंने आप्युं छे ते सुख केवुं छे तो ए सुखने सारु

केटलाक पोतानां माथां कपावे छे एवुं महा-
दुर्लभ जेवुं जणायछे तारे पोतानि मूर्तिमां
तथा पोताना धाममां जे सुख छे तेतो बहु
भारेछे अने प्राकृतविषय सुखछ तेतो अन्य-
पदार्थने आशरीने रह्युंछे तथा पृथक पृथक
छे अने जे भगवानछे तेतो सर्वे सुखमात्रना
राशि छे ने ए भगवान संबंधि जे सुख
छे ते अविनाशि छे ने महा अलौकीक
छे अने जेम कांइक भारे धनाढ्य ग्रहस्थ
होय ते पोताना घरमां अनेक प्रकारनां
भोजन जमतो होय ने ते जमीनो उछिष्ट
कांइक बटकु रोटलो वधे ते कुतराने नांखे
तारे ते अतिशे तुच्छ केवाय ने पोते ज-
मतो होय ते महा दुर्लभ केवाय तेम
भगवाने ब्रह्मांडने विषे अनेक जीवुंने

पंच विषय संबंधि सुख आप्युं छे तेतो कुतराने नांख्यो जे बटकुं रोटलो तेनी पेठे अति तुच्छ छे ने पोताने विषे जे सुख छे ते तो तो महा मोटुं छे अने वली सुषुप्ति अवस्थाने विषे ए जीवने भगवान मोटुं सुख पमाडे छे ते गमे तेवी वेदना थै होय ने सुषुप्तिमां जाय तारे सुखीयो थई जाय छे अने वली ए भगवानना चरण कमलनी रजने ब्रह्मा शिव लक्ष्मीजि राधाजी नारद शुकसनकादिक नव योगेश्वर एवा एवा मोटा छे ते पण पोताना मस्तक उपरय चढावे छे ने मानने मुक्तिने ए भगवाननि निरंतर भक्ति कर्या करे छे अने वली ए भगवाने जगतमां विचित्र सृष्टि केवि करि छे ने तेमां केवुं डापण

करयुं छे जे जुवोने मांणसमांथि मांणस थाय छे पशुमांथि पशु थायछे झाडमांथि झाड थाय छे कीडामांथि कीडो थाय छे ने मांणसना अंगमांथि कोईक अंगनो भंग थई गयो होय ने गमे तेवो डायो होय तो पण ते अंगने तेवुंने तेवुं करवाने समर्थ कोई रित्ये नज थाय इत्यादिक अनेक कला भगवानमां रहि छे एवि रित्ये भगवाननुं माहात्म्य जांणीने तथा भगवानने सुखमय मूर्त्ति जांणीने बिजा सर्व पदार्थमां वैराग्य थाय छे ने एक भगवानमां जे प्रीति थाय छे अने एवि रित्ये प्रथम कह्युं जे पोताना जीवात्मानुं ज्ञान तथा भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान ए बे जेने सिद्ध थयां होय ने ते जो गमे तेवा

पंच विषय संबंधि सुखमां कदाचित बंधाई गयो होय तोपण तेमां बंधाइ रहे नही तेने तोडीने नीकलीज रहे छे अने जे विषयना सुखनो त्याग करिने वरततो होय ने ते न बंधाय एमां ते शुं केवुं माटे ए बे प्रकारना ज्ञानने सांभलीने एनो पोताना मनमां वेग लगाडी देवो जेम कोईक शुरवीर ने आकरो मांणस होय ने तेनो कोईक प्रति पक्षी होय तेणे तेनो बाप मारी नांख्यो होय तो तेनी तेने बहु दाझ थाय ने ते दाझ्य थाती होय ने वली तेनो दीकरो मारी नांखे ने वली भाईने मारी नांखे ने वली बायडीने लेई जाय ने वली माने लेईने मुसलमानने आपे ने वली गाम गरास

श्रुटी ले एवि रित्ये जेम जेम एनो पराभव करे तेम तेम एने बहु मनमां दाज्य थाय ने जाग्रत स्वप्नमां सर्व काले एने ए वात-वोज आलोच रहे तेम जेने आ बे वात नो निरंतर आलोच रहे तारे एने ए ज्ञान सिद्ध थाय अने एने गमे तेवो आ-पत्काल पडे तो तेने विषे एनि सहाय करे अने जेम विशल्य करणी औषधी लवीन हनुमानजीये रामचंद्रने पीवाडी तारे जे देहमां शल्यलागां हतां ते सर्वे एनि मल देहथि बाहेर नीकली गयां तेम जेने आ बे वात मनमां लागी गइ होय तेने इंद्रियोने विषय भोगनी इच्छा रहिछे ए शल्य छे ते सर्वे नीकली जाय केतां विषय भोगमांथि एनि इंद्रियोनि वृत्ति

निकलिने एक भगवानमां वलगे अने सत्संगि पण एनेज कहीये केमजे सत्य रूप एवो जे पोतानो आत्मा तथा सत्य रूप एवा जे भगवान तेनो जे आवि रित्ये संग थयो तेने सत्संगि कहीये अने आ बे प्रकारे जे वार्त्ता छे तेने दैवी जीव सांभले तारे तेना हृदयमां लागीने रग रगमां प्रवरती जाय ने जे आसुरी जीव होय ने ते सांभले तारे तेने तो कांनथि बाहेरज नीकली जाय पण हृदयमां उतरे नहीं जेम स्वांन होय ने ते खीर खाय ते तेना पेटमां रहेज नहीं वमन थै जाय ने खीर जेवु कांइ भोजन सरस न केवाय तोपण ते स्वानना पेटमां रहिने [illegible] प्रवरत्ते नहीं ने ते खीरने मांणस खाय तारे

तेने पेटमां रहे ने रगरगमां प्रवरते ने बहु सुख थाय तेम स्वांन जेवो जे आसुरी जीव तैना हृदयमां तो आ वात पेसेज नही ने मांणस जेवो जे दैवी जीव तेना हृदयमां उतरे ने रगरगमां व्यापी जाय अने वली जे भगवान छ ते जेवा तो ए एकज छे ने भगवानने भजि भजिने घणा भगवानना साधर्म्य पणाने पांम्या छ तो पण ते भगवान जेवा तो थाता नथी ने जो ए भगवान जेवाज थाय तो तो भगवान धणाक थाय तारे तो जगतनी स्थिति ते एक जात्यनिज न रहे केमजे एक भगवान कहेशे हुं जगतनी उत्पत्ति करिश ने बिजो कहेशे हुं जगतनो प्रलय करिश अने वली एक भगवान कहेशे हुं वरसात

करीश ने बिजो कहेशे हुं नही करु ने एक कहेशे हुं माणसना धर्म पशुमां करीश ने बिजो कहेश हुं पशुना धर्म मांणसमां करीश एवि रित्ये स्थिति न रहे अने आतो जुवोने जगतमां केवि रित्ये बराबर अदल प्रमाणे सर्व क्रियानि प्रवृत्ति थायछे पण तुल भार पण फर पडतो नथी माटे सर्व क्रियाना प्रवरतावनाराने सर्वना स्वामि एकज भगवान छे तथा भगवान संघाथे बिजाने दाव बंधाय एम पण जणातुं नथी माटे भगवान ते एकज छे पण बिजो एजेवो थातो नथी अने आ सर्वे वात करिवे थोडीक छे पण एमां सर्वे वात आवि गई अने आ वातनुं जे रहस्य छे ते जे डाघो होय तेने समझाय पण बिजाने स-

मझाय नहि अने आटली वात समझीने जेण दृढ करी तेने सर्व वात संपूर्ण थई एने कांइ करवुं बाकी न रह्युं अने आवि रित्ये जे अमे वात करि तेने सांभलिने ने ते वातनि जे भगवानना भक्तने दृढता होय तेनो संग राखवो तो एने आ वार्त्ता नि दिवसे दिवसे दृढता थाति जाय अने आ वात अमे करिये छैये ते कांइ बुद्धि-नि कल्पनाये नथी करता तथा सिद्धाई जणाववा सारु नथी करता आतो अमारि अजमावेल वात छे ने जेम अमे वरतीये छैये तेमे वात करिये छैये केम जे अमारे स्त्री धनादिक पदार्थनो भारे जोगछे तथा सुरत अमदावाद वडोदरे वरताल्ये जाईये छैये तारे हजारो माणस भेगां थाय छे

ने ते मांने छे तथा वाजते गाजते अति सन्मान करिने पधरावे छे तथा त्यां त्यां मारे मारे जायगाओ जोवामां आवे छे तथा मारे वस्त्र वाहनादिकनो जोग थाय छे ए सर्वे छे तथापि पोताना आत्मा सांमी द्रष्टि करिये छैये तथा भगवानना माहात्म्य सांमि द्रष्टि करिये छैये तारे ए सर्वेनुं अति तुछपणुं थै जाय छे ने एमां कोई ठेकांणे बंधाई जवातुं नथी ने पूर्वे देहनि जेम विस्मृति छे तेम ए सर्वेनि विस्मृति थै जाय छे माटे ए बे वात अमारे सिद्ध थई छे ते सारु एम अमारे वरताये छे अने बिजो पण जो ए बे वातने सिद्ध करे तो तेने कदाचित एवो कांईक जोग थई जाय तोपण एने एम

वरताय माटे आ वात अवश्य समजवानि छे एवि रित्ये श्रीजिमहाराजे कृपा करिने बिजाने समझाववा सारु पोतानुं वरतन लेईने वार्त्ता करि ने पोते तो साक्षात श्री पुरुषोत्तम नारायण छे ॥

॥ इतिवचनामृतं ॥ ३९ ॥

॥ श्रीपतिंश्रीधरं सर्वदेवेश्वरं भक्तिधर्मात्मजंवासुदेवंहरिं ॥ माधवंकेशवंकामदंकारणंस्वामिनारायणंनीलकंठंभजे ॥१॥ अर्थः ॥ श्री एटले लक्ष्मि तेना पति एवा—श्री एटले लक्ष्मि तेने धारण करनारा एवा—सर्व देवना इश्वर एवा—भक्तिधर्मना पुत्र एवा—वसुदेवना पुत्र तेथि वासुदेवछे नाम जेमनुं एवा—हरिछे नाम जेमनुं एवा—माधव छे नाम जेमनुं एवा—केशव छे नाम

जेमनुं एवा—पोताना भक्तजनोनि इच्छाओ पूर्ण करनार एवा—सर्वना कारण एवा अने निलकंठ एवा जे स्वामिनारायण तेमने हुं भजु छुं.

चेष्टानां पद. राग गरबी.

प्रथम हरीनेरे चरणे शिश नमावुं, नौतम लिलारे नारायणनी गावुं ॥१॥ मोटा मुनिवररे एकाग्र करी मनने, जेने काजेरे सेवे जाइ बनने ॥ २ ॥ आसन साधिरे ध्यान धरीने धारे, जेनी चेष्टारे स्नेह करी संभारे ॥ ३ ॥ सहज स्वभाविकरे प्रकृति पुरुषोतमनि सुणतां सजनिरे बिक मटाडे तमनि ॥ ४ ॥ गावुं हेतरे हरिनां चरित्र

संभारी, पावन करजोरे प्रभुजी बुद्धि मारी ॥ ५ ॥ सहज स्वभावेरं वेठा होय हरि ज्यारे, तुलसिनि माळारे कर लइ फेरवे त्यारे ॥ ६ ॥ रमुज करतारे राजीवनेण रुपाळां, कोइ हरिजननीरे मागी लइने माळा ॥ ७ ॥ बेवडी राखीरे बवे मणका जोडे, फेरवे ताणीरे कोइक माळा तोडे ॥ ८ ॥ वातुं करेरे रमुज करिने हसता मेळी करीरे माळा करमां घसता ॥ ९ ॥ क्यारेक मिचिरे नेत्रकमळने स्वामी, प्रेमानंदकेरे ध्यान धरे बहुनामी ॥ १० ॥ पद १ ॥ सांभळ सैयररे लिलानट नागरनी, सुणतां सुखडुंरे आपे सुखसागरनि ॥ १ ॥ नेत्रकमळनेरं राखी उघाडां क्यारे; ध्यान धरीनेरे बेसे जीवनवारे ॥ २ ॥ क्यारेक

चमकिरे ध्यान करंता जागे, जोतां जीवनरे जनम मरण दुख भागे ॥ ३ ॥ पोता आगळरे सभा भराइ बेसे, संत हरिजनरे सामुं जोइ रहे छे ॥ ४ ॥ ध्यान धरिनेरे बेठा होय हरि पोते, संत हरिजनरे त्रपत न थाए जोते॥५॥साधु किरतनरे गाय वजाडि वाजां, तेमने जोइरे मग्न थाय महाराजा ॥ ६ ॥ तेमनी भेळारे चपटी वजाडी गाये, संत हरिजनरे निरखी राखी थाए ॥ ७ ॥ क्यारेक साधुरे गाय वजाडी ताळी, भेळा गायरे ताळी देइ वनमाळी ॥ ८ ॥ आगळ साधुरे कीर्तन गाय ज्यारे, पोता आगळरे कथा वंचाए त्यारे ॥ ९ ॥ पोते वारतारे करता होय बहुनामी, स्वसता आवेरे प्रेमानंद-

ना स्वामी ॥ १० ॥ पद २ ॥ मानुष्य
लिलारे करता मंगळकारी, भक्त सभामां-
रे बेठा भव भयहारी ॥ १ ॥ जेने जो-
तांरे जाये जग आशक्ति, ज्ञान वैरागेर
धर्म सहित जे भक्ति ॥ २ ॥ ते संबंधिरे
वार्त्ता करता भारी, हरी समजावेरे निज
जनने सुखकारी ॥ ३ ॥ जागेने सांख्यरे
पंचरात्र वेदांत, ए शास्त्रनोरे रहस्य कहे
करी स्वांत ॥४॥ क्यारेक हरिजनरे देश
देशना आवे, उछव उपररे पुजा बहु विधि
लावे ॥ ५ ॥ जाणी पोतानेरे सेवक जन
अविनाशी, तेमनी पूजारे ग्रहण करे सुख
राशी ॥६॥ भक्त पोतानेरे तेने शामसु-
जाण, ध्यान करावीरे खेंचे नाडी प्राण
॥७॥ ध्यानमांथीरे उठाडे निज जनने,

देहमां लावेरे प्राण इंद्री मनने ॥ ८ ॥ संत सभामांरे बेठा होय अविनाशी, कोइ हरिजननेरे तेडया होय पास ॥ ९ ॥ पेहेली आंगळीरे नेत्रतणी करी सान, प्रेमानंद केहेर साद करे भगवान ॥ १० ॥ पद ३॥

मोहनजीनीरे लिला अति सुखकारी, आनंद आपेरे सुणतां न्यारि न्यारि ॥१॥ क्यारेक वातुंरे करे मुनीवर साथे, गुच्छ फुलनांरे चोळेछे बे हाथे, ॥ २ ॥ शितळ जाणीरे लिंबुहार गुलाबी, नेने राखेरे आंख्यु उपर दाबी ॥ ३ ॥ क्यारेक पोतेरे राजिपामां होय, वातु कररे कथा वंचाये तोय ॥४॥ सांभाळे कीरतनरे पोते कांइक विचारे, पुछवा आवेरे जमवानुं कोइ त्यारे ॥ ५ ॥ हार चडावेरे पूजा करवां

आवे, तेना उपररे बहु खीजी रिसावे॥६॥ कथा सांभाळतांरे हरे हरे कही बोले, मर्म कथानोरे मुणी मगन थै डोले ॥ ७ ॥ भान कथानरे बीजी क्रियामांय, क्यारेक अचानकरे जमतां हरे बोलाय ॥८॥ थाय स्मृतिरे पोताने ज्यारे तेनी, थोडुंक हसेरे भक्त सांमुं जोइ बेनी ॥ ९ ॥ एम हरी नितनितरे आनंदरस वरसावे, ए लिला रसरे जोइ प्रेमानंद गावे ॥ १० ॥ पद४॥

सांभळ सजनिरे दिव्य स्वरूप मोरारी, करे चरीत्ररे मानुष्य विग्रह धारी ॥ १ ॥ थया मनोहररे मोहन मनुष्य जेवा, रूप अनोपमरे निज जनने सुख देवा ॥ २ ॥ क्यारेक ढोलीयेरे बेसे श्रीघनश्याम, क्यारेक बेसेरे चाकळे पुरण काम ॥ ३ ॥

क्यारेक गोदडुंरे ओछाडेछे सहित, पाथयुं होयरे तेपर बेसे प्रीते ॥ ४ ॥ क्यारेक ढोलियारे उपर तकियो भाळी, तेपर बेसेरे श्याम पलांठी वाळी ॥ ५ ॥ घणुंक बेसेरे तकिये उठिगण दइने, क्यारेक गोठणंरे बांधे खेश लइने ॥ ६ ॥ क्यारेक राजीरे थाय अतिशे आली, संत हरिजननेरे भेटे बाथमां घाली ॥ ७ ॥ क्यारेक माथेरे मेल लै बे हाथ, छातीमांहीरे चरण कमळ दे नाथ ॥ ८ ॥ क्यारेक आपेरे हार तोरा गीरधारी, क्यारेक आपेरे अंगनवस्त्र उतारी ॥ ९ ॥ क्यारेक आपेरे प्रसादनाथाळ, प्रेमानंद केरे भक्ततणा प्रतिपाळ ॥ १० ॥ पद ५ ॥ एवां करेरे चरित्र पावनकारी, शुकजी सरखारे गावे नित्य

संभारि ॥ १ ॥ क्यारेक जीभने दांततळे दवावे, डावे जमणेरे पहखे सेज स्वभावे ॥ २ ॥ छिंक ज्यारे आवे त्यारे रुमाल लेइने छिंक खायेरे मुखपर आडो देइने ॥ ३ ॥ रमुज आणीरे हसे अति घनश्याम मुखपर आडोरे रुमाल देइ सुखधाम ॥४॥ क्यारेक वातुंरे करता थका देव, छडे रुमालनेरे वळ देवानि देव ॥ ५ ॥ अति दयाळुरे स्वभावछे स्वामीनो, परदुखहारीरे वारी बहुनामीनो ॥ ६ ॥ कोइने दुखीयोरे देखी न खमाये, दया आणीरे अति आकळा थाय ॥ ७ ॥ अन धन वस्त्रे आपीने दुख टाळे, करुणा द्रष्टिरे देखी †वानजवाळे ॥ ८ ॥ डावे खंभरे खेश

† वानजवाळे कहेता प्रफुल्लित करे.

आडरांडे नाखी, चाले जमणारे करमां रुमाल राखी ॥ ९ ॥ कयारेक डाबोरे कर केड उपर मेली, चाले वालोरे प्रेमानंदनो हेलि ॥ १० ॥ पद ॥ ६ ॥ नितनित नौत्तमरे लिळा करे हरिराय, गातां सुणतांरे हरिजन राजी थाय ॥ १ ॥ सहज स्वभावेरे उतावळा बहु चाले, हेत करीनेरे बोलावे वहालो ॥ २ ॥ कयारेक घोडेरे चडवुं होय तारे, कयारेक संतनेरे पिरसवा पधारे । ३ । त्यारे डाबेरे स्वभे खेशने आणी, खेशने बांधेरे केड संघात ताणि । ४ । पिरसे लाडुरे जलेबी घनश्याम, जणस जम्यानिरे लइ लइ तेना नाम ॥ ५ ॥फरे पंगतमारे वारंवार महाराज, संत हरिजननेरे पिरसवांनं काज ॥ ६ ॥ श्रद्धाभक्तिरे

अति घणि पिरसतां, कोइना मुखमांरे आपे लाडु हसतां ॥ ७ ॥ पाछला रात्रीरे चार घडी रहे त्यारे, दातण करवारे उठे हरि ते वारे ॥ ८ ॥ नावा बेसेरे नाथ पलांठी वाणी, कर लइ लइ कळश्योरे जळ ढोळे वनमाळी ॥ ९ ॥ कोरे वस्त्रेरे करि शरिरने लोवे, प्रेमानंद केरे हरिजन सर्वे जोवे ॥ १० ॥ पद ७ ॥ रुडा शोभेरे नाहीने उभा होये, वस्त्र पेरेलुंरे साथळवचे निचोवे ॥ १ ॥ पग साथळनेरे लईने सारंगपाणि, कोरा खेशनेरे पेहेरे सारि पेठे ताणि । २ ।ओढी उपरणिरे रेशम कोरनि वाले, आवे जमवारे चाखडिये चडी चाले ॥ ३ ॥ माथे उपरणिरे ओढि बेसे जमवा, कान उघाडारे राखे मुजने गमवा

॥ ४ ॥ जमतां डाबारे पगनी पलांठी वाळी, तेपर डाबोरे कर मेले वनमाळी ॥ ५ ॥ जमणा पगनेरे राखी उभा शाम, तेपर जमणोरे कर मेले सुखधाम ॥ ६ ॥ रुडी रीतेरे जमे देवनादेव, वारेवारेरे पाणि पिवानि टेव ॥७॥ जणश सवादुरे जणाय जमतां जमतां, पासे हरिजननेरे बेठा होय मनगमता ॥८॥ तेने आपिरे पछे पोते जमे, जमतां जीवनरे हरिजनने मनगमे ॥ ९ ॥ फरवे जमतांर पेट उपर हरि हाथ, ओडकार खाएरे प्रेमानंदना नाथ ॥१०॥ पद ८ ॥ चळु कररे मोहन त्रम थेने, दांतने खोतरेरे सळी रुपानि लैने ॥ १ ॥ मुखवास लैनेरे ढोलिए बिराजे, पुजा करेरे हरिजन हेते झाजे ॥ २ ॥ पांपण्य उपररे आंटो

कइ अलबेलो, फेंटो बांधरे छोगुं मेली छेलो ॥३॥ वरषा रुतुरे शरद रुतुने जाणि वेला नदीनांरे निरमळ निर वखाणि ॥ ४ ॥ संत हरिजननेरे साथे लइने श्याम, नावा पधारेरे घेले पुरणकाम ॥ ५ ॥ बहु जळ क्रिडारे करता जळमां नाय, जळमां ताळिरे दइने कीर्त्तन गाय ॥ ६ ॥ नाईने बाहेररे निसरि वस्त्र पेरि, घोडे बेशिरे घेर आव रंगलेरी ॥ ७ ॥ पावन जशनेरे ह-रिजन गाता आवे, जीवन जोईनेरे आनंद उर न समावे ॥ ८ ॥ गढपुर वाशीरे जोईने जग आधार, सुफळ करेछेरे नेणां वारमवार ॥ ९ ॥ आवी बिराज्यारे ओस-रिए बहुनामी, ढोलिया उपररे प्रेमानंदनो स्वामि ॥ १० ॥ पद ९ ॥ निज सेवकनेरे

सुख देवाने काज, पोते प्रगट्यारे पुरुषोत्तम महाराज ॥ १ ॥ फळियां मांयेरे सभा करी बिराजे, पुरण राशिरे उडगणमां जेम छाजे ॥ २ ॥ ब्रह्मरस वरसेरे त्रपत करे हरिजनने, पोडे रात्रेरे जमी शाम शुद्ध अनने ॥ ३ ॥ बे आंगळियुंरे त्तिलक कर्‍यानि पेरे, भाल वच्चेरे उभि राखि फेरे ॥४॥ सुनां सुतांरे माळा मागी लैने, जमणे हाथेरे नित फरवे चित्त दैने ॥ ५ ॥ भुल न पडेरे कदि एवुं नेम, धर्मकुंवरनीरे सहज प्रकृति एम ॥ ६ ॥ भरनिंद्रामांरे पोढ्या होय मुनीराय, कोय अजाणेरे लगार अडी जाय ॥ ७ ॥ तारे फडकिरे जागे सुंदर श्याम, कुणछे पुछेरे सेवकने सुखधाम ॥ ८ ॥ एवी लीलारे ह-

रीनी अनंत अपार, मैंतो गाइरे कांइक मति अनुसार ॥९॥ जे कोइ प्रीतेरे शिखे सुणे गाशे, प्रेमानंदनोरे स्वामी राजी थाशे ॥ १० ॥ पद १० ॥

राग गरबी.

ओरा आवो श्याम स्नेही, सुंदरवर जोउं वाला: जतन करीने जीवन मारा जोव-मांहि प्रोउ वाला ॥ १ ॥ चीन्ह अनोपम अंगोअंगना सुरते संभारुं वाला: नख-शिख नीरखी नौतम, मारा उरमां उतारुं वाला ॥ २ ॥ अरुणकमळ सम जुगल चरणनी, शोभा अति सारि वाला; चीं-तवन करवा आतुर अति मनवृती मारी

वाला ॥ ३ ॥ प्रथम ते चिंतवन करुं सुंदर सोळे चिन्हवाळा: उर्धरेखा ओपी रही, अतिशे नवीन वाळा ॥ ४ ॥ अंगुठा आंगळी वचेथी नीसरीने आवी वाला: पानीनी बेकोरे जोतां भक्तने मन भावी वाला ॥ ५ ॥ जुगळ चरणमां कहुं मनोहर चिन्ह तेनां नाम वाला; शुद्ध मने करी संभारता, नाशपामे कामवाला ॥ ६ ॥ अष्टकोणने उर्धरेखा, स्वस्ती जांबुने जव वाला, वज्र अंकुश केतुने पद्म, जमणे पगे नववाला ॥ ७ ॥ त्रीकुण कक्षने गोपद सुंदर, धनुष्यने मीनवाला; अर्धचंद्रने व्योम सातछे, डाबे पग चिन्हवाळा ॥ ८ ॥ जमणा पगना अंगुठाना नखमांही, चिन्हवाला ते तो निरखे जे

कोइ भक्त, प्रीतीपे प्रवीण वाला ॥ ९ ॥ एज अंगुठानी पासे तीलक एक नौतम धारुं वाला, प्रेमानंद कहे नीरखुं प्रीते प्राण लइ वारु वाला ॥ १० ॥

राग गरबी.

हवे मारा वालाने नहीरे वीसारुरे, श्वासेउश्वासेथी नीत्य संभारूरे ॥ १ ॥ पड्युं मारे सहजानंदजीथुं पानुंरे हवे हुंतो केम करी राखी श छानुंरे ॥ २ ॥ आव्युं मारे हरिवर वरवानुं टाणुंरे ए वर न मळे खरचे नाणुंरे ॥ ३ ॥ एवर भाग्यविना नव भावेरे, ए स्नेह लगनविना नव आवेरे ॥ ४ ॥ दुरीजन मनमां आवे तेम कहे-

ज्योरे, स्वामी मारा रुदियानी भितर रे-हज्योरे ॥ ५ ॥ हवे हुंतो पुरण पदने पामीरे, मळ्या मुने निष्कुळानंदना स्वामीरे ॥ ६ ॥

हवे मारा वालाना दर्शन सारु, हरिजन आवे हजारे हजारुं ॥ १ ॥ ढोलिए बिराजे सहजानंद स्वामि पुरण पुरुषोत्तम अंतर जामी ॥ २ ॥ सभा मधे बेठा मुनिना वृंद तेनां शोभे तारे विंट्यो जेम चंद्र ॥ ३ ॥ दुरगपुर खेल रच्यो अति भारी, मेला रमे साधुने ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ ताली पाडे उपडती अति सारी, शुन्य थाय चौद लोकथी न्यारी ॥ ५ ॥ पाघडलीमां छोगलियुं अति शोभे, जोइ जोइ हरिजनना

मन लोभे ॥ ६ ॥ पधार्या वालो सरवे ते सुखना रासी, सहजानंद अक्षर धामना वासी ॥ ७ ॥ भागी मारे जनमो जनमनी स्वामी, मल्या मुने निष्कुलानंदनो स्वामि ॥ ८ ॥

पद राग बिहाग कनडो.

पोढे प्रभुसकलमुनीकेश्पाम, स्वामीनारायण दीव्य मुरती संतनके विसराम पोढे ॥ १ ॥ अक्षर पर आनंद धन, प्रभु कीयोहे भुपर ठाम जेही मीलतजन तरत माया लहत अक्षरधाम पो ॥ २ ॥ सारद शेष महेष महामुनी जपत जेही गुन ग्राम जासपद रज शीस धरी धरी होत नज

निष्काम ॥ ३ ॥ प्रेमके पर्यंक पर प्रभु क-
रत सुख आराम मुक्तानंद नीत चरन गुन
गावत आठुं जाम ॥ पो ॥ ४ ॥

॥ विशेष वचनामृत ॥

॥ संवत् १८७६ ना पोस वदि१पडवाने
दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा
मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव
नारायणना मंदिरनी हारचे उत्तरादेबारच
ओरडोछे तेनि ओसरिये ढोलिया उपरच
विराजमान हता ने धोलो खेस पेरचो हतो
ने धोलि चादर ओढि हती ने माथे धोलो
फेटो बांध्यो हतो ने धोला पुष्पना हार
पेन्या हता ने बे कांनने विषे धोला पु-
ष्पना गुछ खोशा हता ने पाघने विषे

थोला पुष्पना तोरा लटकता हता ने धोला पुष्पना बेरखा पेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति ने मुनि मंडल कीर्त्तन गाता हता पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे तो प्रश्न उत्तर करो तारे श्रीजीमहाराज प्रत्ये दीनानाथ भटे पुछयुं जे हे महाराज कोइक समे तो हजारूं घाट थाय पण तेनो मनने विषे डंस बेसे नहि अने कोइक समे तो अल्प घाट थाय तेनो पण मनने विषे डंस बेसे छे तेनुं कारण शुं छे अने भगवानना भक्तने ए मनना घाटनि निवृत्ति थयानो उपाय शो छे तारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनुं कारण तो गुण छे ते ज्यारे तमो

गुण प्रधान होय ने तेमां घाट थाय तारे सुषुप्ति सरखी अवस्था रहेती होय माटे तेमां घाटनो डंस बेसे नहि अने ज्यारे सत्त्वगुण वरततो होय तारे प्रकाश जेवुं वरते ने ते समे जे जे घाट थाय तेने विचारे करीने खोटा करि नाखे माटे ते घाटनो पण डंस बेसे नहि अने ज्यारे रजोगुण वरते तारे जे घाट थाय तेनो मनने विषे डंस बेसे माटे डंस बेसे छे ने नथि बेसतो तेनुं कारण तो गुण निवृत्ति छे अने बुद्धिवान होय तो आ वातने विचारिने जे समे घाट थाय ते समे ते घाट सामुं जुवे तो पोतामां जे गुण प्रधान वरततो होय तेने ओळखे अने घडि घडि पळ पळमां सूक्ष्म घाट थाय छे ते तो

कोइना ओलख्यामां आवे नहि ने तम जेवा कोइक बुद्धिवान होय तो आखा दिनमां बे त्रण्य च्यार स्थूल घाट थाय ते तेना ओलख्यामां आवे अने जे गुणने प्रधान पणे पोतामां घाट थाता होय ते सांमि द्रष्टि राखे अने सतसंगमां के भगवाननि वार्ता थाय तेने धार्‍या विना न्था करे तो आ सत्संगनो प्रताप एवो छे जे जे गुणना घाट थाता होय ते घाटनो तेने निवृत्ती थई जाय छे ने निरुत्थान थइने अखंड परमेश्वरना स्वरूपनुं चिंतवन थाय छे अने सत्संग विना तो बिजां कोटि साधन करे पण तेने घाटनि तथा रजो गुण आदिक गुणनि निवृत्ति थाय नहि अने जो निस्कपट पणे करिने सत्संग करे

ने परमेश्वरनि वार्त्ताने धारे विच्यारे तो ए मलिन घाटनो नाश थाय छे माटे सत्संगनो प्रताप तो अतिशे मोटो छे अने बिजां साधन छे ते कोइ सत्संग तुल्य थाय नहि कांजे कोई साधने करिने जे घाटनि निव्रत्ति नथि थाति तेनि निव्रति सत्संगमां थाय छे ते कारणपणा माटे जेने रजो गुण संबंधि मलिन घाट टालवा होय तेने मन कर्म वचने निस्कपट पणे सत्संग करवो तो सत्संगना प्रतापथि ए घाटनि निव्रति थइ जाश ॥ । इतिवचनामृतं । ॥ ३० ॥

॥ संवत् १८७६ ना पोसशुदि ३ त्रिजने दिवस प्रभात समे श्रीगढडा मध्ये श्रीजी-

महाराज दादाखाचरना दरबारमां आ-
थमणे बारय ओरडानी ओसरिये ढोलिया
उपरच्य विराजमान हता ने धोलो खेश
पेर्यो हतो ने माथे धोलि पाघ बांधि
हवि ने धोलि चादर ओढि हति ने ल-
लाटने विषे केसरनि आडय करि हति
ने धोला पुष्पनो हार पेर्यो हतो ने पा-
घने विषे धोला पुष्पनो तोरा लटकतो
हतो ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य
मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा
भराइने बेठि हति ने कीर्तन गवातां हवां
पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभलो
एक प्रश्न करिये तारे मुनि तथा हरिभक्ते
कह्युं जे हे महाराज पुछो पछे श्रीजिमहा-
राज घणिक वार सुधि विचारीने बोल्या

जे आ संसारमां जे विषइ जीव होय ते पंच विषय विना रहि सके नही ते जेम ए विमुख जीवने पंच विषय छे तेम हरि जनने पण पंच विषय छे पण तेमां भेद छे ते भेद केम छे तो विषइ जीव तो भगवान विना अन्य जे ग्राम्य विषय तेने भोगवे छे ने भगवानना भक्त छे तेने तो भगवाननि कथा सांभलवि तेज श्रोत्रनो विषय छे अने भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श करवो अथवा संतना चरणनि रजनो स्पर्श करवो ते त्वचानो विषय छे अने भगवाननां अथवा संत तेना दर्शन करवां ते नेत्रनो विषय छे अने भगवाननो प्रसाद लेवो तथा भगवानना गुण गावा ते जीभनो विषय छे अने भगवानने चड्यां एवां जे

पुष्पादिक तेनि सुगंधि लेवि ते घ्राणनो विषय छे एवि रित्ये विमुखने हरिभक्तना विषयमां भेद छे अने एवी रित्यना विषय विना तो हरिभक्ते पण रेवातुं नथी अने नारद सनकादिक जेवा अनादि मुक्त छे तेणे पण एवा पंच विषय विना रेवातुं नथी ते समाधिमां घणा काल रहेछे पण ते समाधिमांथी निकलिने भगवाननि कथा किरतन श्रवणादिक विषयने भोगवे छे अने जेम पक्षी होय ते पोताना मालाने मुकिने चरवा नीकले छे ते चारो करिने रात्रि समे पोत पोताना मालामां जइने विराम करे छे पण पोतपोताना स्थानकने कोइ दिवस भुलिने बिजाने स्थानके ज्याता नथी तेम भगवानना भक्त छे ते

भगवाननि कथा कित्तॅन श्रवणादिक एवो जे चारो तेने चरीने पोतानो मालो जे भगवाननुं स्वरूप तेमा जइने विराम करे छे अने वलि पशु पक्षि सर्वे जीव जेम पोत पोतानो चारो करिने पोतपोताने स्थानके जइने विराम करे छे तेम मनुष्य पण जे जे कारज्य होय तेने अर्थे देश विदेश जाय छे पण पोताने घेर आवेछे त्यारे निरांत्य करीने बेसे छे ए सर्व दृष्टांत सिद्धांत कथा ते उपरय तमे सर्व हरिभक्तने अमे प्रश्न पुछिये छेये जे जेम विमुख जीव ग्राम्य पंच विषयमां बंधाणा छे ने ते विषय विना पल मात्र चालतुं नथी तेम तमे भगवाननी कथा वार्तानु जे श्रवणादिक ते रूपि जे विषय तेमां दृढपणे

बंधाइने एना विषइ थया छोके नही अने वलि जे बिजुं प्रश्न पुछिये छइये जे जेम पक्षी चारो करिने पोताना मालामां आवे छे तेम तमे सर्वे भगवाननी कथा कीर्त्तनादिक रुपि विचारो करिने पाछा भगवानना स्वरूप रुपि मालामां बिराम करो छो के बिजे ज्यां त्यां विराम करोछो अने वलि जेम धणियातुं ढोर होय ते सीममां चरनिसांझे पोताने खिले आवे छे ने जे हरायुं ढोर होय ते खिले आवे नही ने जेनुं तेनुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसि रहे पछे कोक धोका मुके कां वाघ आवे तो मारे तेम तमे ते धणियाता ढोरनि पेठे पोताने खिले आवो छो के हराया ढोरनि पेठे कोइनुं खेतर खाइनो ज्यां त्यां बेसिने

विराम करोछो ए सर्वे प्रश्ननो उत्तर पोताना अंतरमां विच्यारिने मोटा मोटा हो ते करो पछे मुनि तथा हरिभक्त सर्वे जुदा जुदा बोल्या जे हे महाराज भगवाननि कथा कीर्त्तनादिकना विषइ पण थया छैये ने भगवानि मुर्त्ति रूपि जे मालो तथा खिलो तेने मुकीने बिजे ठेकाणे रेवा पण नथी ते वारताने सांभलिने श्रीजीमहाराज घणुं प्रसन्न थया अने वलि तेने ते दिवस बपोर नमते श्रीजीमहाराज दादा खाचरना दरबार वच्ये लिंबडा तले ढोलिया उपरच्य बिराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनि आगलप मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठिहति ने पोते श्रीवासुदेव नारायणनामं-

दिर सनमुख विराजमान हता ने मुनि किर्त्तन बोलता हता पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे तो प्रश्न उत्तर करो पछे दीनानाथ भटे तथा ब्रह्मानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे कोइ समे तो भगवानना भक्तनाहृदामां आनंदथि भगवाननुं भजन स्मरण थाय छे ने भगवाननि मुर्त्तिनुं चिंतवन थाय छे अने कोइ समे तो अंतर डोलाइ जाय छे तेमभजन स्मरणनुं सुख आवतुं नथि तेनुं शुं कारण छे तारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एने भगवाननि मुर्त्ति धारवानि जुक्ति आवडति नथि त्यारे मुक्तानंद स्वामिये पुछ्युं जे केवि रित्ये जुक्ति जांणवि त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जुक्ति तो एम छे जे

अंतः कर्णने विषे गुणनो प्रवेश थाय छे ते ज्यारे सत्वगुण वरततो होय त्यारे अंतः कर्ण निर्मल वरते ने भगवाननि मूर्त्तिनुं भजन स्मरण सुखे थाय ने ज्यारे रजो गुण वरते तारे अंतःकर्ण डोलाइ जाय ने घाट संकल्प घणा थाय ने भजन स्मरण सुखे थाय नहि अने ज्यारे तमो गुण वरते तारे तो अंतःकरण शून्य वरते माटे भजनना करनाराने गुण ओलखवाने जे समे सत्वगुण वरततो होय ते समे भगवाननि मुर्त्तिनुं ध्यान करवुं अने तमो गुण ज्यारे वरते तारे कशो घाट थाय नहि ने शून्य सरखुं वरते तेमां पण भगवाननुं ध्यान करवुं अने ज्यारे रजोगुण वरततो होय तारे घाट संकल्प घणा थाय माटे

ते समे भगवाननुं ध्यान करवुं नहि ने ते समे तो एम जाणवुं जे हुं तो संकल्पथकि जुदो छुं ने आत्मा छुं ने ए संकल्पनो जांणनारो छुं ने ते मारे विषे अंतरजामि रूपे पुरुषोत्तम भगवान सदाकाल विराजे छे अने ज्यारे रजोगुणनो वेग मटि जाय तारे भगवाननि मुर्त्तिनुं ध्यान करवुं अने रजोगुण वरततो होय तारे संकल्प घणा थाय ते संकल्पने जोइने मुझावुं नहि केम जे अंतःकर्ण तो जेवुं नानुं छोकरूं तथा वानरूं तथा कुतरुं तथा बालकनो रमाडनार तेवुं छे ने ए अंतःकर्णनो एवो स्वभाव छे ते विनाप्रयोजन चाला क-रया करे माटे जेने भगवाननुं ध्यान करवुं तेने अंतःकर्णना घाटने जोइने कचवाइ

जावुं नहि ने अंतःकर्णना घाटने मांनवा पण नहि ने पोताने जे अंतःकर्णने जुदुं मानवुं अने पोताना आत्माने जुदो मानिने भगवानुं भजन करवुं ॥

॥ इतिवचनमृतं ॥ ॥ ३२ ॥

संवत् १८७६ ना महाशुदि ३ त्रिजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनि आगल्य लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा उपरच ढोलियो ढलाविने विराजमान हता ने धोलो खेश पेर्‍यो हतो ने धोलि चादर ओढि हति ने माथे धोलि पाघ बांधि हति ने पीला पुष्पना तोरा पाघमां लटकता हता ने कांन उपरय धोला ने पीला पुष्पना गुछ खोशा हता

ने कंठमां पिला पुष्पना हार पेरन्या हता ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य सर्वे मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे श्रीजिमहाराजं एक वेदांति ब्राह्मण आव्यो हतो तेन प्रश्न पुछ्यो जे तमे एक ब्रह्मनुं प्रतिपादन करो छो ने ते विना जीव ईश्वर मायाने जगत तथा वेदशास्त्र पुराण ते सर्वेने मिथ्या कहो छो ए वात अमने समझाति नथी तथा मांन्यामां आवती नथी माटे तमने पुछीये छइये तेनो उत्तर करो ते वेदशास्त्र पुराण स्मृति इतिहास तेनि साख्य क-रिने करो पण कोईक कल्पित ग्रंथने वचने करिने करशो तो अमे तेने नहि मांनिये अने जो व्यासजिने वचने करिने कारशो

तो अमारा मांन्यामां आवशे केमजे अमारे व्यासजिना वचनमां दृढ प्रतितिछे पछे ते वेदांतिये घणीक प्रकारनि युक्तियो लाविने उत्तर करवा मांड्यो पण श्रीजिमहाराजे तेमां आ शंका करि माटे ते प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभलो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करिये छइये जे ए तो परमेश्वरने भजिने थया जे मुक्त तेने स्थितिनो भेद छे जेम मेरु पर्वत उपरन्य उभो जे पुरुष छे जे ते ते मेरु थकी ओरा जे सर्वे पर्वत तथा सर्वे वृक्ष तथा ते पर्वत वृक्षनुं आधार जे पृथ्वीनुं तल ते सर्वेने पृथक् पृथक् पण देखे छे तेम सविकल्प समाधिवाला जे ज्ञानी मुक्त ते जे ते जीव इश्वर माया

तथा एमनुं आधार जे ब्रह्म ए सर्वेने पृथक् पृथक् पणे देखे छे अने वळी जेम लोकालोक पर्वत उपरच्य उभो जे पुरुष ते जेत ते लोकालोक पर्वत उपरथि ओरा जे पर्वत तथा वृक्ष ते सर्वेने एक पृथ्वी रुपेज देखे छे पण पृथक् पृथक् पणे नथी देखता तेम निर्विकल्प समाधि वाळा जे महामुक्त ते जेत जीव ईश्वर ने माया तेने एक ब्रह्म रूपे करिनेज देखेछे पण पृथक् पणे नथी देखता एवि रितेथ बे प्रकारनि स्थिति वाळा मुक्तछे तेनि स्थितिने जोग करिने ए सर्वेनुं सत्यपणुं केवाय छे ने असत्यपणुं केवाय छे अने सविकल्प स्थिति वाळानां वचन वेदशास्त्र पुराणादिकमां आवे छे ते ए सर्वेने सत्य केछे

ने निर्विकल्प स्थितिवालानां जे वचन ते ए सर्वेने असत्य कहेछे पण कांइ ए सर्वे असत्य नथी एतो एने निर्विकल्प स्थितिने बले करिने देखाता नथि माटे असत्य कहेछे अने वली जेम सूर्यना रथमां जे बेठा होय तेने रात्य नथी पण जे पृथ्वी उपर रह्या छे तेने रात्रि दिवस छे तेम निर्विकल्प स्थितिवालाने मते ए सर्वे छे नहि पण बिजाने मते तो ए सर्वे छे अने आवि रित्ये ब्रह्म निरूपण करेछे तो शास्त्रना वचनमां पूर्वापर बाध न आवे, ने एम न करे तो पूर्वापर बाध आवे ते बाधने तो समझतो न होय तथा एवि रित्यनि स्थितिने पण न पाम्यो होय ने केवल शास्त्रमांथि शिखिने वचनमात्र क-

रिने एक ब्रह्मपणानुं प्रतिपादन करतो होय ने गुरु शिष्य जीव ईश्वर माया जगत तथा वेद पुराण शास्त्र ए सर्वेने कल्पित कहेतो होय ते तो महा मूर्ख छे ने अंते नारकी थाय छे एम कहिने बोल्या जे आ अमे वार्त्ता करि तेमां तमने आशंका थाति होय तो बोलो तारे ते वेदांति ब्राह्मण बोल्यो जे हे महाराज हे प्रभो हे स्वामिन् तमे तो परमेश्वर छो ने जगतना कल्याणने अर्थे प्रगट थया छो ते तमे जे उत्तर कर्या ते यथार्थ छे एमां आशंकानो माग नथी एम कहिने अति प्रसन्न थयो ने पोतानो जे अणसमझण्य तेनो त्याग करिने श्रीजिमहाराजने आश्रित थयो ॥ ॥ इतिवचनामृतम् ॥ प.प्रकरण-३९

संवत् १८७६ ना महा वदि २ बिजने दिवस रात्रिने समे स्वामि श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायण ना मंदिरनि आगल्य आथमणे बारने ओरडानि ओसरिये ढोलिया उपरने विराजमांन हता अने धोलो सुरवाल पेर्यो हतो ने धोळुं अंगरखुं पेर्युं हतुं ने माथे धोलि पाघ बांधि हति ने पोताना मुखारविंदनि आगल्य मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठि हति पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे कांई प्रश्न पुछो पछे पुर्णानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्यूं जे दशइंद्रियुं छे तेतो रजोगुणनि छे अने च्यार अंतःकरण छे तेतो सत्वगुणनां छे

माटे ए सर्वे इंद्रियुंने अंतःकरण ते तो माइक छे ने भगवानतो मायाथी पर छे तेनो माइक अंतःकरणे करिने केम निश्चे थाय अने माइक एवां जे चक्षु आदिक इंद्रियुं तेणे करिने भगवान केम जोयामां आवे पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे माइक वस्तुये करिने माइक पदार्थ होय ते जणाय माटे माइक जे अंतःकरणने इंद्रियुं तेणे करिने जो भगवान जणांणा तो ए भगवान पण माइक ठर्‍या एवि रित्ये तमारु प्रश्न छे पछे पुर्णानंद स्वामि तथा सर्वे मुनिये कह्यु जे एज प्रश्न छे तेने हे महाराज तमे पुष्ट करि आप्पुं पछे श्री-जीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एमछे जे पचाश कोटि जोजन पृथवीनुं पिठछे

ते पृथ्वी उपरन्य घटपटादिक अनेक प-दार्थ छे ते सर्व पदार्थमां ए पृथवी रही छे ने पोताने स्वरुपे करिने नोखी पण रही छे अने ज्यारे पृथवीनी दृष्टिए करीने जोइये त्यारं ए सर्व पदार्थ रुपे पृथवी थइ छे ने पृथवी विना बीजुं कांइ पदार्थ नथी ने ते पृथवी जलना एक अंशमांथी थइछे अने जलतो पृथवीने हेठे पण छे ने पडखे पण छे ने उपरय पण छे ने पृथवीना म-ध्यमां पण जल सर्वत्र व्यापि रह्युंछे माटे जलनी द्रष्टिये करीने जोईये तो पृथवी नथी एकलुं जलज छे अने ए जल पण तेजना एक अंशमांथी थयुं छे माटे तेज निद्रष्टिये करीने जोईये तो. जल नथी ए कलुं तेजजछे अने ते तेज पण वायुना एक

अंशमांथी थयुं छे माटे ते वायुनी द्रष्टिये करीने जोईये तो तेज नथी एकलो वायुज छे ने ते वायु पण आकाशना एक अंशमांथी थयो छे माटे जो आकाशनी द्रष्टिये करीने जोईये तो वायु आदिक जे च्यार भूतने तेनुं कारज्य जे पींडने ब्रह्मांड ते कांई भासेज नही एकलो आकाशज सर्वत्र भासे अने ए आकाश पण तामसा हंकारना एक अंशमांथी उत्पन्न थयो छे ने ते तामसा हंकार राजसा हंकार, सात्विक हंकारने भुत इंद्रियुं अंतःकरणने देवता ए सर्वे महतत्वना एक अंशमांथी उत्पन्न थयां छे माटे महतत्वनी द्रष्टिये जोईए तो त्रण्य प्रकारनो अहंकार तथा भूत इंद्रियो अंतःकरण देवता ए सर्वे नथी

एकलुं महतत्वज छे अने ते महतत्व पण प्रधान प्रकृतिना एक अंशमांथी उत्पन्न थयुं छे माटे ए प्रकृतिनि दृष्टिये जोइये तो महतत्व नथी एकाले ए प्रकृतिज छे अने ते प्रकृति पण प्रलयकालमां पुरुषना एक अंशमां लिन थै जाय छे अने पाछी सृष्टि समे एक अंशमांथी उत्पन्न थाय छे माटे पुरुषनि दृष्टिये करिने जोइये तो प्रकृति नथी एकलो पुरुषज छे अने एवा अनंत कोटि पुरुषछे ते महामायाना एक अंशमांथि उत्पन्न थाय छे माटे ए महामायानि द्रष्टिये जोईये तो ए पुरुष नथी एकली महामायाज छे अने ए महामाया पण महा पुरुषना एक अंशमांथी उत्पन्न थाय छे माटे ए महा पुरुषनी द्रष्टिये जोईये तो ए महामाया

નથી એકલો મહાપુરુષજ છે અને એ મહા પુરુષ પણ પુરુષોત્તમ ભગવાનનું ધામ જે અક્ષર તેના એક દેશમાંથિ ઉપજે છે માટે એ અક્ષરનિ દ્રષ્ટિયે કરિને જોઈયે તો એ મહા પુરુષાદિક સર્વે નથી એક અક્ષરજ છે અને તે અક્ષર થકિ પર અક્ષરાતિત એવા જે પુરુષોત્તમ ભગવાન તે છે ને તે સર્વેનિ ઉત્પત્તિ સ્થિતિને પ્રલય તેના કર્ત્તા છે ને તે સર્વના કારણ છે અને જે કારણ હોય તે પોતાના કારજ્યને વિષે વ્યાપક હોય ને તેથિ જુદુ પણ રહે માટે એ સર્વના કારણ જે પુરુષોત્તમ ભગવાન તેનિ દ્રષ્ટિયે કરિને જોઇયે ત્યારે એ પુરુષોત્તમ ભગવાન વીના બિજું કાંઇ ભાસેન નહિ એવા જે એ ભગવાન તેજ કૃપા કરિને જીવના કલ્યા-

णने अर्थे पृथवीमां सर्वे मनुष्यने प्रत्यक्ष दर्शना आपे छे त्यारे जे जीव संतनो स-मागम करिने ए पुरुषोत्तम भगवाननो आवो महिमा समझे छे तारे एनां इंद्रियो अंतःकरण सर्वे पुरुषोत्तम रूपे थै जायछे त्यारे तेमणे करिने ए भगवाननो निश्चे थाय छे जेम हिरे करिनेज हिरो वेंधाय छे पण बिजावते नथी वेंधातो तेम भग-वाननो निश्चे ते भगवान वतेज थाय छे ने भगवाननुं दर्शन पण भगवान वतेज थाय छे पण माइक एनां जे इंद्रियो अंतः करण तेणे करिने नथि थातो एम वार्त्ता करिने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहिने पोताना उतारे पधारया ॥

॥ इतिवचनामृतम् ॥ प्र प्र. ९१

संवत् १८७८ना श्रावणवदि अमावास्याने दिवस स्वामि श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनि ओसरिये चाकला उपरच्य बिराजमान हता ने धोळो खेस पेरयो हतो तथा धोळी चादर ओढि हति ने मस्तक उपरय श्वेत पाघ बांधि हति अने पोताना मुखारविंदनि आगल्य मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठि हति पछे श्रीजिमहाराजे पोताना बे भुज उंचा उपाडिने सर्वेने छांना राख्या ने पछे पोताना मुखारविंदनि आगल्य स्तुतिने करिने बेठा एवा जे संत ते प्रत्ये श्रीजिमहाराज एम बोल्यता हवा जे हे संतो जे मोटेरा मोटेरा

हो ने वातमां समझता होते आगल्य बेसो ने आ एक वात करुंछु ते सर्व चित्त देने सांभलज्यो अने आजे मारे वात करवि छे. ते कांइ दंभे करिने नथी करवि तथा पोतानि शास्त्र वधारवा सारु नथि करवि एतो एम जांणिये छैये जे आ सर्व संत तथा हरिभक्त छे ने तेमांथि ए वात कोइने समझाइ जाय तो तेना जीवनुं अति रुडुं थाय ते सारु करियें छइये अने आ जे वात छे ते मारि दिठेल छे ने मारा अनुभवे करिने पण में सिद्ध करिछे अने सर्व शास्त्रमां पण मलति आवे छे ने ते ए वात सभामां करया जेवि नथि तोपण सभामां करिये छईये जे मारे सहज स्वभावे एम वर्ते छे जे आ संसारने विषे जे

अति रुडो शब्द तथा अति रुडो स्पर्श तथा अति रुडो गंध तथा अति रुडो रस तथा अति रुडुं रूप ए जे पंच विषय तेमां हुं मारा मनने बांधवाने इछुं तोपण नथी बंधातु ने एमां अतिशे उदास रेछे अने ए जे सारा पंच विषय तथा नरसा पंच विषय ते बेय समवर्त्ते छे अने राजा तथा रंक ते पण समवर्त्ते छे अने त्रिलोकिनुं राज्य करवुं तथा ठींकरुं लइने मागी खावुं ते पण समवर्त्ते छे अने हाथीने होदे बेसवुं तथा पगपाळा चालवुं ते पण समवर्त्ते छे ने कोइक चंदन तथा पुष्प तथा सारां वस्त्र तथा घरेणां चडावे तथा धुल्य नांखे ते बेय समवर्त्ते छे ने कोइक मांन आपे तथा कोइक अपमांन करे ते

बे पण समवर्त्तें छे तथा सोनुं रुपुं हिरो तथा कचरो ते बेय समवर्त्ते छे अने आ हरिभक्त बहु मोटो छे ने आ हरिभक्त नांनो छे एम पण नथी जणातुं बधाय हरिभक्त सरखा जणाय छे अने मारा अंतःकरणने विषे अति तीव्र वैराग्य वर्त्ते छे तेनो पण भार नथी जणातो जेम कोइ के माथे पांणो उपाड्यो होय तथा रुपै-याने साना मोरनि बांसली केड्ये बांधी होय तेनो भार जणाय छे तेम भार नथी जणातो ने मारे विषे सद्धर्म छे तेनो पण भार नथी जणातो तथा मारे विषे ज्ञान छे जे हुं ब्रह्म छुं तेनो पण भार नथी जणातो अने आजे हुं उपरय थकि कोइक पदार्थने वखांणुं छुं ने कोइक प-

दार्थने कुवखांणुं छुं तेतां जांणि जांणिने करुं छुं अने जे जे पदार्थने विषे इंद्रियुंनी वृत्तीने बलातकारे जोडुं छूं ते मांडमांडने पदार्थ सनमुख रेछे अने ज्यारे ढीलि मेलुंछुं तारे तरत पाछि वलि आवे छे जेम आकाशने विषे पथरो फगाविये ते ज्यां सुधी हाथने जोरे करिने ठेलाय त्यां सुधि ज आकाशने विषे रहेने पछे पाछो पृथ-वीने विषे आविने पडे छे अने जेम पुंछ लेलढोर होय तेने मांणस बलातकारे क-रिने ज्यां सुधि उंचुं झालि राखे त्यां सुधि हे ने ज्यारे मुकि दे त्यारे धबलेइने पडि जाय अने जेम कोइक पुरुष सुझे एटलो बलियो होय ने दांते आखि सोपारि भागि नांखतो होय अने ते पुरुषने दश

विशाकादि लिंबु चुसाव्यां होय पछे ते शेकेल्ल चणा पण मांडमांड चावे तेम वि-षय सनमुख बलात्कारे व्रतीने जोडिये छइये तो मांडमांड जोडाय छे ते आजे एम मुने वर्त्ते छे तेनुं शुं कारण छे तो मारि इंद्रियुनि जे व्रति छे ते पाछि वलिने सदा हृदयने विषे जे आकाश छे तेने विषे वर्त्ते छे अने ते हृदाकाशने विषे अतिशे तेज देखाय छे जेम चोमासाने विषे आका-शमां वादलां छाइ रह्यां होय तेम मारा हृदाने विषे एकलुं तेज व्यापि रयुंछे अने ते तेजने विषे एक भगवानननी मूर्ति देखाय छे ते अति प्रकाशमय छे ने ते मूर्ति घ-नश्याम छे तोपण अतिशे ते तेजे करिने श्याम नथी जणाती अतिशे श्वेत जणाय

छे ने ते मूर्त्ति द्विभुज छे अने ते मूर्त्तिने बे चरण छे अने अतिशे मनोहर छे पण च्यार भुजा के अष्टभुजा के सहस्र भुजा ते ए मूर्त्तिने नथि ए मूर्त्ति तो अतिशे सौम्य छे अने मनुष्यना जेवि आकृति छे ने किशोर छे ते ए मूर्ति क्यारेक तो ए तेजमां उभि देखाय छे ने क्यारेक बेठि देखाय छे ने क्यारेक हरति फरति देखाय छे ने ए मूर्त्तिने च्यारे कोरे मुक्तनां मंडल भराइने बेठां छे ने ते सर्वे मुक्त छे ते एक नजरे ते भगवाननि मूर्ति साम्ु जोइ रह्या छे ते मूर्त्तिने अमे प्रगट प्रमाण हमणां पण देखिये छैये अने सत्संगमां नोता आव्या तारे पण देखता अने मातानां गर्भमां हता ते दिवस पण देखता अने

गर्भमां आव्या मोरे पण देखता अने अमे बोलिये छैये ते पण त्यांज बेठा थका बोलिये छैये अने तमे पण सर्वे त्यांज बेठा छो एम हुं देखुं छुं पण आ गढडुं सेहेर के आ ओसरि ए कांइ देखातुं नथि अने ज्यारे ए स्वरूप जेने जांण्यामां आवे तेने जेम अमने कोइ विषय संबंधि सुखमां आ सक्ति नथि तेम ते पुरुषने पण क्यांइ आ सक्ति रहेज नहि अने ते स्वरूपने तो तमे पण देखो छो पण तमारा समझ्यामां परिपूर्ण आवतुं नथि अने ज्यारे ए वार्त्ता समझ्यामां आवशे त्यारे पंच विषय के कामक्रोधादिक स्वभाव ते जित्यामां प्रयास थाशे नहि सेहेजे जिताइ जाशे अने ए जे एक रस तेज छे तेने आत्मा कहिये

तथा ब्रह्म कहिये ने अक्षर धाम कहिये
अने ए प्रकाशने विषे जे भगवाननि मूर्त्ति
छे तेने आत्मानुं तत्व कहिये तथा परब्रह्म
कहिये तथा पुरुषोत्तम कहिये तेज भग-
वान राम कृष्णादिक रूपे करिने पोतानि
इच्छाये जिवुंना कल्याणने अर्थे जुगजुगने
विषे प्रगट थाय छे ते भगवान आ लो-
कने विषे मनुष्य जेवा जणाय छे तोपण
मनुष्य जेवा नथि ने अक्षर धामनापति
छे ते श्रीकृष्णभगवाने गीतामां कह्युं छे
जे ॥ नतद्भासयतेसूर्यो नशशांकोन पाव-
कः ॥ यद्गत्वान निवर्त्तंते तद्धाम परमंमम
॥ १ ॥ माटे श्रीकृष्णभगवान मनुष्य जे-
वा जणाता हता तोपण अक्षरातीत कैव-
ल्य मूर्त्तिज छे अने भगवान जे मनुष्य

देहधरे छे ते भगवाननि मूर्त्तिनुं जे ध्यान करे तारे ए ध्यान ना करनाराने ए मूर्त्ति तेजोमय एवि अक्षर धामने विषे कैवल्य स्वरूपे भासे छे ने ध्यानना करनारानो जे जिवने मायाने तरे छे अने परमपदने पांमे छे माटे भगवान तो मनुष्य देहधारण करे छे तोपण कैवल्य रूपेज छे अने ते भगवान जे जग्यामां विराजता होयते जग्यापण निर्गुण छे अने ते भगवानना वस्त्र अलंकार तथा वाहन तथा परिचर्या ना करनारा सेवक तथा खानपानादिक जे जे पदार्थ भगवानना संबंधने पांमे छे ते सर्वे निर्गुण छे एविरित्ये जेणे भगवाननुं स्वरूप जाण्युं तेने अमारि पेठेज पंचविषयमां क्यांइ प्रिति रहेति नथी ने ते

स्वतंत्र थाय छे अने ए अक्षरातीत जे पुरु-
षोत्तम भगवान छे तेज सर्वे अवतारनुं का-
रण छे अने सर्वे अवतार पुरुषोत्तममांथि
प्रगट थायछे अने पाछा पुरुषोत्तमने विषे
लिन थाय छे ते ज्यारे भगवान मूर्त्तिध-
रिने पाछा अंतर्द्धान थाय छे त्यारे ते जे
भगवाननि मूर्त्ति ते क्यारेकतो मनुष्यनि
पेठे आ पृथविने विषे पडिरे छे ते जेम
श्रीकृष्णनि मूर्त्तिने खोलामां लेइने रुक्मि-
णिजिबलिमुवां तथा ऋषभदेवनो देह हतो
ते दावा नलने विषे बलि गयो एम पण
थाय अने क्यारेकतो हाडमांससहितदि
व्यभाव पांमिने कांइ रहेनाहिं अंतर्द्धानज
थइ जाय अने ज्यारे प्रगट थाय त्यारे पण
क्यारेकतो स्त्रीथकि जन्म धरे ने क्यारे

क्तो पोतानि इच्छामां आवे त्यां थकि प्रगट थइ आवे छे एम ए भगवानना जन्मने देह मुक्यानिरिती तो अलोकिक छे अने ज्यारे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे तेने दृढ करिने समझशो तारे तमने कोइ प्रकारनुं विघन कल्याणना मारगने विषे नहिं थाय ने ए भगवानना स्वरूपनि दृढताविना तो गमे तेटला त्याग राखो ने गमे तेटला उपवास करो पण कोइ रित्ये स्वांमि भागशे नहिं अने तमे एम केशोजे अमने तो ए स्वरूपनि तमे जेमकहोछो तेम दृढता छे तो पण प्राणइंद्रियो के मलिन नथी थातां तो एतो परमेश्वरनि इछाये एम रह्युं छे एम समझवुं पण तेने कांइ करवुं रह्युं नथी एतो कृतार्थ छे अने एतो

सर्व साधनना अंतने पांम्यो छे अने जो भगवानना स्वरूपनि अरिरित्ये दृढता होय ने कदाचित जो निर्माननिर्लोभ नि-ष्कामनिःस्वादनेनिःस्नेह एमां कांइक थो डि घणिकाच्यपरहिजाय तो तेनि कांइ चिंता नथी पण भगवानना स्वरूपमां जो कोइ रित्यनि समझ्पामां कसर रहि तो कोइ रित्ये वांधो भागशे नहि माटे देह छ-ते ज प्रकारे आवो रहस्य समझाय तेवो उपाय करवो अने आ वार्त्ता यथार्थ स-मझाणि होयने कांइक प्रारब्ध कर्मने वश थइने जो कोइक नीच उंचदेहनि प्राप्ति थाय तोपण वृत्रासुरनि पेठे ज्ञान जाय नहि तथा जेम भरतजीने मृगनो देह आव्यो तोपण पुर्वजन्मनुं ज्ञान टल्युं नहि

एवुं आज्ञाननुं अतिशे माहात्म्य छे अने नारदसनकादिकने ब्रह्मादिकदेव तेमनि सभामां पण निरंतर आज वार्ता थाय छे अने आवि भगवत स्वरूप संबंधि जे वार्ता ते तो शास्त्रमांथी पण पोतानि मेले समझाय नहि अने सदग्रंथुमां आवि वार्ता तो होय पण ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थाय छे तारे तेमना मुखथकिज ए वात समझ्यामां आवे छे पण पोतानि बुद्धि बळे करीने सदग्रंथुमांथि पण समाझाति नथि अने जेने आवि रित्ये यथार्थ भगवाननुं स्वरूप समझ्यामां आव्युं छे तेने जो भूत भविष्यने वर्तमान ए त्रण्ये काळने विषे दृष्टि पोचति होय तो पण तेने ए वातनो कांई गर्व होय नहि अने को-

इने वर के शाप दे नहीं ने कोइ ठेकांणे वर के शाप दे पण खराने कोइ ठेकांणे निरभे रहे ने कोइ टेकांणे बीये पण खरा पण तेणे करीने पोते कांइ हर्ष शोक मनमां लावे नहीं अने जेने भगवाननो आकह्यो एवि रित्ये दृढ आश्रय होय ते जांकिने तो भुंडुं कर्म करेज नहि पण कदाचित भुंडा देशकालादिकने जोगे करिने जो कांइक अवलुं कर्म थइ जाय तोपण ते दृढ आश्रय वाला कल्याणना मार्ग थकि पडि जाय नहि माटे ए जे भगवाननो दृढ आश्रय छे एवा निर्विघन मार्ग कोइ नथि ए वात जेने समझांणि होय तेनो तो अति मोटो आशय होय जुवोने अमारे परमहंस तथा सत्संगी स-

मस्त पासेथि कांइ स्वार्थ साधवो नथी
तोपण कोइने बोलाविये छइये कोइकने
वढिये छइये कोइने काढि मुकिये छइये
तेनुं एज प्रयोजन छे जे कोइ रित्ये आ
वात समझाय तो बहु सारु थाय माटे
आ वार्त्ता छे ते सर्वे द्रढ करिने राखज्यो
अने जे तेजने विषे मूर्त्ति छे तेज आ
प्रत्यक्ष महाराज छे एम जांणज्यो ने जो
एम न जणाय तो एटलुं तो जरुर जांण-
ज्यो जे अक्षररुप जे तेज तेने विषे जे
मूर्त्ति छे तेने महाराज देखे छे एम जां-
णशो तोपण तमारे मारे विषे हेत रेशे
तेणे करिने तमारु परम कल्यांण थाशे
अने आ वातने नित्ये नविने नवि राखज्यो
पण गाफलपणे करिने विसारि देशांमां

आज छे तेविज काल्य नवि राखज्यो अने तेविज देहनो अंत थाय त्यां सुधि पण दिनदिन प्रत्यें नविने नवि राखज्यो अने जे जे भगवाननि वात करो ते ते वातने विषे आ वातनुं विज लावज्यो एम अमारि आज्ञा छे अने आ वार्त्ता तो एवि जीवनदार छे जे देह रहे त्यां सुधि पण नित्य प्रत्ये करवि अने देह मुकिने भाग वतितनुये करिने पण आज वार्त्ता करवि छे ने आजे अमे तमने वात कहि ते सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे ने अनुभवमां पण एमज द्रढ छे अने अमे प्रत्यक्ष नजरे जोइने तमने आ वात कहि छे ने जो प्रत्यक्ष जोइने न कहि होय तो अमने सर्वे पर-महंसना सम छे एवि रित्ये श्रीजिमहा-

राजे पोताना भक्त जननि शिक्षाने अर्थे परोक्षपणे पोताना पुरुषोत्तमपणानि वार्त्ता करि तेने सांभलिने सर्वे साधु तथा हरि-भक्त ते एमज मांनता हवा जे जे तेजने विषे मूर्ति कहि तेज आ श्रीजिमहाराज प्रत्यक्ष प्रमाण छे ॥

॥ संवत् १८७७ ना आसो वदि अमांस जे दिवालि तेने दिवस गांम श्री करियांणि मध्ये वस्ताखाचरना दरबार-मां उत्तरादेवारच ओरडानि आगल्यदि पषालपुरि हती अने ते दिपमाल मध्ये मंचबांध्यो हतो ने ते मंचउपरच छपरप-लंग बिछाव्यो हतो ते उपरच स्वामिश्री सहजानंदजी महाराज विराजमान हता अने सोनेरि बुट्टादार राता किनखापनो

सुरवाल पेर्‍यो हतो अने नरनारायण स्वामिनारायण नामे अंकित एवा काला- किनखापनी डगली पेहेरि हती अने माथा उपर सोनेरि तारना फरता छेडानि कसुंबल पाघ बांधि हती अने असमांनी रंगनो फेंटो कमरे कसीने बांध्यो हतो- अने कंठने विषे पीला पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगल्य मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हति पछे दिवबंदरना हरिभक्त आव्या हता तेणे श्रीजीमहाराजनि पूजा करचा ने अर्थे प्रार्थना करि पछे श्रीजीमहाराजे ते सिंहासन उपरथी उतरिने ने ते भक्तजन तांमा जैने तेनि पूजा अंगीकार करि प-

छे तेनां आपेल वस्त्र तथा पीलुं छत्र तथा
पादुका तेनुं गृहण करिने पाछा ते सिंहा-
सन उपरय विराजमान थाता हवा पछे
श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे आटलां
आटलां वर्ष थयां तेमां अमारे अर्थे के-
ट्लाक हरिभक्तवस्त्र तथा हजारु रुपैयाना
अलंकार लावे छे पण अमे आवि रित्ये
कोई सांमा जैने लेता नथी अने आवि
रित्ये कोइनां वस्त्र घरेणां पेहरिने राजी
थया नथी अने आज तो अमारे ए हरि
भक्त उपरन्य अतिशें राजीपो थयो पछे
मुनि बोल्याजे एवाज एपेमिहरिभक्तछ
एवा सभामां दिनानाथ भट्ट आविने श्री
जीमहाराजने पगे लागीने बेठा पछे श्री
जीमहाराजे भारे भारे वस्त्र हतां ने सर्वे

दिनानाथ भट्टने आप्यां पछे मुक्तानंद स्वामीये पूछयुं जेहेमहाराज भगवान पोताना भक्त उपरत्य कियेगुण करिने राजी थाता हशे पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे भक्तजन काम क्रोध लोभकपटमान इर्ष्याने मच्छर एटलांवानांये रहित थइने भगवाननी भक्ति करे तेनी उपरत्य भगवानराजी थायछे ले तेमां पण मच्छरछे ते सर्व विकार मात्रनो आधार छे माटे श्री व्यासजीये श्रीमद्भागवतने विषेनिरमच्छर एवा जे संत तेनेज भागवत धर्मना अधिकारि कह्या छे माटे मच्छर ते सर्व विकारथी झिणो छे अने मच्छर टळवो ते पण घणो कठणछे पछे ब्रह्मानंद स्वामिये पुछयुं जे मच्छर टल्यानो शो उपाय छे

पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे संतने मा-
र्गे चाले ने जे संत होय तेनो तो मच्छर
टले अने जेने संतने मार्गे न चालवुं होय
तेने तो मच्छर न टले पछे वलिमुक्तानंद
स्वामिये पुछ्युं जे मच्छर उपज्यानो शो
हेतु छे पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए
क स्त्री धन अने सारुं सारुं भोजन ए
त्रण्य मच्छरना हेतु छे अने जेने ए त्रण्य-
वानां नहोय तेने मान छे ते मच्छरनो हेतु
छे अने जे मच्छरवालो हशे तेने तो अमे
आ भट्टने वस्त्रादिधां तेमां पण मच्छर आ-
व्यो हशे पण मच्छरवालाने एवो विच्यार
न आवे जे वस्त्रलाव्या हता तेने धन्य छे
जे आवां भारे वस्त्र महाराजने पहेराव्यां
अने महाराजने पण धन्य छे ते तरत

ब्राह्मणने देइदिधां एवो जे विचार ते मच्छरवालाना हृदामां न आवे अने कोइ का लेने कोइक देता पण मच्छरवालो होय ते ठालो ठालो वच्यमां बलि मरे अने अमारे तो काम क्रोध लोभ मान मच्छर इर्ष्या ए सर्वेनो क्यारेयहइयामां लेश पण आवतो नथी अने शब्द स्पर्शरुपरस-ने गंध ए जे पंच विषय तेनो तो हैयामां अतिशे अभाव वर्त्ते छे पण पंच विषय मांथी एके ने विषे लेश मात्र भाव थातो नथि अने जेटलुं कांइक अन्नवस्त्रादिकनुं ग्रहण करता हशुं ते तो भक्तनि भक्तिने देखीने करता हशुं पण पोताना देहनासुख-खने कर्थे नथी करता अने अमारे जे खावुं पीवुं ओढवुं पहेरवुं छे ते सर्वे संतने

सत्संगीने अर्थे छे अने जो एमने अर्थे न जाणाय ने पोताने अर्थे जणायतो अमे एनो ततकाळ त्याग करिदइये अने अमे आ देहराखीयेछैये ते पण सतसंगीने अर्थेज राखीयेछैये पण बिजो कोइ देह राख्यानो अर्थ नथी ते अमारा स्वभावने तो मूळजी ब्रह्मच्यारिने सोमलो खाचर आदिक जे हरिजन छे ते केटलाक वर्षथी अमारे पासे ने पासे रहेछे ते जांणे छे जे महाराजने एक प्रभुना भक्तिविना काइ संघाथे हेत संबंध नथी ने महाराज तो आकाश सरखानिर्लेप छे एम निरंतर अमारे पासेना रहेनारा छे ते अमारा स्वभावने जाणे छे अने अमेतो जे मन कर्म वचना परमेश्वरना भक्त छे तेने अर्थे मा-

मारां देह पण श्रीकृष्णार्पण करि राख्यां छे माटे अमारे तो सर्व प्रकारे जे कोइ भगवानना भक्त छे ते संघाथे संबंध छे अने भगवानना भक्तविना तो अमारे चौदलोकनि संपत्ति तेत्रखला जेवि छे अने जे भगवानना भक्त हशे ने भगवान संघाथेज दृढप्रिति हशे तेने पण रमणीक जे पंचविषय तेने विषे तो आनंद उपजे ज नहि अने देहने राख्या सारु तो जेवा तेवा जे शब्दादिक विषय तेणे करीने गुदराण करे पण रमणिक विषय थकी तो ततकाल उदासथै जाय अने एवा जे होय तेज भगवानना परिपूर्ण भक्त कहेवाय ॥ ॥ इतिवचनामृतं ॥ का. ६ ॥

अथ नारायण कवच.

विश्वरूप इंद्र प्रत्ये कहे छे हे इंद्र जे वारे भय आवे ते वारे नारायणरूप बख्तर पेहेरवुं । ते पगथकि ते मस्तक पर्यंत नारायणनि मूर्त्ति अवतारादिक समेतना नाम ते सर्वांगने विषे धारण करवां ते कहे छे जे हरि छे ते मारी सर्व स्थानक थकि रक्षाने करो । ते हरि केवा छे तो गरुडना वांसा उपर पण राख्याछे आठ हातमां आठ आयुध धर्या छे तेम एकतो कतां शंख १ बीजो अरीते चक्र २ त्रिजि ढाल ३ चोथि तरवार ४ पांचमी गदा ५ छठो तीर ६ सातमुं ते धनुष ७ आठमो पाश ८ ए आयुधने अष्टसिद्धि ए सहित छे। पछे एम कहेवुं जे जळने विषे मत्स मूर्त्ति

एवा जे भगवान ते जळजंतुना भय थकि ने वरुणना पाश थकि मारी रक्षा करो ॥ अने पृथ्वीने विषे बटुक वामनजी ते रक्षा करो आकाशने विषे विश्वरूप एवा त्रण्य पगलां वाळा एवा भगवान ते रक्षा करो । वळि विषम स्थानकने विषे वळि वनमां ने रणसंग्रामना मुखने विषे असुरजुथना वेरि एवा नृसिंह प्रभु जेत रक्षा करो ते नृसिंह मोटा अतिशे हासने करता छे तेणे करीने दिशाओमांथी शब्द उठछे । वळि स्त्रीयुंना गर्भ पण पडि जाय छे ॥ वळि मार्गने विषे यज्ञमूर्त्ति एवा पोतानि डाढे करीने उपाडि छे पृथ्वी जेणे एवा वाराहजी जेते रक्षा करो । वळि लक्ष्मणे सहित एवा भरतना मोटेरा भाई रामजि-

रुप एवा भगवान जेते पर्वतना शिखरने विषे अथवा परदेशने विषे मारी रक्षा करो ने परशुराम रक्षा करो । वली नारायण एवा जे भगवान ते मारी अति भुंडा धर्म थकि ने विमुख थकि पण रक्षा करो ॥ नर एवा भगवान जेते मारी हास जे कोयनि ठकडि करवि तेज मोटी खोट ते थकि रक्षा करो वलि योगना स्वामि एवा दत्तात्रि नामे भगवान जे ते अयोग थकि कहेतां योगना भ्रष्टपणा थकि मारी रक्षा करो ॥ वलि सर्व गुणना स्वामि एवा कपील नामे भगवान जे ते मारी सर्व गुण थकि रक्षा करो । सनकादिक नामे भगवान ते मारी कामदेव थकि रक्षा करो ॥ हयग्रीव नामे भगवान जे ते

मारगने विषे कोइक देवतानि ठेकाडि थकि मारी रक्षा करो ॥ देव ऋषीमां मोटा एवा नारदजी जेते मारी भगवाननी पुजामां कांइ भुल्य पडे ते थकि रक्षा करो बळी काचबारुप भगवान जे ते मारी समग्र नर्क थकि रक्षा करो वलि धनवंतरी एवा भगवान जे ते मुने अपथ्य जे कांए न खावानि वस्तु खवाए ते थकि रक्षा करो । वलि जीत्युं छे मन जेणे एवा ऋषभ नामे भगवान जे ते द्वंद्वरुप जे भय राग द्वेषादिक ते थकि मारी रक्षा करो वलि यज्ञरूप एवा भगवान जे ते मारी लोकना अपवाद अपजस थकि मारि रक्षा करो वलि बलभद्ररुप हवा भगवान जे ते कालथकि मारी रक्षा करो वलि

अहिंद्र केतां शेषनारायण एवा भगवान
जे ते क्रोधरुप एवोजे सर्पनो समुह तेथ-
कि मारि रक्षा करो वलि व्यासरुप एवा
भगवान जे ते मारि अज्ञान थकि रक्षा
करो ॥ वलि बुद्ध नामे भगवान जे ते
पाखंडना समूह थकि ने प्रमाद थकि ने
मदोन्मत्तपणा थकि मारी रक्षा करो ॥
वलि कल्किरूप एवा भगवान जे ते क-
लिनो मल ते थकि मारि रक्षा करो ते
भगवान केवा छे तो धर्मनि रक्षा करवा
माटे घणा किवा छे अवतार जेणे वलि
केशव एवा भगवान जे ते गदाये करीने
प्रातःकाले मारी रक्षा करो ॥ वलि ग्र-
हण किधि छे वेणुं वांसलि जेणे एवा
गोविंद नामे भगवान जे ते गायुं आव्या

टाणे मारी रक्षा करो । नारायण नामे भगवान जे ते प्रातःकाल जे काचा बपोर ते टाणे मारी रक्षा करो ॥ ते भगवान केवा छे ग्रहण किधि छे पोतानि शक्ति जेणे वलि चक्र छे हाथमां जेने एवा भगवान विष्णु नामे जेते मारी मध्यानने विषे रक्षा करो ॥ वलि अति मोटुं छे धनुष जेने एवा मधुदानवना मारतल एवा भगवान जेते देव प्रभु मारी पाछल्या पहोरने विषे रक्षा करो वलि त्रण्य ब्रह्मादिकनि मूर्ति एवा लक्ष्मीना स्वामि जेते मारी सायंकाले रक्षा करो वलि ऋषिकेश एवा जे भगवान जे ते मारी रात्रिना मुखने विषे रक्षा करो ॥ वलि अर्ध रात्रिना मुखने विषे पण ऋषि-

केश नामे भगवान मारी रक्षा करो ॥ वलि पद्म नाम नामे भगवान जे ते एकज मारी महामध्यरात्रीने विषे रक्षा करो ॥ वलि श्रीवत्सधामा एवे नामे भगवान जेते समर्थ मारी पाछली रातने विषे रक्षा करो ॥ तरवारना धरतल एवा दुष्ट जनना पिडतल एवा समर्थ भगवान जेते प्रातःकालने विषे कहेतां मोटा प्रभातने विषे रक्षा करो ॥ दामोदर नामे भगवान जेते संध्या टाणे मारी रक्षा करो ॥ वलि विश्वना स्वामि भगवान् एवा काल मूर्त्ति जेते प्रभातने विषे रक्षा करो ॥ वलि प्रलयकालना अग्नि विजे तीखी छे धारा जेनि एवुं ने भगवाने मुक्युं एवुं ने चार कोरे भमतुं एवुं चक्र जे ते ततकाल

मारा वेरिना सैन्यने बालो, बालो; जेम वायुछे मित्र जेनो एवो अग्नि जे ते खडने बाले छे तेम ॥ वलि भगवाननि गदाने कहेवुं हे गदा तुं वज्रना परस जेवाछे अ-ग्निना कण जेमां एवि छो ने भगवान ने वालि छो माटे कुष्मांड नामे जे असुर ने वैनायक ने यक्ष ने राक्षस अने भूत ने पिशाच ने ग्रह तेने अतिशे पीड्य पीड्य ॥ वलि मारा वेरिने भुको करी नाख भु-को करी नाख ॥ एम भगवाननी गदाने कहेवुं वलि भगवानना शंखने कहेवुं हे मोटा शंख श्रीकृष्ण तेण्ये वजाड्यो ने भ-यंकर छे शब्द जेनो एवो तुं ते मारा वे-रिना हृदयने कंपावतो थको जे यातुधान नामे असुरयोनि प्रथम नामे भुतयोनि

प्रेतयोनि मातृयोनि पिशाचयोनि वलि दुःस्वनि देवा वाळी कांइक भयंकर छे दृष्टि जेनि एवा जे जीव तेने भगाव भगाव एम शंखने कहेवुं ॥ वलि भगवान नि तरवारने कहेवुं जे तीखी छे धारा जेनी ने तरवारमां मोटि तरवार तुंने भगवाने मुकि थकि मारा वेरिनुं जे सैन्य तेने छेद छेद हे सो चंद्रवालि ढाल पाप रूप छे नेत्रजेनां एवा पापी जे मारा वेरी तेना नेत्रने तुं ढांक ढांक ॥ वलि तेना नेत्रने फोड फोड वलि जे अमने विग्रह थकि भय होय ने वलि जे भय केतु ने राहु थकि होय वलि जे हिणां माणस थकि होय वलि जे भय कोइ समर्थ थकि होय वलि जे भय कोइ वाढना जीव जे

सिंहादिक थकि होय तेथी मारी रक्षा करो बिजो नारायण क्वच तेनो विवेक जे पंच वर्त्तमानमां फेर पाडे एवुं जे मन तथा इंद्रियोना देवता तेने जित्या सारु नारायणना नामरुप बख्तर पहेरवां ने एम न समजाय तो मोह विवेकमां प्रगट छे ते विचारजो. आ खरडानो नियम राखजो, वांचिने पछे अन्न लेवुं एम देह पर्यंत राखजो कर्मयोगि तथा सांख्ययोगि सर्वेने ए वात छे जेटलां जेथी थाय तेटलो विचारजो, भण्या न होय तो सांभलजो सांभलिने अने ते वात विचारिने आ कागल स्वामिये लख्यो छे ते वात बिजा आगल करवी बिजा कोइ न होय तो मनमां जाणवी स्वामीनारायण स्वा-

मीनारायण कामकाज करतां करवुं जे पाप सर्वे भस्म थइ जाय ते सारु स्वामीनारायण स्वामीनारायण करवुं ॥

॥ इति श्री नारायण कवच संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टक ॥

जलधर सुंदर मदन मनोहर हृदय तमो हर कृष्ण हरे; वृष कुल भूषण दलित विदूषण दिव्य विभूषण दिव्य गते; जय जय जयकर दीन दयाकर जगति दिवाकर दिव्य पते ॥ १ ॥ निज जन रंजन भवभय भंजन भवन निरंजन भक्त रते; मनिजन मंडन विषय विखंडन खल जन दंडन दंड विधे. जय० ॥ २ ॥ असुर निकंदन सुर वृष नंदन चर्चित चंदन

मुक्त मुने; भव जल तारण दोष निवारण मंगल कारण मुक्ति पते. जय० ॥ ३ ॥ सरसिज लोचन जनि मृति मोचन रवि-शशी रोचन रागि रते; असुर विमोहन सुर सुख दोहन वारण रोहण शिव्र गते. जय० ॥ ४ ॥ निज हित शासन शाप विनाशन हयगरुडासन सादि वृते; दुर्ग पृ-रासन भक्त निवासन भ्रजित कुवासन भक्त रते. जय० ॥ ५ ॥ रचित निजावन भक्ति विभावन पंक्ति सुपावन पुण्य पते; शंकुरु शंकर वैरि भयंकर धर्मधुरंधर योगी गते. जय० ॥ ६ ॥ खंडित चंडं पंडित मंडं जित पाखंडं दंड भटम्; कंपितकालं वृष कुल पालं वर वनमालं पीत पटम्. जय० ॥ ७ ॥ श्रित सुच कंदं बोधित मंदं सह-

जानंदे त्वाऽहं भजे कुरुतव दासं चर्ण निवासंत्यक्त कुवासं योगमुने. जय० ॥८॥

॥ अवकाशना समय माटे ॥

॥ अथ एकादशी महात्म ॥

॥ लीख्यते ॥

दशमीना दिवस सूर्य आथम्या पछी सर्वे विधिना जाणनारा एवा श्री सहजानंद स्वामि ते जे ते सभाने विषे उंचुं आसन तेने विषे बेठाने प्रसन्न छे मुख ते जेनुं एवा छता पोताना हरिभक्त प्रत्ये बोलता हवा ॥ १ ॥ अने सर्वे साधु तथा हरि भक्त तथा बाइयुं ते मारा वचनने सांभलो अने हुं तमारा सर्वेनो

गुरुछुं ते माटे तमारा हितनी वात करुछुं ॥ २ ॥ अने हे हरि भक्तो आवते दिवस प्रबोधनी एकादशी छे माटे अमारा आश्रित सरवे तेमणे तो एकादशीनुं वृत करवुं ॥ ३ ॥ अने पुरुषोत्तम एवा जे श्रीकृष्ण ते अमारा इंष्ठ देवछे, ने एकादशी तेमनुं वृतछे माटे सवे तेमणे जतने करीने करवी ॥ ४ ॥ अने मूर्ख एवो जे पुरुष ते जे ते एकादशीनो उपवास न करे ते मनुष्य जे ते अंधकार छे, जेने विषे एवो रौरव नामे जे नरकनो कुंड तेने विषे पडेछे ॥ ५ ॥ अने ब्रह्महत्या आदिक सरवे पाप छे ते एकादशीना दिवस अन्नने आश्रिने रहेछे ॥ ६ ॥ अने ते सरवे पाप ते जे ते एकादशीने दिवस

अन्नना खानारा मनुष्यने वळगेछे ते मा बापने गुरु तेमने मार्यानुं जे पाप छे ते तेने लागे छे. ॥ ७ ॥ अने एक एक महिने बबे एकादशीयुं आवेछे ते माटे जो एक एकादशीना दिवसे अन्नने खायतो एक एक कोळिए आखी पृथ्वीनुं पाप लागे छे ॥ ८ ॥ अने ब्रह्महत्यादिक सर्वे पाप तेना निवारणनो उपाय तो डाह्या पुरुष तेमणे शास्त्रने विषे कह्यो छे पण एकादशीना दिवसे अन्नना खानारा पुरुषने पापनुं नीवारण नथी कह्युं ॥ ९ ॥ अने आ लोकने विषे जे मनुष्य दारु पीए ते दारुनो पीनारो एकलो नर्कमां पडे छे ने एकादशीना दिवसे जे अन्ननो खानारो मनुष्य तेतो पोताना पित्री स-

हित नर्कमां पडेछे ॥ १० ॥ अने भगवा-
नना भक्त एवा पुरुष तथा स्त्री ओ ए सर्वे
समय एकादशीओ करे ने अंधारीआनी
तथा अजवालीआनी सर्वे एकादशीयुं
बराबर छे- अधिक न्यून नथी. ॥ ११ ॥
अने आठ वर्षथी अधिक ने एंह्शी वर्षथी
ओछा जे मनुष्यने वर्ष थयां होय ते सर्वे
मनुष्यने बे पखवाडीआनी एकादशीओ
करवी ॥ १२ ॥ अने ब्रह्मचारी तथा
गृहस्थ तथा वानप्रस्थ तथा संन्यासी ए
सर्वेने तथा स्त्रीओ सर्वेने एकादशीनुं व्रत
करवुं ॥ १३ ॥ अने जे विधवा स्त्री होय
ते जो एकादशीने दिवसे अन्नने खाय
तो तेनुं सर्वे पुन्य नाश थई जाय ने ते
विधवा स्त्रीने दिवस दिवस प्रत्ये ब्रह्मह-

त्यानुं पाप लागे छे ॥ १४ ॥ अने ए-
कादशीना दिवस सर्वे मनुष्य ते जे ते
नियममां छे इंद्रिओ जेनी एवो छतो
उपवास करीने मधु सुदन एवा जे भग-
वान तेमनी पूजा करवी ॥ १५ ॥

अने ते भगवाननी कथा सांभलवी ने
कहेवी तेणे करीने रात्रिने विषे जाग्रण
करवुं एवी रीत्यनुं जे वृत तेने जे मनुष्य
करे ते मनुष्य सर्वे पापने टाली नांखे छे
ते केनी पेठे तो शरद रुतु जेम जलना
मेलनो नाश करे तेम ॥ १६ ॥ अने ए-
कादशीनुं वृत ते रुपी जे अग्नि तेणे
करीने सो जन्मे करीने कर्यां जे पाप ते
सर्वे बलीने भस्म थइ जाय छे ॥ १७ ॥
अने एकादशीनुं वृत जेवुं पापने नाश

करनारुं छे तेवुं तो मनुष्यना पापने टाळे एवुं कोइ नथी ॥ १८ ॥ अने शुभ एवुं जे एकादशीनुं वृत ते जे ते मनुष्य तेमणे ज्यां सुधी नथी कर्युं त्यां सुधी मनुष्यना देहने विषे पाप रहे छे पण वृत कर्या पछी नथी रहेतुं ॥ १९ ॥ अने चंद्रमानुं तथा सूर्यनुं ग्रहण थए छते कुरुक्षेत्रने विषे गायने दाने करीने जेटलुं पुन्य थाय छे तेटलुं पून्य तो एक एकादशीना उपवासे करीने थाय छे ॥ २० ॥ अने धन स्त्रीना त्यागी एवा लाख तपस्वी ते जेना घरना विषे साठ हजार वर्ष सुधी जमे तेणे करीने जेटलुं पुन्य थाय छे ॥ २१ ॥ तेटलुं पुन्यतो पोताना धर्मना विषे द्रढ निष्ठावाळो अने भगवाननो आ-

श्रित एवो जे मनुष्य तेने एक एकादशी
ने वृते करीने थायछे ॥२२॥ अने हजार
अश्वमेध यज्ञ करे ने सो राजसूय यज्ञ करे
ते सर्वेनुं पून्य एक एकादशीना पुन्यनो
सोलमो भाग तेनी बराबर नथी थातुं ॥
॥२३॥ अने अगियार इंद्रिये करीने पूर्वे
कर्यां जे पाप ते सर्वे एकादशीने उपवासे
करीने सर्वे नाश पामे छ ॥ २४ ॥ अने
एकादशी बराबर पापनुं नाश करनारु
कोइ नथी शा हेतु माटे तो (व्याज) जे
रिसावुं ए आदिक वडे करीने एकादशी
करी होय तो ते एकादशी जे ते मनुष्यने
जमपूरीनुं दर्शन न थवा दे ॥ २५ ॥
अने ते एकादशी केवी छ तो स्वर्गने
आपे एवी छे ने मोक्षने आपे एवी छे,

ने शरीरनां रोगने नाश करनारी छे ने दीकरा तथा स्त्री तथा राज्य ए सर्वेने आपे एवी छे ॥ २६ ॥ ने एकादशीने बराबर गंगा नथी थाती, तथा गया तीर्थ नथी थातुं, तथा काशी नथी थाती, तथा पुष्करनामे तीर्थ नथी थातुं, तथा कुरु क्षेत्र नथी तथा रेवा नामे नदी नथी ॥ २७ ॥ अने यमुनाजी नथी, तथा चंद्रभागा नामे नदी नथी थाती शा माटे तो एकादशीना व्रतनो करनारो मनुष्य ते जे ते दाखडो कर्या विना परम मोक्षने पामे छे ॥ २८ ॥ अने रात्रीना विषे जागरणे सहित एकादशीनो उपवास करीने सर्वे पाप थकी मुकाणो एवो जे मनुष्य ते भगवानना धामने पामे छे ॥२९॥

अने ते पुरुष दश मातानी पेढी तथा दश पितानी पेढी तथा दश पोतानी स्त्रीनी पेढी तथा दश पोतानी पेढी एवी रीत्ये चालीस पेढीनो मोक्ष करे छे ॥ ३० ॥ अने कल्पवृक्ष तथा चिंतामणीनी पेठे एकादशी मनुष्यना मनोरथनी पुरनारी छे ते हेतु माटे ते वृते करीने मनुष्यनुं पूर्ण काम थाय छे ॥ ३१ ॥ अने एकादशीना वृतने आशयां एवा जे उत्तम मनुष्य ने जे ते चतुर्भुज थईने ने गरुडनी करी छे स्वारी जेमणे ॥ ३२ ॥ ने मालायुं छे कोटमां जेमने, ने पीलां छे पीतांबर जेमने, एवा जे मनुष्य ते जे ते भगवानना धामने पामे छे अने फरीने संसारने नथी पामतां ॥ ३३ ॥ अने आ पृथ्वीना विषे

सर्वे पाप रुपी इंधणां (लाकडां) तेने वालनारो जे अग्नि सरखो एवो आ एकादशीनो महिमा ते में कह्यो ॥ ३४ ॥ अने हे भक्तो नानां मोटां जे पाप तेने बाली नाखनारुं एकादशीना व्रतनुं जे आ महात्म ते जे ते में कह्युं ते महात्म्यने पोताना अंतरमां धारीने सर्वे तेमणे पोताना हितना अर्थे एकादशीनुं व्रत जे ते करवुं ॥ ३५ ॥ अने सर्वे एकादशीयुंनो उपवास करवो तेने विषे असमर्थ एवा जे मनुष्य ते जे ते फलाहार तथा चार घडी दिवस रहे त्यारे भोजन करे तथा मध्यान हविश्यान्न भोजन करे एवी रीते करवाने असमर्थ होय ते मध्याने अन्ननुं भोजन करे ऐ रीत्ये गुण पक्षे करीने पण व्रत करवुं

॥२६॥ इति एकादशी माहत्म ॥ समाप्त ॥

॥ पद राग गरबी. ॥

उच्छवनी प्यारी केशवनी, आज ए-
कादशी उच्छवनी ॥ कोटिक गौ केरां
दान करे पण, नावे तोले एना लवनी ॥
आ ॥ २ ॥ मंगल रूप सदा सुखकारी,
वाहली निधि जन वैश्नवनी ॥ आ ॥ १ ॥
वचन प्रमाणे करे वृत जेनुं त्रास मटेरे
मृत्यु भवनी ॥ आ ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद कहे
व्रत करवुं, एम आज्ञा स्वामी उद्धवनी
॥ आ ॥४॥ पद ॥ १ ॥ हरख अति भेच्या
कृष्णपति, आज एकादशी हरख अति ॥
मन मोहन मारे मंदीर आव्या, अधिक
थई हुंतो पुन्यवति ॥ आ ॥ १ ॥ पितां-

बर आभुषण पेरी, चालतो वालो हंसगती ॥ आ ॥ २ ॥ पुरुषोत्तम पूरण वर पामी, रही नै स्वामी हवे एक रती ॥आ॥३॥ब्रह्मानंद कहे हरि वर वरतां, चौद भुवनमांहुं थई रे सती ॥ आ ॥ ४ ॥ पद २ ॥ माव मल्या तन ताप टल्या आज एकादशी। माव मल्या पूरव भवनी प्रीत जाणीने, आवीने अम पर अढल ढल्या ॥ आ ॥ १ ॥ मुनीवर ध्यान धरी धरी थाक्या, कोइथी वालो नव जाय कल्या ॥ आ ॥ २ ॥ मारुं मंदिरियुं पोतानुंरे जाणी, भूधर सुख दुखभांईं मल्या ॥ आ ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद कहे हरिवर पामी, आनंद केरा ओघ वळ्या ॥ आ ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥ सुफल फली हुंतो हरिने मळी, आज एकादशी

सुफल फली ॥ चोंपे करी नट नागर सारु, सेज सजी काजु कुसम कली ॥ आ ॥ १ ॥ रस वस होई रही रसिया संग ज्युं भिसरी पइमांहीभली ॥ आ ॥ २ ॥ नित्य नित्य प्रेम लउं उर धरती, हरिचरणे मनवृत्ति हली ॥ आ ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद कहे हरिवर वरीया, जनम मरण केरी शंका टली ॥ आ ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥

पद राग गरवी.

कोडे कोडे एकादशी कीजीएरे, एवुं व्रत जावा नव दीजीएरे ॥ कोडे ॥ एवुं व्रत करे ते धन्य मानवीरे, ते तो नाख्यो कोटीकवार जान वीरे ॥ कोडे ॥ १ ॥ जेणे वचन प्रमाणे व्रत आदर्युंरे, तेणे

कारज पोतानुं सरवे करयुंरे ॥ कोडे ॥ ॥ २ ॥ एनो महीमा मुनीवर गायछे रे, अवीनासी मळ्यानो उपायछे रे ॥ कोडे ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद कहे एमां हरी रह्या वसीरे, कीधी ओधव प्रमाणे एकादशीरे ॥ कोडे ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥

हरीजन होय ते हरीने भजेरे, व्रत एकादशी ते केदी नव तजेरे ॥ हरी ॥ जाणे मात समान परनारनेरे, गणे तुच्छ सरीखो संसारनेरे ॥ हरी ॥ १ ॥ मद्य मांस हराम जेने नवखपेरे, जीमे रात्य दीवस प्रभुने जपेरे ॥ हरी ॥ २ ॥ भापा जीव इश्वरना जाणे मर्मनेरे, रटे ब्रह्म थइने परीब्रह्मनेरे ॥ हरी ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंदना वाल्हानी छबी उर धरेरे, मतवाळो थइने

जगमां फरेरे ॥ हरी ॥ ४ ॥ पद ॥ २ ॥

भले आवी अनुपम एकादशीरे, मारे वाले मुज सामु जोयुं हसीरे ॥ भले ॥आज वाधी आनंद केरी बेलडीरे, थै रसीया संगाथे रंग रेलडीरे ॥ भले ॥ १ ॥ लटकाळा कुंवर नंदलालनीरे, चीतडामां खुती छबी चालनीरे ॥ भले ॥ २ ॥ रंगभीनो रमे रसरंगमांरे, अती आनंद थयो छ मारा अंगमांरे ॥ भले ॥ ३ ॥प्रीती जाणी रसीलो वचने पळ्यारे, ब्रह्मानंदनो वालो मुजने मळ्यारे ॥ भले ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥

धन्य धन्य एकादशी आजनीरे, रुडी नीरखी छबी व्रजराजनीरे ॥ धन्य ॥ फुलडानां छोगांवे चित्तमां धरयांरे, ते जो-

इमे मारां नेणां ठर्यांरे ॥ धन्य ॥ १ ॥ भाळी केसर तीलक रुडुं मालमांरे, मारी लगनी लागी छे नंदलालमांरे ॥ धन्य ॥ २ ॥ वांकी भ्रकुटीमां मन मारु भमेरे हवे बीजुं दीठुं ते मुने नव गमेरे ॥ धन्य ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद कहे रुपाळी एनी आंखडीरे, प्यारी लाल कमळ केरी पांखडीरे धन्य ॥ १ ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥

पद राग गरबी.

धर्म कुंवर घनस्यामजी, मारा प्राण तणा आधार जोईने जीवुंछुं ॥ टेक ॥ तन मन धन तम उपरे, लई वारुंवार हजार ॥ ॥ जो ॥ १ ॥ सुंदर मूर्त्ति मोहनी, मारा मनमां खूनी राज ॥ जो ॥ तम विना मुने

कानजी, बीजुं कांइ न मुजे काज ॥ जो
॥ २ ॥ पांपण पर आंटा दई, तमे बां-
धी पाग अनुप ॥ जो ॥ कोटी कंदरप
वारणे, लई वारुं एवुं रुप ॥ जो ॥ ३ ॥
भाल तिलक शोभा धणी, जाणे भ्रकुटी
काम कबान ॥ जो ॥ कमल नयन कटा-
क्षमां, मारा ताणी ल्योछो प्राण ॥ जो ॥
॥ ४ ॥ मधुर मधुर हसवुं जोइने, वाधे
प्रेम अपार ॥ जो ॥ त्रिभुवनमां एवा
कोण छे, जे वश नव थाय नार ॥ जो ॥
॥ ५ ॥ वाम करणमां श्याम छे तिल नि-
रख्या जेवो नित्य ॥ जो ॥ तिल जोई
जमणा गालमां, वाधे प्रेमानंदने प्रीत ॥
जो ॥ ६ ॥ पद ॥ १ ॥ शी कहुं शोभा
अंगनी, जोई लोचनीयां लोभाय चितहुं

चोरे छे ॥ टेक ॥ निरखी नाशा कीरने मारा भवनां पातक जाय ॥ चि ॥ १ ॥ अधर परवाळानी उपमा, जाणे कुंद कळी समदांत ॥ चि ॥ चिबुक तणी शोभा घणी कंबुकंठ जोयानी खात ॥ चि ॥२॥ वृक्षस्थलवाळुं घणुं, मने मळवा वाधे मीत ॥ चि ॥ अजान बाहु उर धरी, आवो मळीए मोहन मीत ॥ चि ॥ ३ ॥ उदरमां त्रिवळी पडे, उंडी नाभि नौतम जोई ॥ चि ॥ श्याम कटि शोयामणी उरमाय रह्युं मन मोय ॥ चि ॥ ४ ॥ जानुं जुगल छबी जोईने, मारो सुफल थयो अवतार ॥ चि ॥ पींडी पानी निरखतां, मारो दुर थयो संसार ॥ चि ॥ ५ ॥ सोळे चिन्हे युक्तछे, एवी जुगल चरणनी जोड ॥चि॥

अखंड रहो आवी उरमां, पुरो प्रेमानंद-
ना कोड ॥ चि ॥ ६ ॥ पद ॥ २ ॥

नवल स्नेही नाथजी. रूपाला राजीव
नेण, वाहला लागो छो ॥ टेक ॥ हस्ता
हस्ता हेतमां बोलो छो मीठां वेण ॥ वा
॥ १ ॥ आंखडली अमृते भरी, कांई
करुणा कई नव जाय ॥ वा ॥ चित चोरा
णुं चाल्यमां मरकलडे मन लोभाय ॥ वा ॥
॥२॥ आतुरता नथी अंगमां दिसेछे शील
स्वभाव ॥ वा ॥ प्रेम तणो प्रवाह वहे ॥
नेणुंमां नटवर नाव ॥ वा ॥ ३ ॥ भुदर
भाविक भावना, नथी अर्था अर्थी श्याम
॥ वा ॥ परमारथने कारणे, पधार्या पूर-
ण काम ॥ ॥ वा ॥ ४ ॥ दीन उपर दया
करी, तमे दुर्लभ दर्शन देव ॥ वा ॥ क-

रुप तरु छो कानजी, जाणे मोटा मुनीवर मेव ॥ वा ॥ ५ ॥ करुणा निधि करुणा करीने, छोगाला रंग छेल ॥ वा ॥ प्रेमानंद कहे अखंड रहो, आंखडलीमां अलबेल ॥ वा ॥ ६ ॥ पद २ ॥

धर्मकुंवर श्री कृष्णजी, तमे भक्त पति भगवान, ए वर मागुंछुं ॥ टेक ॥ दया निधि तमे दासने, नित्य आपोछो ए दान ॥ ए ॥ १ ॥ निर विकल्प उत्तम अति एवो निश्चेनाथ तमारो ॥ ए ॥ अलबेला तम आगले, हुं अरज करुं ए सारु ॥ ए॥२॥ महात्मज्ञाने सहित, एवी एकांतिकनी भक्ती ॥ ए ॥ प्रीत रहो तम चरणमां, बीजे रहो सदा विरक्ति ए ॥ ३ ॥ हुंमां तमारुं भक्तपणुं हरि एमां कोई

प्रकार ॥ ए दोष न रहे कोई जातनो, ए आपो धर्म कुमार ॥ ए ४ ॥ तमारा कोई भक्तनो, मारे द्रोह क्यारे नव थाय ॥ ए ॥ संग एकांतिक भक्तनो, मुने नित्य आपो मुनीराय ॥ ए ॥ ५ ॥ दास तमारा दासनो, मने राखो श्याम हजुर ए ॥ प्रेमानंदनी विनति, सांभळजो शांम जरुर ॥ ए ६ ॥ पद ॥ ४ ॥

पद राग गरबी.

अलबेलाजी प्राणआधाररे तमपरवारीरे, तारे नेणे ते नंदकुमाररे; मोही व्रजनारीरे ॥ १ ॥ छोगावाळा मनोहर छेलरे, नंदजीना लालारे गुणवंता आवीश तारे गेलरे, व्रजपती वालारे ॥ २ ॥ मीठा

बोलारंगीला मावरे, लग्यो छेनेडोरे; नही मेलुं हुं नटवर नावरे, कान तारो केडोरे ॥ ३ ॥ छबी जोइने, अलोकीक शामरे, मोह्युं मन मारुरे; ब्रह्ममुनी के धन्य तन धाम तारा नामपर वारुरे ॥ ४ ॥
पद ॥ १ ॥

मारा जनम संगाती जदुरायरे, गिरिवर धारीरे; तारी मुरती वसी छे उरमांयरे, न मेलुं घडी न्यारीरे॥१॥ तम साथे रंगीला नाथरे, बांधी छे बेलीरे; मारो हेते झाल्योछे तमे हाथरे, न देशो मेलीरे ॥ २ ॥ मारा प्रीतम जीवन प्राणरे, जीवुं छुं जोइनेरे. तम संगे करीछे ओळखांणरे, लोक लज्या खोइनेरे ॥ ३ ॥ रसीयाजी मारे घेर रात्वरे, आवीने रोनेरे;

ब्रह्ममुनी कहे दिलडानी वातरे, एकांवे आवी कोनेरे ॥ ४ ॥ पद ॥ २ ॥

आज गेती काळंद्रीने तीररे, भरवाने पाणीरे, मेंतो जोया त्यां बळभद्र विररे मोहन दाणीरे ॥ १ ॥ शोभे फुलडानो तोरो एने शीशरे, कसुंबल फेंटोरे; उभा डोलरीओ जगदीशरे रंगीलो ओढी रें टोरे ॥ २ ॥ करयुं तीलक केसर केरुं भालरे, फुलडांनी माळारे; वाहलो चाले छे हंस केरी चालरे लागे छे रुपाळारे ॥ ३ सर्वे गोवाळाने साथरे, आनंदी अलंबेलोरे; जोया ब्रह्ममुनीनो नाथरे, रंगडानो रेलोरे ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥

तारी नवल छबी नंदलालरे, प्रीतम प्यारारे; हुंतो निरखीने थैछुं नीहालरे,

जीवन मारारे ॥ १ ॥ मुखे बोलो मनोहर वेणरे, अती सुखकारीरे; मारी लगनी लागी छे दीनरेणरे, कुंज विहारीरे ॥ २ ॥ शोभे सोनेरी शिरपावरे, कानुंमां मोतीरे; मारा रसिया माणीगर मावरे, रहुं नित्त जोतीरे ॥ ३ ॥ मारा हैडामां नाथ हमेशरे, दरशन देज्योरे; ब्रह्ममुंनी कहे नटवर वेशरे, आंखडलीमां रेज्योरे ॥ ४ ॥ ॥ पद ४ ॥

पद राग धोळ.

कुंदनपुर वीवाह रच्यो, सुणी भुपती भीमकराय, कन्या ते देवा श्री कृष्नने, आनंद उर न समाय ॥ १ ॥ रुकमेये ते जांणियुं, उरः व्याप्यो अतिशे काळ; क-

न्पा ते आपुं श्री कृष्णने, ऐ छे गाय त-
णोरे गोवाळ ॥ २ ॥ रुकमैयानुं मन मे-
लुंने, तेडाव्यो सीसुपाळ; रुकमणी ते
खबर जाणी, ने अंतर उठी झाळ ॥ ३ ॥
दुर घणी द्वारामती, रह्यो लग्न वचे दी-
न एक; अंतरजामी आवज्यो, राखजो
मारी टेक ॥ ४ ॥ एवुं ते कहीने कंवरी,
करी कागळ लखवा आश; मुक्तानंद कहे
माननी, थइ जक्त थकीरे उदास ॥ ५ ॥
पद ॥ १ ॥ ढाळ ॥ २ ॥ मारी सार ले-
ज्यो अविनासीरे, जाणी जनमो जनमनी
दासीरे; वांची कागळ वेळरा आवोरे,
मारा तनना ते ताप बुझावोरे ॥ १ ॥
दीन एक लग्न वचे जाणीरे, वेला आ
वज्यो सारंग पाणीरे ॥ २ ॥ में तो तम

अरथे तन करियुंरे मेंतो तम चरणे चीत धरियुंरे ॥ ३ ॥ जोतां नाथ नही आवो वहेलारे, तजु प्राण लगन थकी पहेलारे ॥ ४ ॥ कहे मुक्तानंद मोरारीरे, वाहला राखज्यो टेक अमारीरे ॥ ५ ॥ पद ॥२॥ ढाळ ॥ ३ ॥ लइने कागळ वीप्रसधाव्यो-रे, हरीनी करुणाथी द्वारकां आव्योरे; देखी द्वारकां माहासुख धामरे, जेना राजा छे सुंदरशामरे ॥ १ ॥ वाहले वीप्रने आवता जाणीरे, उठ्या सनमुख सारींग प्राणीरे ॥ २ ॥ पुछी खेमने कागळ लीधोरे, वांची पत्र हैये द्रढ कीधोरे ॥ ३ ॥ पुज्या वीप्रने दइ घणुं मानरे, जावा त्यार थया भगवानरे ॥ ४ ॥ साथे वीप्रने रथमां बेसारीरे, चाल्या कुंदनपुर श्रीमो-

रारीरे, ॥ ५ ॥ एवा भक्तवच्छळ गीरधारीरे, जाय मुक्तानंद बलिहारीरे । ६ ।
पद ॥ ३ ॥ ढाळ ॥ ४ ॥ माननी मनमां चीतवे केम नाआव्या सुंदीरशाम; वार थइ केम विप्रने, नव सरयुं मारु काम ॥ १ ॥
जो नही आवे जदुपती तो तजीश मारा प्राण, एवामां द्वीज आवियो, जेम आवे रामनुं बाण ॥ २ ॥ वीप्र वदन जोइ वीनता, मन आनंद बाध्यो अपार; प्राणजीवन पधारिया, जगजीवन जगआधार ॥ ३ ॥ कुंदनपुर हरी आविया, शुणी भुपती भीमकराय; सामा जइ सनमान कीधुं आनंद उर न समाय ॥४॥ श्रीकम तोरण आविया, वरत्यो ते जेजेकार; मुक्तानंद कहे माननीना, पुन्यतणो नही पार

॥ ५ ॥ पद ४ ॥ ढाळ ५ ॥ देवीपुजानो मस लइ प्यारीरे, चाली नीरखवा कुंज-विहारीर, साथे लीधो पुजानो सामानरे, नेणे नीरखवा श्रीभगवानरे ॥ १ ॥ हरीना भक्त आनादीना मानीरे, भावे पुजीयां भवने भवानीरे ॥ २ ॥ वळतां रुप प्रकाशीयुं भाळीरे, प्रेमे पामवा श्रीवनमाळीरे ॥३॥ संगे असुर हता, रखवाळरे, देखी रुप पड्या ततकाळरे ॥ ४ ॥ वेग आविया अंतरजामीरे, मळिया मुक्तानंदना स्वामीरे ॥ ५ ॥ पद ५ ॥ ढाळ ६ ॥ करसाइने रथपर लीधां, मनवांछीत कारज-सीधां; कन्या हरण करी हरी वळी आ, सन्या सोता त्यां बळभद्र मळी आ ॥ १ ॥ वांसे रुकमैओ चड्यो शीशुपाळ, लेशे के-

म करी कन्या गोवाळ ॥ २ ॥ बांधी दु-
वारकां माहीथी लावुं, नैतो पुरमां ते पा-
छो न आवुं ॥ ३ ॥ जैने जदुपतिसंग
जुद्ध करीओ, वाहले सरवे तणोमद हरी-
ओ ॥ ४ ॥ रुकमैआनी वाढी छे डाढी,
कापी केशने मुक्यो छे काढी ॥ ५ ॥ रु
कमणीजीनो शोकनिवारी, मुक्तानंदके
पधारचा मोरारि ॥ ६ पद ६ ॥ ढाळ ७
॥ माधवपुरनो मांडवो, आवे जादवकुळ-
नी जान, परणे ते राणी रुकमणी; वरवं-
छीत श्रीभगवान ॥ १ ॥ जादव जानैआ
थया, वळी मांडवीआ पण सोइ; वीधी
सहीत विवाह रच्यो, कसर न राखी कोइ
॥२॥ माणकथंभ मंडप रच्यो मध्य चो-
री बांधी सार; मोहन आव्या मांपरे,

कोटी भोवनना करतार ॥ ३ ॥ माथे ते मुगट जडावनो, काने कुंडळ मक्राकार, बाए बाजुबंध बेरखा, कोटकौस्तभ मणीनोहार ॥ ४ ॥ शोभे घणा शणगारमां, पीतांबर अती उदार हेमकडां बेउ हाथमां, पाए झांझरनो झमकार ॥ ५ ॥ वाहलानुं वदन सोयामणुं, जाणे उग्यो पुनमचंद, मुक्तानंद कहे मोहनवरने, जोइ थया आनंद ॥ ६ ॥ पद ॥ ७ ॥ ढाळ ॥ ८ ॥ वळती लाडडीने सणगारीरे, पीठी चोळीने पाट बेसारीरे; नीलीसाडी धरी तनसारीरे, जेणे रीझेते श्री गीरधारीरे ॥ १ ॥ सोळेशणगार अंगोअंग धारीरे चाली भेटवा देवमोरारीरे ॥ २ ॥ संगेमाननी मंगळ गायरे, तेनी शोभावे ब-

णवी न जायरे ॥ ३ ॥ एवी रीते मंडप मध्य आव्यारे, तेडी पीउजी पासे पधराव्यारे ॥ ४ ॥ करसायो चराचर स्वामीरे, नारीमांयरे माहासुख पामीरे ॥ ५॥ शोभे मांयरे माहासुखकारीरे, जाय मुक्ता, नंदबलहारीरे ॥ ६ पद ८ ॥ ढाळ ९ ॥ वरकन्यानी जोड बीराजे, जोतां कोटी काम छबीलाजे; वाजे देवनां वाजां अपार, परणे अखीलभोवनना आधार । १ । ब्रह्मा बोचरे वेद वचन, जयजयकारथयो त्रिभोवन ॥ २ ॥ चारफेरा हरीसंग फरीया, नारी जमना जीवनजीने वरीयां ॥३॥ शोभे अखंड अलोकीकजोड, माथे बतरीस भमरीनो मोड ॥ ४ ॥ लाडोलाडी जमे छे कंसार, जेनोनी गमन पामे-

पार ॥ ५ ॥ मुक्तानंद कहे माहासुखका-
री, एवां चरीत्र करे गिरधारी ॥ ६ ॥
पद ९ ढाळ १० ॥ कंसार जमतां काम-
नी, बोले वीधवीधवचन रसाळ; शामसुं-
दर ते सांभळे, हस्ता ते दीनदयाळ ॥ १ ॥
बंदीजन जयजय करे, गायगांध्रव मधुरां-
गान; अनंत नाचे अपसरा, सुर आव्या
चडी वीमान ॥ २ ॥ ब्रह्मादीकसुर पु-
ष्पनी, वृष्टी करे तेवारमवार; ढोलनगारां
गडगडे, वाजींत्रनो नहिपार ॥ ३ ॥ चारे
मंगळ वरतीयां वरकन्यानी भलीबनी जो-
ड. रुकमणी लैआवीया. दुवारकां श्री
रणछोड ॥ ४ ॥ दीनजाणीने दयाआणी
पुरी मननी आश, मुक्तानंद कहे चरण-
सेवा, दैने राख्या पास ॥५॥ पद ॥ १० ॥

॥ अथ श्री सुतक निर्णय ॥

॥ अथ जन्म मरणनुं सुतक लिखिये छीये ॥

जे ब्राह्मणादिक सर्वे वर्णना मनुष्यने पोताना सात पेढिना पुरुषने जन्मनुं सुतक दश दिवस पालवुं ने आठथि चौद पेढि सुधि त्रण्य दिवस पालवुं ने जन्मिने तथा पांच दाडा जिविने मरे तो तेनुं सुतक नहि ने दश दिवस जन्मनुं सुतक तो पालवुं ॥ ने दश दिवस ते बाइने न अडवुं ने तेना कुटुंबि मनुष्यने अडि जवाय तेनो बाध नहि ने दश दिवस तेनुं अन्न जल आदिक न लेवुं ने अग्यारमे दिवसे तेना सात पेढीना कुटुंबिनुं तथा जेने सुतक छे तेनुं अन्न लेवुं तथा जेने बालक जनम्युं ते बाईनि करेल रसोइ तथा जलादिक

ते सुतकना दश दिवस वित्या केडे एक मास सुधि देवताना काममां न वावरवां.

हवे मरणनुं सुतक जेते लिखिये छैये.

जे ब्राह्मणादिक सर्वे वर्णने दश दिवसनुं सरखुं पालवुं ने ते पालवानो विवेक कह्यो छे ते लिखिये छैये. ॥ जे ब्राह्मणनो दिकरो जनोई दिधा केडे मरे तो दश दिवस सुतक पालवुं ने क्षत्रि तथा वैश्य ने शुद्र ए त्रण वर्णनो दिकरो बार वर्ष थया केडे मरे तो दश दिवसनुं सुतक सात पेढीना सर्वे कुटुंबिने पालवुं ने आठथि चौद पेढिवाळाने त्रण दिवस सुधी पालवुं पन्नरथि लइने एकविश पेढीना कुटुंबिने नावुं, पण सुतक नहि ने ए सुतक ब्राह्मणादिक सर्वे वर्णने सरखुं पालवुं

जन्मथि ज्यां सुधि दांत न उग्या होय एवो बालक मरे तेनु सुतक नहि अने दांत उग्याथि बाल मुवाला उतरावे त्यां सुधि बालक मरे तो एक रात्रि ने एक दिवस तेना सात पेढिना संबंधिने सुतक पालवुं ने बाल मुवाला उतरावे ने त्यांथि जनोइ दिधा सुधि मरे तेनुं सुतक ते तेना सात पेढिना कुटंबिने त्रण दिवसनु पालवुं ने जनोइ दिधा केडे दश दिवसनुं एना कुटंबिने पालवुं ॥ अने कन्या त्रण वरसनि मरे तो तेना माता तथा बापने त्रण्य दिवसनुं सुतक पालवुं ने त्रण्य पेढिना संबंधिने एक दिवसनुं सुतक पालवुं अने वेसवाल कर्या केडे ने परणाव्या मोर जे कन्या मरे तो एना बापना सात पेढिना

ने एना सासराना सात पेढिना ए सरवेने त्रण्य दिवसनुं सुतक पाळवुं अने कन्या परणाव्या पछी ते मरे तो तेना सासराना सात पेढिना कुटंबिने दश दिवसनुं सुतक पालवुं ने माता पिताने सगा भाइने त्रण्य दिवसनुं ने बिजा काका आदिकने एक दिवसनुं सुतक पालवुं अने दिकरी बापने घरे आवि होय ने तेने बालक जन्मे तथा पोते मरे तो तेना माता पिता ने भाइ एमने सुतक त्रण दिवसनुं ने काका आदिकने एक दिवसनुं पालवुं.

हवे एक सुतक होय ने तेमां बिजुं सुतक आवे तेनि नित्य लिखिये छैये ॥ जे दश दिवसनुं मरणनुं सुतक चालतुं होय ने तेमां जे जनमनुं दश दिवसनुं आवे

तथा बिजुं मरणनुं दश दिवसनुं आवे तथा बे त्रण दिवसनुं सुतक आवे तोपण पुर्वना सुतकना जे बे त्रण्य दिवस बाकि रह्या होय ते पुरा थाय त्यारे पछवाडेथि आव्यां एवां जे सुतक ते सर्वे बलि जाय एम जाणवुं अने दश दिवसनुं जनमनुं सुतक चालतुं होय ने तेना पांच तथा सात दिवस गया होय ने तेमां जनमनुं दश दिवसनुं सुतक आवे तो पुर्वना सुतकना जे बे तथा त्रण्य दिवस बाकी रह्या होय तेमां वांसेथी आव्युं जे सुतक ते बलि जाय एम जाणवुं पण दश दिवसनुं मरणनुं सुतक ते जन्मना सुतकमां न बले ॥ अने भाई बेन ए बेयने एक बिजानुं त्रण्य दिवसनुं मर्ण सुतक आवे अने बीजा गा-

ममां तथा नोंखे घरे जे बाइ मरे तो ते
ना भाइने तथा बनेविने एक बिजाने डो
ढ दिवसनुं सुतक अने सासुससरो मरेतो
जमाइ जो पासे होयतो एने त्रण्य दिवस-
नुं सुतक आवे तथा ते गाममां होय तो
डोढ दिवसनुं सुतक आवे तथाते परगाम
होयतो तेने एक दिवसनु सुतक आवे अने
पोतानो पिता तथा माता ए मरेतो दि-
करीने त्रण्य दिवसनुं सुतक पालवुं अने
मानो पिता तथा मानिमा तथा दिकरा-
नो दिकरो ए सर्वे एक बिजाने त्रण्य दि-
वसनुं मर्ण सुतक आवे ॥ अने सासू स-
सरो ने जमाई तथा सालो ने बनेवि ए
सर्वेने एक बिजाने एक दिवसनुं मर्ण सु-
तक पालवुं अने पोताना पितानि बेन त-

था मातानि बेन ने मामानो दिकरा ए ए त्रण्य ते पोताना बंधु केहेवाय अने पितानी फोइने पितानी माशीने बापना मामाना दिकरा ए त्रण्य बापना बंधु केहेवाय अने मातानी फइने मानि माशी ने माताना मामाना दिकरा ए त्रण्य माताना बंधु केहेवाय ए त्रण्य प्रकारना बंधु मरे तो एक बिजाने डोढ दिवसनुं सुतक आवे अने ब्रह्मचारि वानप्रस्त्थ संन्यासि ने सासाधु तेमने पोताना माता पिता ने गुरु तेमनुं मरण सांभलिने नावुं पण तेमनुं सुतक ब्रह्मचारी आदिकने न लागे न तेम ए ब्रह्मचारि आदिक मरेतो तेमनुं सुतक तेमनां ज कुटुंबि तेने न लागे हवे यज्ञादिक क्रिया कारावनारा जे ब्राह्मण तथा

यज्ञनो करनारो जै यजमान तथा सदाव्रत
आदिक जे अन्न क्षेत्र केतां निरंतर अन्नने
जे आपता होय तथा कृच्छ्र चांद्रायणा
दिक जे व्रत करता होय तथा प्रायश्चित
जे पाप टालवाना उपाय तेने अर्थे जेव्रत
करता होय तथा जे निरंतर सुवर्णादिक
ना दानने करता होय तथा जेणे विवाह
आरंभ्यो होय तथा जेणे जनोइ आदिक
संस्कार आरंभ्यो होय तथा मारे सूतक
आवशे एम जाणिने ते सूतक आव्या
मोरथि आटलुं मारे पुन्य करवुं छे एवो
मनमां संकल्प करिने जेणे अन्न धन रसा-
दिक कोईकने धेर मुक्यां होय ए जे
सर्वे यज्ञादिक क्रियाना करनारा ब्राह्मणा
दिक कह्या तेमने जन्म मरणनुं सूतक

नहि । ने तेमनुं जे अन्नादिक तेमने जे जमे तेने दोष नही अने ते अन्नादिक वस्तु सूतकी पासे न मंगाववां अने जनमना सूतकने विषे प्रथमनो दिवस तथा छठ्ठो दिवस तथा दशमो दिवस ए त्रण्य दिवसने विषे बालकनो बाप जातकर्मादिक संस्कार करावे । ने तेना निमित दान करे तथा ब्राह्मणादिकने जमाडे तेनो बाध नहि पण ते विना बिजां दानादिक न करे केम जे बिजि क्रियामां तेनुं सूतक लागे छे माटे न करे अने त्यागिने तोते संस्कारना अन्नादिकनी नाछ माटे न ले, गाय अने भेंश तथा काली बकरीनुं दूध तथा दही ते वीयाणा पछी अगीयारमे दिवस जमाववा बाध

नथी ॥ एवि रित्ये श्री सहजानंदस्वामि ना शिष्यने गढपुरने विषे रहेनारा एवा जे अनंतानंद ब्रह्मचारि तेमणे जे संस्कृत ग्रंथ न भण्या होय तेमने सुखे करीने प्रायश्चितनुं ज्ञान थाय तेने अर्थे प्रायश्चीर्ते दुशेखरादि ग्रंथने अनुसरिने प्राकृत भाषाये करीने पापनां प्रायश्चित लिख्याछे!

॥ श्रीसहजानंदस्वामी सत्पछे ॥

परम एकांतिक भक्त श्रीनरसिंह भाइना पत्र-

परमप्रीय भाइश्री जीवरामभाइ प्रत्ये ली० सुभेच्छकसदाहीतकारी आत्मारामना जेश्री स्वामीनारायण आपनी पवित्र सेवामां अंगीकार करशो. जतअत्रेश्री इष्टदेवनीकृपाथी हालमांतो देशकाल साराछे ने आगळ उपर शुंथाशे तेतो माहाप्रभुने

खबर केमके कळीयुगनी जोबन अवस्था हवे खीलवामांडीछे नंते भेगी शीवनी वीशीपण बेसवानीतैयारीछे तेथीशुंपरीणाम थाशे तेकहीशकातुं नथी शास्त्रसामी दृष्टिकरतांतो कळीयुगे पोतानोजन्म थतांज पोताने मोढे कहेलुंछे के कान्ताजेस्त्री अने कनकजे द्रव्य एवेमां मारो निवासछेनेमारी सत्ता बराबरजामशे एटले हुंउंचजातीने नीचक्रीयाकरावीने प्रथम भ्रष्टकरीश, वळी एवेमां सौनां मन आकर्षण थइने एने अर्थेसर्वेजीव पापाचरण करीने एकबीजानो नाश करवा तत्परथाशे आप्रमाणे तेनो मुळथीज अभिप्रायछे तेमां पेहेलीबाबतमांतो तेणेआस्तेआस्ते पगलुं भरवा मांडयुंछे तेजूओने ब्राह्मण सरखाश्रेष्ठजातीना

केटलाकलोको अंतीउतरती क्रीयाकरीने नठाराखानपानादीकथी एवातोभ्रष्ट थएला- जणायछेकेते जोइनेआपणने बहुकंपारी छुटेछे आवीरीते कळीयुगे पोतानी छोटी- उम्मर छतांजूलम करवामांडयोछे तोपछी- मोटपणेकोण जाणें शुंकरशे तेनीअत्यंतबीक रहेछेमे शास्त्रतथासतपुरुषो कहिगयाछेके ज्ञेस्थानकने विशे देशकालसारानहोय त्यांथी भागीजावुं आथी मारामनने एम- थायछेके आअघोर कळीना राजमांथी नीकळीने सतयुगसरखा सारानाप्रसंगमां जवायतोसारु नेतेमकरवानो हुंरातदीवस विचारकरुंछुं जेथी परमदयाळु प्रभुमने मा- राविचारमां साहाय करीने फतेहपमाडवा- कोइ सत्पुरुषोनो पक्षोभेळवी दीएतोसारु

भाइजीकळीयुगमां भगवानना अवतारथयो
तेभला अनंतअक्षर मुक्तोआव्याहता तेमणे-
पोतानो उत्कृष्ठप्रताप जणावीने कळीने
दाबीदइसतयुगजेवा देशकाळप्रवर्ताव्या
जेथीकळीनुं कांइपण जोरचाल्युनहीं नेछा-
नोमानो उदासथइने केदीनीपेठे बेशीरह्यो
तेहजूपण बराबरजाग्रत थयोनथी माटेतेना
जाग्रतथतां पहेलांतेमांथी भागीछूटायतो
सारु नीकरतोपछी तेनाचोकीपोरा मुकी
आपणनेजरुर कांइकदुःख पमाडशे केमकेजे
सत्पुरुषोए तेने बंधीखाना जेवो राखेलो-
तेज सत्पुरुषोना आपणे आश्रीतछी एमा-
टेतेमना आश्रीत जाणीने आपणने सुखथी
बीजासारा देशकाळमांनही पुगवादीए वली-
आपणा परमहेतु सतपुरुषोतेमज आपणा

गुरुबांधव सोबतीओ पण सर्वसुखपुरमां जाता रह्याछे नेहवेकचीतरह्याहशे तेओप्रथमना जवाप्रतापीके बळवाळा भाग्येजहशेके जेओआपणीसहायकरीने कलीसरखा बळीष्टशत्रुना पंझामांथीआपणने बचावीदीए आविशेनी मने नीरंतरकाळजी थयाकरे छे तथा मारुं मने सर्वथा उदास थईने एक भगवान भजवानीज आकांक्षा राखे छे आवि आकांक्षा मारामददनीश सोबती ओछतां मारा दीलमांउदयथइ होत तो आवेळा मारे अफसोसथावु न पडत खेर हवे तो थइ ते खरीपण "ही मत मरदां तो मद देखांदा" एकहेवत प्रमाणे महा प्रभुनां कहेलां वचन सामी दृष्टी राखीने महा जनोयेन गतः सपंथाःएम सत्पुरुषोना पगले पगले चाल-

वाथी पार आवीने कळीना पंझामांथी नीकळी जावुं एमाहिं मत राखी छे ते श्रीजी महाराजे वचनामृतमां कह्युं छे के, क्यारे-करवा मांडयुंने न थयुं माटे आपणे कर-वानी कसर राखीशुं तेटलुंज अधुरुं रहे शे एम जणाय छे पण बे घोडे साथे बे सातुं नथी तेम बेकामहारेकरातां नथी एतो सैथोके टाल एक रही शकेत्त कह्युं छे के " जती पणुं जालववुं नेवेशा वाडे बसवुं एबे वातुंन बने ते लोट फाकवुंने हसवुं ", ते भज चीत्तकी वृत्ती एकहे मुझे वहां लग ओ, कांतो हरिभजीलहोने कांतो विषय कमाओ एतो एक थाय एवुं छे ते कांतो भगवान भजोने कांतो विषयनो बेपार करो माटे भगवान भजवा होय तेने आलोक

सामी दृष्टी नही राखतां भगवानमां वल-
गायतो ठीकपडे पण उपाधीमांरहीने
नीरले परहेवुं ए पण काम कठण छे के-
मकें व्यवहार छे ते उंटना बेसणा जेवो छे
तेजरुरतेमां रहेनाराने विक्षेप कर्या वगर
रहेजनहीं जो एमन होय तो गोपीचंद
तथा भरथरी अने बाजंदशाह आदी मोटा
मोटा राजा राजपुकीने बनमांशासा
रुंजाय, हवे एवाने तो आपणने मल्या छे
तेवा मल्या न होता तेथी एवां वन कष्ट
बेठवा पडेलाने आपणने तो घेर बेठा गंगा
तेनी पेठे भगवाने दया करीने सत्पुरुषोने
वननो त्याग करावीने आपणे अर्धेगाममां
वन करीने राख्या जेथी तेमना समागमथी
लाखुं जीव भगवान सन्मुख थइ गयाने

आपणने प्रभु भजवा सुगम थया मटेआ अवतारना आश्रीतोनेतो वनमां जवानी कांइ जरुर नथी पण वनमांजाओके मनमांजाओ बे बराबर छे एटले वनमांगएला नेजो मन वश नथी थयुं तो घरमांज बेठो छेने घरमां रहेलाने जो मन वश कर्युं छे तो सदा वनमांज रह्यो छे मनने मारीने एक स्थानकमां रहेवुं अथवा एक आसन उपर रहेवुं ए पण एक मोटुं तप छे केमके आ जीवने तो थोडीवार भजन करी ने वळी थोडीवार आडी अवळी नजर करी आवे अथवा आडी अवळी नजरकरी आवे अथवा आडो अवळो जराफरी आवे तो जतेनु मन मोकळु रहे छे नींकर तो मुझाय छे माटे मनने वश करीने प्रभु भजाय तो

ठीक ते ब्रह्मानंद स्वामीए कह्युं छे के विना मन मुंडे उपर मुंडमुंडेक्या होवताहेने बली शास्त्रमां कह्युं छे के जीतं जगत्के नमनो ह्यन जेणे पोतानुं मन जीत्युं तेणे जगत जीत्युं छे जगतनो त्याग कर्यो छे ने मन जीत्युं नथी तेणे कांइ पण कर्युं नथी महाराज कहे बहार तो गमे तेटली उपाधी होय तेनो अमारे खरखरो नहीं पण अंतरमांरंच जेटला पदार्थनो घाट थाय तो तेनो तत्काल त्याग करी दीए त्यारे निरांतथाय एवो अमारो सहज स्वभाव छे एटले मन मांथी राग द्वेष टल्या वगर भगवाननुं सुख आववानुं नथी आ जीवने तो आखा ब्रह्मांडनुं द्रव्य मळे के विषय मळे तो पण तृप्त थाय

तेमनथीजेमपाताळसुधी पृथ्वीफाटी तेकदी
भरावानी नथीने एमांसुखपणनथी जो सुख-
होपतो चीत्रकेतुराजाकरोड स्त्रीयुंनो त्याग-
करीनेतथा प्रीयव्रतनेस्वायंभुमनु आदीकस-
वैंनो त्यागकरीनेवनमां शासारुजात आ-
जीवकरोडरुपीआनीसाहेबी भेगीकरेपणते-
मांथी दमडीसरखीतेनीसाथे अववानी नथी-
तेमजसात माळनी हवेलीकरशेनेकेहशे जेहुं-
मरुत्यारे मनेआहवेलीने एक खुणेदाटज्योके
बाळज्योएमकहे तोपणतेनेएटलीबेचार हाथ
जगोबळवासारुपण मळवानीनथीएतो गाम
बहार भागोळे लइ जइनेज्यांमधेडांआळोट
तांहशे त्यांफुकीदेशेनेतेनीराखपाणीमां नां-
खशे केतेउडीनेगामभणीपाछीनआवे आम
सर्वेमुकीनेअगरां मकुळनदावाकरीने जरुर-

जावुं पडशेनेपाछुंकोटी कल्पेपण भेगुंथवा पणवुंनथीत्यारे अमथुं कोने अर्थेकुटीमरवुं अरेगमे तेटलुंभेगुं करोपणफक्त अन्नेरअन-नीजरुर छेनेतेआपवातोमाहाराजे शीर लीधुंछेतेसुझेतेरीते आपशेज त्यारेहवेशुं जोइएतोपोतानाआत्मानुं सुधारीनेसदाय सुखीथवायएवो उपायकरवोए अवश्यनुं छ जेणेमोक्षमार्गसाध्योतेणे सर्वेकीधुंछे नेमोक्ष-नुंकाम अधुरुंरह्युं ने बीजुंबधुंकर्युंछेतेण कांइकीधुंनथीकल्याणनो मार्गज्ञानवीना स-मजातोनथीनेज्ञान संतसमागमवीनाथतुं नथीमाटेसंतसमागमनी जरुरछेतेपोताथीथा-यछेकेनहींतेनो नीत्यतपासकरवो पणमुख वाणीआनीपेठेकरवुंनहींने तपासकरवाथी अंतरना घाटओछा थएलाजणायनेभगवा-

नसांभरेतो जांणवुं जेसमागमनुं सुख आव्युं
नेएवुंनथीथयुंत्यांसुधीअधुरुछे तेअधुरुंक्यारे
पुरुथाशे तेनोखटकोराखवो केमकेकाळनो-
भरुसोनथी अचानकआवीने अरधीरातेके
खराबपोरेघरमांथी केबहारथीजरुर झाली-
लेशे आपणी नातनाकेजातनासगाके वहा-
लाघरनाकेगांमना घणांजणआपणीनजर-
आगळ कुटीबाळेलाछेते जाणतांछतां आ-
पणने गाफलता रहेछेएजअज्ञानछे काळ-
छेतेनीतआवरदाने ओछीकरेछेतेघडी केदी-
वस महीनोकेवरसजायछेते आपणने काळ-
ना मुखनजीक लेतुंजायछेमाटे आळसमो-
हने प्रमादने अळगां करीनेपोताना आ-
त्मानेस्थुलसुक्ष्मने कारणएत्रणदेहतथाजागृत
स्वप्ने सुषुप्ती एत्रणअवस्थाथकीप्रथक मानी

ने ब्रह्मरुपथइने भगवाननीमुरतीनुं ध्यानक-
रवुंजेथीआलोकनां सुखनावैकुंठजेवांथइने
तेनाराग सर्वे बळी जायनेतेवगररागटळ-
वाना नथी ने राग टळ्यावगर भगवांनतुंय-
थार्थसुख आववानुं नथी माटे कथा वार-
तानो नीरंतर जोगराखीने बेंथडी भग-
वाननी मुरतीनुं ध्यान करवुं ध्यान करतां
वृत्ती बिजे ठेकाणे जायने संकल्प उठतां
सांख्यविचारे करीने तेने खोटाकरी नांख-
वानेवळीध्यानकरवुं एम नीरंतर अभ्यास
आदरे सहीतराखवाथी वृत्तीस्थीर थवामां-
डशे ने प्रथम करतां वधारे वार ध्यान
टांटकीशकाशे ने मुरतीनुं सुख आवशे
एटले वृत्तीने बहार काढवीपण नहीं गमे
अंतरसांमी वृत्तीएकदम न धाय तेवुं होय तो

प्रथमबाहारमुरतीसांमी वृत्ती रास्वीने अंगो अंग नीरस्वीने तेनुं चिंतवन करवानीटेव रास्ववी थोडीवारपछी वळी बाहार वृत्ती करीनेमुरतीसामुं जोवुंएम बाहारवृत्तीजोडतां जोडतांअंतर सनमुस्वरहेवालागशे ने तेमां- भगवानसहायकरशे वळी मोटा मुक्तोनेसंभा- रीने तेमनीपणप्रार्थनाकरवी जेथीआपणी- फतेहथाय ने कळीनाझपाटामांथी नीकळीने भगवानना सुस्वपुरधाममां जइ पुगाए एज विनंती.

राग गरबी.

कर प्रभु संगाथे धड प्रितडीरे, मरी जावुं मेलीने धनमाल; अंतकाळे सगुं नही कोइनुरे, संसकार संबंधी सरवे मळ्यांरे

एछेजुठी माया केरी जाळ ॥ अंत० ॥१॥ मारु मारु करी धन मेळव्युंरे, तेमां तारु नथी तलभार ॥ अंत० ॥ २ ॥ सुख सपना जेवुं संसारनुंरे, तेने जाता न लागे-वार ॥ अंत० ॥ ३ ॥ माटे शेवे तुं साचा संतनेरे, तारा टळशे त्रिविधीना ताप ॥ अंत० ॥ ४ ॥ अति मोटा पुरुषने आशरेरे, बळे पुरव जनमनां पाप ॥ अंत०॥ ॥ ५ ॥ एवुं समजीने भज भगवाननेरे, सुखकारी सदा घनश्याम ॥ अंत० ॥ ६ ॥ देवानंदनो बालो दुख टाळशेरे, मनवांछीत पूरणकाम ॥ अंत० ॥७॥ पद ॥१॥

मळ्या माणसनो देह चिंतामणीरे, तारा अंगमां छे रोग असाध; नथी लेता रायण नामनेरे; माथे मरण जनम

दुखछेरे, तारा अंतरमां हरीने आराध ॥ नथी० ॥ १ ॥ घणुं सुजेछे काम संसारनुंरे, करे सगानुं बहु सनमान ॥ नथी० ॥४२ ॥ हेत करतो नथी हरीदासमांरे, हैया फुट्या तुं लुणहराम ॥ नथी ॥ ३ ॥ परनारि संगाथे करी प्रितडीरे, तारो एळे गयो अवतार ॥ नथी० ॥ ४ ॥ बहु नामीनी बीक नथी राखतोरे, खेरखाते मलीश तेमां खुवार ॥ नथी० ॥ ५ ॥ अति कठण वेळा छे अंतकाळनीरे, पछे थाशे तने पसताव ॥ नथी० ॥ ६ ॥ देवानंदनी शिखामण मानजेरे, तारा अंतरमां करीने उछाव ॥ नथी० ॥७॥ पद ॥ २ ॥

तारा मनमां जाणेछे मरवुं नथीरे, एवो कर्यो निरधार; तेमां भुली गयो

भगवाननेरे, धन दोलत नारीने घणा दीकरारे, खेतिबाडी घोडीने घरबार ॥ तेमां० ॥ १ ॥ मेडी मंदिर जरुखांने मालीयांरे, सुखदायक सोनेरी सेज ॥ तेमां० ॥ २ ॥ गादी तकीयाने गालमसूरीयांरे, अति आड करे छे एज ॥ तेमां० ॥ ३ ॥ निचुं कांध करीने नमतो नथीरे, एवुं साधुसंगाथे अभिमान ॥ तेमां० ॥ ४ ॥ मरमाळी मोहननी मुरतीरे तेनी साथे न लागेल तान तेमां ॥ ५ ॥ पाप अनेक जनमनां आवी मळ्यांरे, तारीमति मलिन थइमंद तेमां ॥ ६ ॥ देवानंदना वालाने विसरी गयोरे, तारे पड्यो गळे जमफंद ॥ तेमां० ॥ ७ ॥ पद ॥ २ ॥

तारे माथे नगारां वागे मोतनांरे, नथी

एक घडीनो निरधार; तोय जाण्या नही जगदीशनेरे, मोटा मेळीने राज मरी गयारे; जोने जातां न लागे वार ॥ तोय० ॥१॥ तारु जोबन गयुं जखमारतुरे, माथे काळा मटी गया केश ॥ तोय० ॥ २॥ अंतकाळे लेवाने जम आवीयारे, तेनो भाळी भयंकर वेस तोय० ॥ ३ ॥ रोम कोटी वींछीतणी वेदनारे, दुख पाम्यो तुं दैवना चोर ॥ तोय० ॥ ४ ॥ सगां स्वारथी मळ्यां सउ लूटवारे, केनु जरा न चाले जोर ॥ तोय० ॥५ ॥ जीभ टुंकी पडीने त्रुटी नाडी उरे, थयुं देह तज्या ततकाळ ॥ तोय० ॥ ६ ॥ देवानंद कहे न जाण्या मारा नाथनेरे, मळ्यो माणसनो देह विशाळ ॥ तोय०॥७॥ पद ॥ ४ ॥

पद राग धोळ.

सखे सखी जीवन जोवाने चालोरे-
शेर डीउंमां आवे लटकंतो लालोरे ॥१ ॥
एनी शोभा मुखे व्रणवी न जायरे, जेन
नीगम नेती नेती करी गायरे ॥ २॥ रोझे
घोडे राजेश्वर बीराजेरे, छबी जोइ कों-
टीक कंद्रप लाजेरे. ॥ ३ ॥ मळ्या आवे
माहा मुनीनां व्रंदरे, तेमां शोभे तारे वीं-
च्यो जेम चंदरे ॥ ४ ॥ स्तुक सनकादीक
उतम जश गावेरे, नृत करे नारद वेण
बजावेरे ॥ ५ ॥ नीज सखा चमर करे
लेइ हाथरे, आ जो आव्या भोमानंदने
नाथरे ॥ ६ ॥ पद. ॥ १ ॥

जुवो छबी शाम सुंदर वर के
रनी नाडी सुंथडलीं सोनेरी

जरकसी जामो बुटादाररे, कसीयो कमर सोनेरी कटाररे ॥ २ ॥ सीरपर पाघ पेचाळी नवरंगीरे, काने कुछगुलाबी माथे कलंगीरे ॥ ३ ॥ गजरा तोरा गळे गुलाबनाहारे, आबी उपर भमर करे गुंजाररे ॥ ४ ॥ पोंची कडां बांये बाजुबंधरे, नंग जड्यां कुंडल मोतीनां वृंदरे ॥ ५ ॥ वेग जुवो चरणागीयो वनमाळीरे, शीतळथैये भोमानंद के भाळीरे ॥ ६ ॥ पद. २॥ मुरती चंचळ जुवो चटकंती चालरे, नेत्र छडी करमां फुमकी आळी लालरे।१। ंदहास चपळनेणां चित्त चोररे, करना ां करी काळजडांन कोररे ॥२॥ मीघेरे रागे गायरे, अधर धरी मोवायरे ॥ ३ ॥ झळके भाल

विशाळशोभानुं धामरे, नाशा अणी पाळी भमर अति स्यामरे ॥४॥ अधुरलाल यां-ही मधुरी हासरे, दंतपक्ती करे अतिप्र-काशरे ॥५॥ जमणे गाले टीबकडी रुपा-ळीरे ताप टळ्या भोमानंदके भाळीरे ॥६॥

पद ॥ ३ ॥ घेर चाली आव्या गौलोक वासीरे, जेने कहेछे. अक्षरातीत अवीना-शीरे ॥ १ ॥ जुवो जुवो मोह नींद्रामांथी जागीरे, वरी एने थयो अखंड सोहागी-रे ॥ २ ॥ जोतां वाव्य आवी मारे जा-नरे, पोते वर पुरुषोतम भगवानरे ॥ ३ ॥ शुकसनकादीक धरे जेनुं ध्यानरे, मारां लोचन करे ते मुखनुं पानरे ॥ ४ ॥ एनी सरवे देखी अलोकीक रीतरे, चोटयुं मारु सुंदरवरमां चित्तरे ॥ ५ ॥ हाथेवाळो हरी

संगाथे कीधोरे, भोमानंदके जन्म सुफळ करी लीधोरे ॥ ६ ॥ पद ॥ ४ ॥

राग गरबो.

सखी मोकुळगामना चोकमांरे, खांते मांड्यो रशीले खेल; रमे रास रंगीलो रंगमांरे चहुकोरे सखानी मंडळीरे; उभा वचमां छेलो अलबेल ॥ रमे ॥ १ ॥ सखी वालोने जैये देखवारे, वाले पहेरपां छे वस्त्र शोभीत ॥ रमे ॥ २ ॥ ताळी पाडे रुपाळी तानमांरे, मुखे गावे मनोहर गीत ॥ रमे ॥ ३ ॥ शोभा बनी शलुणा स्यामनीरे, उभी व्रजनी नारी जोवा काज ॥ रमे ॥ ४ ॥ हसी हरे छबीलो हेतमांरे. व्र-

आनंदनो वालो व्रजराज ॥ रंग ॥ २ ॥

पद ॥ १ ॥

सखीनंद महरने आंगणेरे; गोपी आनंद मंगळ गाय; छबी जोने सनेही स्यामनीरे, मरमाळे अखाडो मांडीयोरे; काजुं आसोपालवनी छाय ॥ छबी ॥ १ ॥ वाळे हेते करीने पहेरी ओरे, रुडो सोनेरी सुरवाळ छबी ॥ २ ॥ सखी फरतां ते लागे फुटडीरे, झीणी अंगरखीनी चाळ ॥ छबी ॥ ३ ॥ बहु मुली मोळीडुं बांधीयुंरे, काजु झळके सोनेरी कोर ॥ छबी ॥ ४ ॥ रुडां लटकां करे छे हाथनांरे, ब्रह्मानंदनो वालो चित्तचोर ॥ छबी ॥४॥

पद ॥ २ ॥

सखी जोने गोवाळाना साथमांरे, वालो

फरे अलोकीक फेरः कही शोभा न जाय प्यारा काननीरे, छलो ठमके मांडे पाव ठावकारे; बाजे घुघरडीनो घेर ॥ कही ॥ १ ॥ छायुं नवल मोळीडु फुल छोगले-रे, राजे नवल कलंगी छबीदार ॥ कही ॥ २ ॥ रुडो जामो पेर्यो छे जरकशीरे शोभे अंगो अंग शणगार ॥ कही ॥ ३ ॥ रंगभीना कानाकेरी रासनीरे, छबी जोवा आव्या जगवंद ॥ कही ॥ ४ ॥ सखी नवलकलंगी छबी उपररे, वारी जाय छे ब्रह्मानंद ॥ कही ॥ ५ ॥ पद ॥ ३ ॥

सखी आज गइती हुंतो पाणी एरे, उभो छोगावाळो रंगछेल; मुने वाहालो लागे कुंवरनंदनोरे, सखी जमुनाने आरे झील-वारे; जोइ भरवी भुली जव्हेल ॥ मुने

॥ १ ॥ सखी मंत्र भणीने नाखी मोहनी-रे, थइ थकीत न चाले मारा पाव ॥ मुने ॥ २ ॥ सखी शुंरे जाण्युं मुने शुं करयुंरे, मरमाळे रंगीलेमाव ॥ मुने ॥ ३ ॥ सखी एनी अलोकीक आंखडीरे, मारं चोंटीछे चितडामांय ॥ मुने ॥ ४ ॥ ब्रह्मानंदना वालानी मुरतीरे, घडी छेटे मेली केम जाय ॥ मुने ४ पद ॥ ४ ॥

पद राग गरबी.

वाला लाग छो विश्व आधाररे, सगपण तम साथे: मरु मरवे मेल्यो संसाररे ॥ सग ॥ १ ॥ मारा मनमां वशाछो श्यामरे ॥ स० ॥ तम तारुं तज्युं धनधामरे ॥ स० ॥ २ ॥ मारुं मनडुं लोभाणुं

तमपासरे ॥ स० मुने नथी बीजानी आ-
शरे ॥ स० ॥ ३ ॥ मारे माथे धणीछो तमे
ए करे ॥ स० मारी अखंड निभावज्यो
टेकरे ॥ स० ॥ ४ ॥ मेंतो देह धरयोछे तम
काजरे ॥ स० तमने जोइ मोही व्रजराजरे
॥ स० ॥५॥ हुंतो हेते वेचाणी तम हाथरे
॥ स० छो ब्रह्मानंदना नाथरे ॥ स० ६
॥ पद ॥ १ ॥

मारे आव्यो अलोकीक दावरे, कोइ
मुने शुं करशे; माथा साटे वरया मेंतो
मावरे को ॥ १ ॥ हवे बळे छे जगमां
बळायरे को० मने भेट्या छे भुदररायरे
॥ को ॥ २ ॥ अति आनंद थयो छे मारे
अंगरे को० लाग्यो रसिआजिनो रंगरे
॥ को० ३ ॥ थइ जगमां अलोकीक जी-

तरे को० लागी पुरण सलुणा साथेप्रितरे को० ४ मारे वाले दीधुं छे मुने मानरे को० मुने कीधी सोहागण कानरे ॥ को० ॥५॥ हवे थयो संसारीयो झेररे को० ब्रआनंदने वाले कीधी मेहेररे ॥ को० ॥ ६ पद ॥ २ ॥

जोइ छेलछबीलानी चालरे, मन मारुं लोभाणुं; वळी भुरकी नाखी छे नंदलालरे ॥ मन १ ॥ सौ घेली केहे छे संसाररे मन० मैंतो निरख्या छे नंदकुमाररे ॥ मन २ ॥ कोइ स्याने करो छो मारी छेडरे ॥मन० नही मेलुं कानुडानी केडरे ॥ मन ॥ ३ ॥ सरवे भुलीछुं घरडानुं काजरे ॥मन० एक वाहालो कीधो छे व्रजराजरे ॥ मन ॥४॥ हवे रटना लागी छे दिनरातरे

मन॰ थैतिर साटानी वातरे ॥ मन०५ ॥ मुने कीधी मानिती सहुमांपरे मन० ब्रह्मानंदने चाले झाली बांयरे ॥ मन० ॥ ६ ॥ पद ॥ ३ ॥

बारी काढी जगतनी बीकरे, वरी हुं तो वनमाळी; मेंतो समजी विचारी कीधुं ठीकरे ॥ वरी १ ॥ तुच्छ जाणीने कीधुं सरवे त्यागरे ॥वरी० मोही रसिक सलुणाने रागरे ॥वरी ॥२॥ मुने चटकी लागी छे चित्तमांयरे ॥ वरी० बीजुं वाला विना न सोहायरे ॥ वरी ॥ ३ ॥ मुने कांइ नसुझे कामरे॥वरी० ॥ थयुं हरी विना सरवे हरामरे ॥ वरी० ॥४॥ हवे निशंक थइछुं नचित्तरे ॥वरी० थइ जगमां अलोकीक जीतरे ॥ वरी ५ ॥ समजी कीधु छे तन कु-

खाणेरे वरी० ब्रह्मानंदना वालाथी वाल्या प्राणरे ॥ वरी ८ पद ४ ॥

॥ राग गरबी ॥ सजनी श्रीजीमुजने सांभरियारे, हैडे हरख रह्यो उभराय सज० नेणे आंसुनी धारा वहेरे, वीरहे मनडु व्याकुळ थाय ॥ सज १ ॥ सुंदर मुरती श्रीमाहाराजनीरे, सुंदर अमृत सरखां वेण ॥ सज २ ॥ शी कहुं शोभा अंगो अंगतणीरे, नीरखी लाजे कोटीक काम ॥ सज ३ ॥ हसता हसता हेत वधारतारे एवा सुखनीधी श्रीघनशाम ॥ सज ४ ॥ सदा स्वेतांबर श्रीजी धारतारे, अंबर जरकसीना कोइवार ॥ सज ५ ॥ गुच्छ कलंगी तोरा खोसतारे, बाजु बाजु गुलाबी हार ॥ सज ६ ॥ ए छबी जोवा तलखे आंख-

डीरे, मधुरां वचन सांभळवा कान ॥ सज
७ ॥ ए हरी मळ्वाने हेडु बपेरे, प्रेमानंद-
ना जीवन प्राण ॥ सज ८॥पद १॥ मनडुं
मुरती मावलगी रह्युंरे, चीतवन करवा चीत
आतुर मन० तरुण मनोहर मुरती नाथ-
नीरे, राजीव लोचन जोबन पुर मन॥१॥
सोळे चीन्ह सहीत अतिशोभतारे, सुंदर
चरणकमळनी जोड ॥ मन २ ॥ हळवी र-
हीने हेते चांपतीरे, क्यारे हवे पुरशे मन-
ना कोड ॥ मन ३ ॥ पींडी जानुं नीत्ये
नीरखतीरे, रुडा साथळ चीन सहित ॥मन
४॥शामकटी जोइ जादवरायनीरे, नीत
नीत नौतम उपजे प्रीत ॥ मन ५ ॥ उंडी
नाभीकमळ सरीखडीरे, त्रीवळी नीरखी
उदरमांय ॥ मन ६ ॥ छाती उपडती अ-

तिओपतीरे, हवे कथारे भुजग्रही बाथ भराय ॥ मन ७ ॥ मुखनी शोभा जोइ महाराजनीरे लाजे, पंकज पुरण चंद ॥ मन ८॥ नाशा नेण भ्रुह जोइ भालनेरे, जाय बलीहारी प्रेमानंद ॥ मन ९ ॥ पद २ ॥ सजनी नीमख न वीसरे नाथजीरे नीत नवा तरुणपणाना। खेल सज० आ ओसरिये आवी बेसतारे, आ ढोलीड नटवर छेल ॥ सज १ ॥ था तकियो ते वांसे मेलतारे, आ माळा फेरवता शाम- ॥ सज २ ॥ गाता गोठीडाना साथमांरे, घेरेसादे पुरण काम ॥ सज ३ ॥ आ मोजडीयुं वालो पेरतारे, आ छडी लेता करवरमांय ॥ सज ४ ॥ आ पादुका पे-री आववारे, मारे मंदीर मुनीना राय ॥

सज ॥ ५ ॥ आ फळियामां घोडी फेर-
वतारे, माणकी मतवाली महाराज ॥ सज
॥६॥ संतनी सभा करी आहीं बेसतारे,
श्रीहरी सुरनर मुनी सीरताज ॥ सज ७ ॥
कीरतन मुनीवरने गवरावतारे, भेळागाता
श्रीव्रजनंद ॥ सज ॥ ८ ॥ एवा धरमकुंवर
हरी उपरेरे. तन मन वारी प्रेमानंद ॥ सज
॥९॥ पद॥ ३ ॥ लटकां लटकाळा घन-
शामनांरे, खटके उंडा अंतरमांय लटका०
प्रीत करी मुजने बोलावतारे, ते संभारी
बहु दुख थाय ॥ लटका ॥१॥ आ रुडया
ते श्रीमहाराजनीरे, आ बाजोठे बेसता
लाल ॥ लटका ॥२॥ आ ठेकाणे नाता
नटवरजीरे, लोता अंगकर लैरुमाल ॥
लटका ॥३॥ आ ठेकाणे जमवा बेसतारे,

जमता वीध वीधना पकवान ॥ लटका४॥ सुंदरशाककरी वंताकनांरे, जमीने देता प्रसादी कान ॥ लटका ॥ ५ ॥ आखळ्ख-ळीए नाता नाथजीरे नाहीने हरीजन मुनीलेसाथ ॥ लटका ॥ ६॥ भावनामाणक चोकमां मलपतारे, पुरजनध ताजोइमना-थ ॥ लटका ॥७॥ वाला वळता जइ फु-लवागमांरे, पहेरता गजरा गुलाबी हरा ॥ लटका ॥८॥ जेम जेम सांभरे तेम थाय वेदनारे, प्रेमानंदा प्राण आधार ॥ लटका ॥ ९ ॥ पद ॥ ४ ॥

॥राग गरबी॥ रे सगपण हरीवरनुं सा-चुं, बीजुं सरवेक्षणुंभंगुर काचुंरे सग० रे सौ साथे प्रीती टाळी, रे भ गु मन मीथ्या भाळी छेवरवा जेवा एक वनमाळीरे ॥ सग

॥ १ ॥ रे थीर नही आवरदा थोडी, रे तुच्छ जाणीने आशा तोडी; में जगनाजीवन साथे जोडीरे॥सग २॥रे फोगट फेरा नव फरीए, रे परघेर पाणी शुं भरीये; जो वरीएतो नटवरने वरीएरे ॥ सग ३ ॥ ` भुधर भेट्यो भय भाग्यो, रे सौ साथे त्रोडयो धागो; ए रसीक सलुणाथी रंग लाग्यो ॥ सग ॥४॥ रे एवुं जाणीने सग पण कीधुं ` मेणुतो सीर उपर लीधुं; ब्रह्मानंदनुं कारज सीधुंरे ॥ सग ॥ ५ ॥

पद ॥ १ ॥

रे लगनीतो हरीवरथी लागी,में तन धन नी आशा त्यागीरे लग०रे वात कहुं सुण साहेली, रे बळीयोजी कीधा बेली; माथु पेलु पासंगमां मेलीरे ॥ लग ॥ १ ॥ रे न

डरु हुं लोकतणी लाजे, रे सीर उपर गीरधर गाजे; आ देह धरयो नटवर काजेरे ॥लग ॥ २ ॥ रे सीर पर जोबीजो धारुं, रेवो बगडे जीवत मारुं; हुं झींवी वाजी ते केम हारुंरे ॥ लग ॥ ३ ॥ रे हरी वीना बीजाने वरवुं, रे गज तजी खर चडीने फरवुं; ए जीव्याथी रुडु मरवुरे ॥ लग ॥ ४ ॥ रे मरज्यादा जगनी मेटी, रे बांधी में प्रेमतणी पेटी; ब्रह्मानंदनो वालो भेटीरे ॥ लग ॥ ५ ॥ पद २ ॥

रे सीरसाटे नटवरने वरीए, रे पाछां ते पगलां नव भरीएरे सीर० रे अंतर द्रष्टी करी खोळुं, रे डापण झाझु नवु डोळ्युं ए हरी सारु माथु घोळ्युंरे ॥ सीर १ ॥ रे समझ्या विना नवनीसरीए, रे रण मधे

जैने नव डराए; त्यां मुख पाणी राखी मरीएरे ॥ सीर २॥ रे प्रथम चडे शुरो थइने रे भागे पाछो रणमां जइने; ते शुं जीवे मुंडु मुख लइनेरे ॥ सीर ३॥ रे पेलुंज मनयां त्रेवडीए, रे हार होरे जुद्ध नव चडीए; जो चडीए तो कटका थइ पडीएरे ॥सीर ४॥ रे रंग सहित हरीने रटीए, रे हाक वागे पाछा नव हठीए; ब्रह्मानंद कहे त्यां मरी मटीएरे ॥ सीर ५ ॥पद॥२॥

रे घरीआ अंतर गीरधारी, शुं करशे घोल्यां हवे संसारीये घरी० रे हुं कोइनी न रहुं झाली, रे वाहालाने थावा वाहाली; रे सीर करमां लइने चालीरे ॥ घरी १ ॥ रे जेम गज जाय बजारे खुशी, रे श्वान मरे बहु भसीरे भसी; ते हाथीने नहीं

संख्या कसीरे ॥ धरी २ ॥ रे बळवा गइ जो सती साची, रे रोम रोम पीया संग राची; ते पडमां जइ नवळे पाछीरे ॥ धरी ३ ॥ रे जो पडथी पाछी आवे, रे लाज तजी मन ललचावे; ते सती मटी कुत्ती कावेरे॥ धरी ४॥ रे ब्रह्मानंद एम विचारी, रे बीक सरवे काढी बारी; रे मळीया मोहन सुखकारीरे ॥ धरी ॥ ५ ॥ पद ४॥

इति श्रीआवश्यक सूत्रम् समाप्तः

मुद्रक—वि. वि. पाठक " जगदीश्वर " प्रिंटिंग प्रेस गिरगांव गायवाडी घर. नं, ९ मुंबई.

प्रकाशक—शास्त्री लक्ष्मीनारायण रामचंद्र दा० मदने ठे. (अमदावादवाला) मुंबई ३ जा भोईवाडा श्री स्वामीनारायणनुं मंदीर.

॥ श्री ॥

विज्ञापना.

श्री उद्धवावतार रूप श्री रामानंद स्वामीने पूर्वनुं श्री कृष्णावतारनुं वचन सिद्ध करवा सारु श्री हरीए पोतानुं दर्शन भक्ति धर्म थकी प्रगट थवानुं आप्युं ते वखते श्री स्वामीए अंतरयामी पणे पूर्वनुं वचन श्री कृष्ण नारायणे सिद्ध कर्युं, ने पोते हवे थोडा समयमां पधारशे, जेथी स्वामी बहुज राजी थइ पोतानी वहंत प्रमाणे . श्रीहरीना दर्शन मुजब श्री " राधामुरलीमनोहरनी मूर्तिओ करावी पोते सेववा लाग्या, नित्ये लाडलडावी पूजा विधी करी सौ हरीजनो नरनारीओने दर्शन करावताहता ने सत्संगनी वृद्धि करावताहता श्रीहरी प्रगट

थयेला एवा पोते सत्संगमां आवी पूर्वनां वचन युक्त श्री उधवजी एवा श्री रामानंद स्वामीने मळ्या. परस्पर राजी थई आनंदना ओघ थया एम समजी नरनारीओ पण श्री हरीनुं समर्थ ऐश्वर्य जोई राजी थयां श्रीहरी अंतर्यामी छे ने जाणे छे के श्रीस्वामीए अमारा स्वरुपनी मुर्तीओ करावी छे तेथी ते मुर्तीओ राधामोरलीमनोहरनी छे ते मागी लई पोते घणा उत्सवो करावी पोते मनुष्य चेष्टारुपे पुजा करवा लाग्या ने घणाज आनंदमां आवी ते मुर्तीओ मोटा-मोटा सद्गुरुओने माथे मूकावी पोते ज्यां जाय त्यां पधरावता, श्रीहरी पोतानुं पूर्ण ऐश्वर्य ते मुर्तीद्वारा राखता हता, पुष्कळ थाळ वि. जमाडता हता, एक

वखत मोटीबाने इच्छा थवाथी श्रीहरीए समैयाना वखतमां श्रीमोरलीमनोहर देवने पावा सारुं तपेलामां दुध भरावी ते मूर्ती आगळ धर्युं के तुरत आज मुर्ती प्रत्यक्ष प्रभाणे पीए छे तेम सर्व समैयामां भरापला श्रीहरीजनो जांतां हता आवी अदभुत मुर्ती स्वसंप्रदायना ग्रंथो श्रीहरीए मेरी एवी बुद्धीनुसारे करवा सारु हमारा पीतामह श्रीदीनानाथ भट्टने व्यासानुंपद आप्युं हतुं जेथी श्रीहरीनी इच्छा मुजब सनातन वैदीक धर्मने अनुसरी ग्रंथोकर्या ने आ श्रीमोरलीमनोहर देवादीकनी मुर्तीओ आपी वंशपरंपरा माटे पूजारुपी वचनो प्रसन्न थइ कह्या हता श्रीहरीनी आज्ञा मुजब पूजाविधी अद्यापी अमो पण देश-

काळने अनुसरीने करीये छीये ते मुर्तीओने बहार सरवे सत्संगि वैष्णवो हरीजानोना दर्शनार्थे प्रदर्शित घणा उमंगीओना अत्याग्रहथी करवाना छीए जेथी सरवे सत्संगीओने नम्रतापुर्वक विज्ञापना छे के सौसौनी यथा शक्ति आवा सत् कार्यमां मदद आपशे, हालमां ते मुर्तीओ अमारे अत्रे आववुं थवाथी धर्मचूस्त अने सत्संगिमां शिरोमणी प्रगट पुरुषोतमना उपासक कपडवंज निवासी रा. रा. भाइश्री मणीलाल छोटेलाले पोताना प्रेमपूर्वक पुजा करवा सारु राखी छे अक्षर निवासी शास्त्रीजीना शिष्य जे आ श्रीहरीना दृढ उपासकने परम एकांतीक रा. रा. बळदेव भाइ घेहेला भाइएत्थां शुद्ध सत्व मय ज्ञान धरावनार एकां-

तिक रा.रा. चुनीलाल केशवलालना बेहेन सांख्ययोगी–कीकि विगेरे ए बहुतलाड लाडाव्यां छे. अगाऊ पण प्रेमीहरीजनोए पुजा करवा उमंग धरावी हती हवे अमो ते मुर्तीओने अत्रे लावी कोइ सारा सुपात्र धर्म निष्ठ हरी जननी पासे पुजाविधीशरु करावव ना छीए माटे भाविक सत्संगी वैष्णओने आ कार्यमां श्रीजीमहाराजना राजीपाने अर्थे योग्य मदद आपशे अने तेनुं स्थान विगेरे बंधाववा माटे जेने जेवी ईच्छा होय ते प्रमाणे कोई आबरुदार सारी पेढी मा अथवा तो बेंकमा ते बदल रकम जमा करावीने अमोने जणावशो आ बाबदनु वधु विवेचन सार्वजननीक रीते प्रसिद्ध थती विज्ञापनाथी जाणी लेशो.

श्री दीनानाथ भट्टनो अखंड समागम श्रीहरिने विषे होवाने लीधे एकत्रपणाना अंगथी क्षमा साथे दरेक हरी जनने जणाववानुं के आवा सत्कार्यमां जे कोई विघ्न नांखशे तो तेना उपर श्रीजी महाराजनो राजीपो रहेशे नही (हाल सत्संगमां एक्यतानुं धोरण पलटाइ जवाथी लखवानी जरुर पडी छे.)

ली०

प्रसिध कर्ता.

शास्त्री ल. रा. दीनानाथ भट्ट.

जाहीर खबर.

१ परिश्रमना उपकारमां रा. रा. अंबालालभाई, त्था, भाईलाल भाईपटेल वडोदरावाळा, त्था पुराणीक हरगोंविंद माणकेश्वर मुंबईवाळा एवोए तनमनथी मेहेनत लीधी छे जेथी तेओउपर श्रीहरी प्रसन्न थावो.

सदर्हु पुस्तक प्रसिद्ध बुकसेलसै सुप्रसिद्ध ज्योतिष रा. रविशंकर जेठारामनी मुंबईमां पंडीत नारायण मूळजीनी दुकाने तेमज पंडीत ज्येष्टाराम मुकुंदजीनी दुकाने पण मळशे.

श्रीवीरक्षेत्र (वडोदरा) मां सुप्रसिद्ध वे. शा. संपन्न शास्त्रीजी बद्रीनाथ त्र्यंबकनाथ साथेना पूर्ण रहेवाशी शास्त्रीजी श्रीमगनलाल दलसुखराम के जेवो ज्योतिषनां दरेक कार्यमां माहितगार छे. जे सद्गृहस्थोने इच्छा होय तेओए तेमने मळवुं वा लखवुं.

ठि०— बाजवाडो, हनुमान पोळपासे वडोदरा.